Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

1 Samuel 1:1

1 एफ्राईम के पहाड़ी प्रदेश में रमाथाइम-ज़ोफ़िम नगर में
एलकाना नामक एक व्यक्ति था. वह एफ्राईमवासी येरोहाम
के पुत्र था और येरोहाम एलिहू के, एलिहू तोहू के तथा तोहू
एफ्राईमवासी सूफ़ के पुत्र था.

2 एलकाना की दो पत्नियां थी; पहली का नाम था हन्नाह और
दूसरी का पेनिन्नाह. स्थिति यह थी कि पेनिन्नाह के तो बच्चे
थे, मगर हन्नाह बांझ थी.

3 यह व्यक्ति हर साल अपने नगर से सर्वशक्तिमान याहवेह
की वंदना करने तथा उन्हें बलि चढ़ाने शीलो नगर जाया करता
था. यहीं एली के दो पुत्र, होफ़नी तथा फिनिहास याहवेह के
पुरोहितों के रूप में सेवा करते थे.

4 जब कभी एलकाना बलि चढ़ाता था, वह बलि में से कुछ भाग
अपनी पत्नी पेनिन्नाह तथा उसकी संतान को दे दिया करता
था.

5 मगर वह अपनी पत्नी हन्नाह को इसका दो गुणा भाग देता
था, क्योंकि उन्हें हन्नाह ज्यादा प्रिय थी, यद्यपि याहवेह ने
हन्नाह को संतान पैदा करने की क्षमता नहीं दी थी.

6 हन्नाह की सौत उसे कुढ़ाने के उद्देश्य से उसे सताती रहती
थी.

7 यह काम हर साल चलता रहता था. जब कभी हन्नाह याहवेह
के मंदिर जाती थी, पेनिन्नाह उसे इस प्रकार चिढ़ाती थी, कि
हन्नाह रोती रह जाती थी, तथा उसके लिए भोजन करना
मुश्किल हो जाता था.

8 यह देख उसके प्रति एलकाना ने उससे कहा, “हन्नाह, तुम
क्यों रो रही हो? तुमने भोजन क्यों छोड़ रखा है? इतनी दुःखी
क्यों हो रही हो? क्या मैं तुम्हारे लिए दस पुत्रों से बढ़कर नहीं
हूं?”

9 शीलो में एक मौके पर, जब वे खा-पी चुके थे, हन्नाह उठकर
याहवेह के सामने चली गई. इस समय पुरोहित एली याहवेह
के मंदिर के द्वार पर अपने आसन पर बैठे थे.

10 जब हन्नाह याहवेह से प्रार्थना कर रही थी, वह मन में बहुत
ही दुःखी थी. उसका रोना भी बहुत तेज होता जा रहा था.

11 प्रार्थना करते हुए उसने यह शपथ की: “सर्वशक्तिमान
याहवेह, यदि आप अपनी दासी की व्यथा पर करुणा-दृष्टि
करें, मुझे स्मरण करें, तथा मेरी स्थिति को भुला न दें और
अपनी दासी को पुत्र दें, तो मैं उसे आजीवन के लिए आपको
समर्पित कर दूंगी. उसके केश कभी काटे न जाएंगे.”

12 जब वह याहवेह से प्रार्थनारत थी, एली उसके मुख को ध्यान
से देख रहे थे.

13 हन्नाह यह प्रार्थना अपने मन में कर रही थी. यद्यपि उनके
ओंठ हिल रहे थे, उसका स्वर सुनाई नहीं देता था. यह देख
एली यह समझे कि हन्नाह नशे में है.

14 तब उन्होंने हन्नाह से कहा, “और कब तक रहेगा तुम पर
यह नशा? बस करो अब यह दाखमधु पान.”

15 इस पर हन्नाह ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरे प्रभु, स्थिति यह नहीं
है, मैं बहुत ही गहन वेदना में हूं. न तो मैंने दाखमधु पान किया
है, और न ही द्राक्षारस. मैं अपनी पूरी वेदना याहवेह के सामने
उंडेल रही थी.

16 अपनी सेविका को निकम्मी स्त्री न समझिए, क्योंकि यहां मैं अपनी घोर पीड़ा और संताप में यह सम्भाषण कर रही थी."

17 इस पर एली ने उससे कहा, "शांति में यहां से विदा हो. इस्राएल के परमेश्वर तुम्हारी अभिलाषित इच्छा पूरी करें."

18 हन्नाह ने उत्तर दिया, "आपकी सेविका पर आपका अनुग्रह बना रहे." यह कहते हुए अपने स्थान को लौट गई और वहां उसने भोजन किया. अब उसके चेहरे पर उदासी नहीं देखी गई.

19 प्रातः उन्होंने जल्दी उठकर याहवेह की आराधना की और वे अपने घर रामाह लौट गए. एलकाना तथा हन्नाह के संसर्ग होने पर याहवेह ने उसे याद किया.

20 सही समय पर हन्नाह ने गर्भधारण किया और एक पुत्र को जन्म दिया. उसने यह याद करते हुए शमुएल नाम दिया, "मैंने याहवेह से इसकी याचना की थी."

21 एलकाना सपरिवार याहवेह को अपनी वार्षिक बलि चढ़ाने और शपथ पूरी करने चला गया,

22 मगर हन्नाह उसके साथ नहीं गई. उसने अपने पति से कहा, "जैसे ही शिशु दूध पीना छोड़ देगा, मैं उसे ले जाकर याहवेह के सामने प्रस्तुत करूंगी और फिर वह तब से हमेशा वहीं रहेगा."

23 उसके पति एलकाना ने उससे कहा, "तुम्हें जो कुछ सही लगे वही करो. शिशु के दूध छोड़ने तक तुम यहीं ठहरी रहो. याहवेह अपने वचन को पूरा करें." तब हन्नाह घर पर ही ठहरी रहीं और बालक का दूध छुड़ाने तक उसका पालन पोषण करती रहीं.

24 जब बालक ने दूध पीना छोड़ दिया, और बालक आयु में कम ही था, हन्नाह उसे और उसके साथ तीन बछड़े दस किलो आटा तथा एक कुप्पी भर अंगूर का रस लेकर शीलो नगर में याहवेह के मंदिर को गई.

25 जब वे बछड़ों की बलि चढ़ा चुके, वह बालक को एली के पास ले गई.

26 हन्नाह ने एली से कहा, "मेरे स्वामी, आपके जीवन की शपथ, मैं वही स्त्री हूं, जो आपकी उपस्थिति में एक दिन याहवेह से प्रार्थना कर रही थी.

27 मैंने इस पुत्र की प्राप्ति की प्रार्थना की थी, और याहवेह ने मेरी विनती स्वीकार की है.

28 अब मैं यह बालक याहवेह को ही समर्पित कर रही हूं. आज से यह बालक आजीवन याहवेह के लिए समर्पित है." फिर उन सभी ने वहां याहवेह की स्तुति की.

1 Samuel 2:1

1 फिर हन्नाह ने यह प्रार्थना गीत गाया: "मेरा हृदय याहवेह में आनंद कर रहा है; याहवेह ने मेरे सींग को ऊंचा किया है, मैं ऊंचे स्वर में शत्रुओं के विरुद्ध बोलूंगी, क्योंकि मैं अपनी जय में आनंदित हूं.

2 "पवित्रता में कोई भी याहवेह समान नहीं है; आपके अलावा दूसरा कोई भी नहीं है; हमारे परमेश्वर समान चट्टान कोई नहीं.

3 "घमण्ड की बातें अब खत्म कर दी जाए, कि कोई भी अहंकार भरी बातें तुम्हारे मुंह से न निकले, क्योंकि याहवेह वह परमेश्वर हैं, जो सर्वज्ञानी हैं, वह मनुष्य के कामों को परखते रहते हैं.

4 "वीरों के धनुष तोड़ दिए गए हैं, मगर जो कमजोर थे उनका बल स्थिर हो गया.

5 वे, जो भरपेट भोजन कर संतुष्ट रहते थे, वे अब मजदूरी पाने के लिए काम ढूंढ़ रहे हैं. मगर अब, जो भूखे रहा करते थे, भूखे न रहे. वह जो बांझ हुआ करती थी, आज सात संतान की जननी है, मगर वह, जो अनेक संतान की माता है, उसकी स्थिति दयनीय हो गई है.

6 "याहवेह ही हैं, जो प्राण ले लेते तथा जीवनदान देते हैं; वही अधोलोक में भेज देते, तथा वही जीवित करते हैं.

7 याहवेह ही कंगाल बनाते, तथा वही धनी बनाते हैं; वही गिराते हैं और वही उन्नत करते हैं.

8 वह निर्धन को धूलि से उठाते हैं, वही दरिद्रों को भस्म के ढेर
से उठाकर उन्नत करते हैं; कि वे प्रधानों के सामने बैठ
सम्मानित किए जाएं, तथा वे ऊंचे पद पर बैठाए जाएं. “पृथ्वी
की नींव याहवेह की है; उन्होंने इन्हीं पर पृथ्वी की स्थापना की
है.

9 वह अपने श्रद्धालुओं की रक्षा करते रहते हैं, मगर दुष्टों को
अंधकार में निःशब्द कर दिया जाता है. “क्योंकि कोई भी
व्यक्ति अपने बल के कारण विजयी नहीं होता;

10 याहवेह के विरोधी चकनाचूर कर दिए जाएंगे. याहवेह स्वर्ग
से उनके विरुद्ध बिजली गिराएंगे; याहवेह का न्याय पृथ्वी के
एक छोर से दूसरे तक होता है. “वह अपने राजा को शक्ति-
सम्पन्न करते हैं, तथा अपने अभिषिक्त के सींग को ऊंचा कर
देते हैं.”

11 यह सब होने के बाद एलकाना रामाह नगर में अपना घर
लौट गए, मगर वह बालक पुरोहित एली की उपस्थिति में
रहकर याहवेह की सेवा करने लगा.

12 एली के पुत्र बुरे चरित्र के थे. उनके लिए न तो याहवेह के
अधिकार का कोई महत्व था;

13 और न ही बलि चढ़ाने की प्रक्रिया में जनसाधारण के साथ
पुरोहितों की सामान्य रीति का. होता यह था कि जब बलि
चढ़ाई जा चुकी थी, और बर्तन में मांस उबाला जा रहा था,
पुरोहित का सेवक एक तीन तरफा कांटा लिए हुए बर्तन के
निकट आता था,

14 वह इसे बर्तन में डालकर चुभोता था और जितना मांस तीन
तरफा कांटा में लगा हुआ आता था, उसे पुरोहित अपने लिए
रख लेता था. ऐसा वे शीलो नगर में आए सभी इस्राएलियों के
साथ करते थे.

15 यहां तक कि सांस्कारिक रीति से चर्बी के जलाए जाने के
पहले ही पुरोहित के सेवक आकर बलि चढ़ाने वाले व्यक्ति
को आदेश देते थे, “बर्तन में डाले जाने के पहले ही पुरोहित के
लिए निर्धारित मांस हमें कच्चा ही दे दो कि उसे भूनकर प्रयुक्त
किया जा सके.”

16 यदि बलि अर्पित करनेवाला व्यक्ति उत्तर में यह कहता था,
“ज़रा वसा तो जल जाने दो, फिर जो चाहे वह अंश ले लेना,” वे
कहते थे, “नहीं, यह तो हम अभी ही ले जाएंगे; यदि नहीं दोगे,
तो हम ज़बरदस्ती ले जाएंगे.”

17 याहवेह की दृष्टि में यह बहुत ही गंभीर पाप था; क्योंकि ऐसा
करते हुए वे याहवेह को चढ़ाई गई बलि का अपमान कर रहे
थे.

18 इस समय शमुएल याहवेह की उपस्थिति में रहते हुए सेवा
कर रहे थे. वह पुरोहितों के समान ही वस्त्र धारण करते थे.

19 जब उनकी माता अपने पति के साथ वार्षिक बलि चढ़ाने के
लिए वहां आती थी, वह बालक शमुएल के लिए नियमित रूप
से ऐसे वस्त्र बनाकर लाया करती थी.

20 एलकाना तथा उनकी पत्नी के लिए एली इस प्रकार के
आशीर्वाद दिया करते थे: “याहवेह तुम्हारे लिए इस स्त्री के
द्वारा संतान प्रदान करें, कि जिस बालक को इसने याहवेह को
समर्पित किया है, उसका खालीपन भर जाए.” तब वे अपने घर
लौट जाते थे.

21 तब याहवेह ने अपनी कृपादृष्टि में हन्नाह की सुधि ली. उसने
गर्भधारण किया और उनके तीन पुत्र और दो पुत्रियां पैदा हुए.
बालक शमुएल याहवेह के भवन में विकसित होते चले गए.

22 इस समय एली बहुत ही बूढ़े हो चुके थे. उन्हें इसकी सूचना
दी जा चुकी थी कि अपने पुत्र इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार कर
रहे हैं और वे उन स्त्रियों के साथ शारीरिक संबंध भी करते थे,
जिन्हें मिलाप तंबू के प्रवेश पर सेवा के लिए नियुक्त किया
जाता था.

23 एली ने अपने पुत्रों से कहा, “तुम ये सब क्यों कर रहे हो?
तुम्हारे इन सभी बुरे कामों की ख़बरें मुझे सभी के द्वारा मिल
रही हैं.

24 मेरे पुत्रो, यह गलत है. आज याहवेह की प्रजा में तुम्हारे किए
हुए कामों की ख़बर जो फैली है, वह ठीक नहीं है.

25 यदि एक व्यक्ति किसी दूसरे के विरुद्ध पाप करे, तो उसके
लिए परमेश्वर द्वारा विनती संभव है; मगर यदि कोई याहवेह
ही के विरुद्ध पाप करे, तब उसकी विनती के लिए कौन बाकी
रह जाता है?” मगर एली के पुत्रों को उनके पिता का तर्क

1 Samuel 3:1

अस्वीकार ही रहा, क्योंकि याहवेह उनके प्राण लेने का निश्चय कर चुके थे.

26 इस समय बालक शमुएल बढ़ता जा रहा था. उस पर याहवेह की कृपादृष्टि तथा लोगों का प्रेम बना था.

27 परमेश्वर द्वारा भेजा हुआ एक व्यक्ति एली के पास आया और उनसे कहा, "यह याहवेह का संदेश है: 'क्या मैंने तुम्हारे पूर्वजों पर अपने आपको साफ़-साफ़ प्रकट नहीं किया था, जब वे मिस्र देश में फ़रोह के परिवार के अधीन थे?

28 इस्राएल के सारा गोत्रों में से मैंने तुम्हारे गोत्र को अपना पुरोहित होने के लिए नामित किया कि वे मेरी वेदी पर बलि अर्पण करें, उस पर धूप जलाएं तथा मेरे सामने पुरोहितों के लिए निर्धारित पुरोहित कपड़ा, एफ़ोद पहनकर मेरे सामने उपस्थित हुआ करें. मैंने ही तुम्हारे पूर्वजों को यह आज्ञा दी कि इस्राएली प्रजा द्वारा अर्पित अग्निबलि का हिस्सा तुम्हें दे दी जाएं.

29 फिर क्या कारण है कि मेरे आवास से संबंधित जिन बलियों तथा भेटों का मैंने आदेश दिया था, तुम उनकी अवहेलना कर रहे हो? मेरी प्रजा इस्राएल द्वारा अर्पित सभी भेटों के सर्वोत्तम अंशों को खा-खाकर वे स्वयं पुष्ट हुए जा रहे हैं! यह करते हुए तुमने मेरी अपेक्षा अपने पुत्रों को अधिक सम्मान दिया है?'

30 "इसलिये याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की यह घोषणा, 'मैंने यह अवश्य कहा था कि तुम्हारा वंश तथा तुम्हारे पूर्वजों का वंश सदा-सर्वदा मेरी सेवा करता रहेगा,' मगर अब याहवेह की यह वाणी है, 'अब मैं यह कभी न होने दूंगा! क्योंकि मैं उन्हें ही सम्मान दूंगा, जो मुझे सम्मान देते हैं, तथा जो मुझे तुच्छ मानते हैं, वे शापित हो जाएंगे.

31 निकट हैं वे दिन, जब मैं न केवल तुम्हारा, परंतु तुम्हारे पिता के संपूर्ण वंश का बल शून्य कर दूंगा, यहां तक कि तुम्हारे परिवार में कोई भी व्यक्ति कभी भी बुढ़ापे तक नहीं पहुंचेगा.

32 तब तुम पीड़ित होकर धुंधली आंखों से इस्राएल को दी जा रही समृद्धि को स्वयं देखोगे. तुम्हारे परिवार में कभी भी कोई व्यक्ति बूढ़ा न हो सकेगा.

33 फिर भी तुम्हारे परिवार के जो सदस्य को मैं वेदी की सेवा से वंचित न करूंगा, वह अपने हृदय की दारुण वेदना में रोते-रोते अपने नेत्रों की ज्योति खो बैठेगा. तुम्हारे सभी वंशज मनुष्यों द्वारा चलाई तलवार से घात किए जाएंगे. तुम्हारे परिवार के हर एक व्यक्ति का निधन जीवन के जवानी में ही हो जाएगा.

34 " 'तुम्हारे लिए इसकी पुष्टि का चिन्ह यह होगा कि तुम्हारे दोनों पुत्रों, होफ़नी तथा फिनिहास में होगी: दोनों एक ही दिन में मर जाएंगे.

35 जब यह सब हो जाएगा, तब मैं अपने लिए एक विश्वसनीय पुरोहित को तैयार करूंगा. वह मेरे हृदय और आत्मा की अभिलाषा पूर्ण करेगा. उसके लिए मैं उसके वंश को स्थिरता प्रदान करूंगा. वही सदा-सर्वदा मेरे चुने हुए का पौरोहित्य करता रहेगा.

36 तुम्हारे परिवार में जो कोई शेष रह जाएगा, वह उसके सामने झुककर उससे सिर्फ चांदी के एक सिक्के के लिए या रोटी के एक टुकड़े के लिए विनती करेगा. हर एक की याचना यह होगी, "मुझे पुरोहित के काम में लगा लीजिए, कि कम से कम मैं रोटी का एक टुकड़ा तो खा सकूं." ' "

1 Samuel 3:1

1 उस समय बालक शमुएल एली के सामने याहवेह की सेवा कर रहा था. उन दिनों याहवेह का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलते थे.

2 यह वह स्थिति थी, जब एली के आंखों की रोशनी कम हो रही थी; तब वह स्पष्ट देखने में असमर्थ था, उस समय वह अपने कमरे में लेटा हुआ था.

3 शमुएल भी याहवेह के मंदिर में विश्राम कर रहा था. वही परमेश्वर का संदूक था और परमेश्वर का दीप अब तक बुझा नहीं था.

4 याहवेह ने शमुएल को पुकारा. शमुएल ने उत्तर दिया, "आज्ञा दीजिए, मैं यहां हूं."

5 और वह दौड़कर एली के पास जा पहुंचे और कहने लगे, "आपने मुझे पुकारा है, मैं हूं यहां." मगर एली ने उन्हें उत्तर दिया, "नहीं तो; मैंने तुम्हें नहीं पुकारा. जाओ सो जाओ." शमुएल जाकर सो गए.

6 तब याहवेह ने शमुएल को पुनः पुकारा, “शमुएल!” तब
शमुएल उठकर एली के पास गए और कहा, “आपने मुझे
पुकारा है, मैं यहां हूं.” मगर एली ने उससे कहा, “मैंने तुम्हें नहीं
पुकारा, मेरे पुत्र जाओ, जाकर सो जाओ.”

7 शमुएल को अब तक याहवेह का अनुभव नहीं था, और न ही
अब तक उन पर याहवेह के संदेश का कोई प्रकाशन ही हुआ
था.

8 अब याहवेह ने तीसरी बार पुकारा, “शमुएल!” तब वह उठा
और उठकर एली के पास गया और उनसे कहा, “मैं आ गया;
आपने मुझे पुकारा है.” तब एली को यह अहसास हुआ कि यह
याहवेह है, जो शमुएल को पुकार रहे हैं.

9 तब एली ने शमुएल से कहा, “जाकर सो जाओ. जब वह तुम्हें
पुकारे तो कहना, ‘याहवेह, आप कहिए. आपका सेवक सुन
रहा है.’ ” तब शमुएल अपने बिछौने पर जाकर लेट गए.

10 तब याहवेह आए, शमुएल के निकट खड़े हुए और पहले
जैसे पुकारा, “शमुएल! शमुएल!” शमुएल ने उत्तर दिया, “आप
कहिए, आपका सेवक सुन रहा है.”

11 याहवेह ने शमुएल से कहा, “सुनो, मैं इस्राएल राष्ट्र में कुछ
ऐसा करने पर हूं, कि जो कोई उसके विषय में सुनेगा, उसके
दोनों कान झनझना उठेंगे.

12 उस दिन मैं एली के विरुद्ध शुरू से लेकर अंत तक वह सब
करूंगा, जो मैंने उसके परिवार के विषय में कहा है.

13 क्योंकि मैं उसे यह सूचित कर चुका हूं, कि जिस अपराध के
विषय में उसे पूरा ज्ञान था, उसके लिए मैं उसके परिवार को
स्थायी दंड दूंगा; क्योंकि उसके पुत्र परमेश्वर का अपमान
करते रहे हैं; फिर भी एली ने उन्हें नहीं रोका.

14 तब एली के परिवार के संबंध में मैंने यह शपथ ली है, कि
एली के परिवार का अपराध का प्रायश्चित कभी भी, न तो किसी
बलि से, और न किसी भेंट से हो सकेगा.”

15 शमुएल प्रातःकाल तक अपने बिछौने पर लेटा रहा. फिर
उसने याहवेह के भवन के द्वार खोल दिया. रात के दिव्य दर्शन
के विषय में एली को बताने में उसे भय लग रहा था,

16 मगर एली ने उसे पुकारा, “शमुएल, मेरे पुत्र.” शमुएल ने
उत्तर दिया, “आज्ञा दीजिए, मैं यहां हूं.”

17 “क्या कहा याहवेह ने?” एली ने उससे पूछा. “मुझसे कुछ
भी न छुपाना. जो उन्होंने तुमसे कहा है उसमें से यदि तुम
मुझसे कुछ भी छिपाओ, परमेश्वर तुम्हें कठोर से कठोर दंड
दें.”

18 तब शमुएल ने उन्हें सब कुछ बता दिया, कुछ भी नहीं
छिपाया. यह सब सुन एली ने कहा, “वह याहवेह हैं; जो कुछ
उन्हें सही लगे, करें.”

19 शमुएल विकास होता गया; उस पर याहवेह की विशेष
कृपादृष्टि थी तब उसका कोई भी वक्तव्य कभी निरर्थक सिद्ध
नहीं हुआ.

20 दान प्रदेश से लेकर बेअरशेबा तक सारा इस्राएल राष्ट्र को
यह पता चल गया कि शमुएल याहवेह द्वारा समर्थित
भविष्यद्वक्ता हैं.

21 एक बार फिर याहवेह ने शीलो नगर में अपना दर्शन दिया,
क्योंकि शीलो नगर में ही याहवेह ने अपने वचन द्वारा स्वयं को
शमुएल पर प्रकाशित किया था.

1 Samuel 4:1

1 शमुएल का वचन सारे इस्राएल राष्ट्र में पहुंच जाता था. यह
वह समय था, जब इस्राएलियों को फिलिस्तीनियों से युद्ध
करने जाना पड़ा. उन्होंने एबेन-एज़र नामक स्थान पर अपनी
छावनी डाली तथा फिलिस्तीनियों ने अफेक नामक स्थान पर.

2 फिलिस्तीनी इस्राएल के विरुद्ध मोर्चा बांधकर आगे बढ़े और
जब युद्ध उग्र हुआ, इस्राएली फिलिस्तीनियों के सामने हार
गए. उस समय युद्ध-भूमि में लगभग चार हज़ार इस्राएली मारे
गए.

1 Samuel 4:1

3 जब सेना लौटकर छावनी में आई, इस्राएलियों के पुरनियों ने
विचार किया, “क्या कारण है कि याहवेह ने आज हमें
फिलिस्तीनियों से हार जाने दिया? ऐसा करें, हम शीलो से
याहवेह की वाचा का संदूक ले आते हैं. संदूक के हमारे साथ
रहने पर फिलिस्तीनी हमें हरा न सकेंगे.”

4 तब कुछ लोगों को शीलो नगर भेजा गया कि वे
सर्वशक्तिमान याहवेह परमेश्वर जो करूबों के बीच
विराजमान हैं, उनकी वाचा के संदूक ले आएं. साथ एली के दो
पुत्र होफ़नी और फिनिहास भी आये.

5 जब याहवेह की वाचा का संदूक छावनी में पहुंचा, सारे
इस्राएलियों ने उल्लास में ऐसा ऊंचा शब्द किया, कि धरती
कांप उठी.

6 जब फिलिस्तीनियों ने इस हर्षनाद को सुना, वे विचार करने
लगे, “इब्रियों की छावनी में यह शोर क्या है?” जब उन्हें यह
अहसास हुआ कि शिविर में याहवेह का संदूक आ गया है,

7 फिलिस्तीनी भयभीत हो कहने लगे, “शिविर में कोई देवता
उतर आया है.” वे यह भी कहने लगे, “यह एक विपत्ति है हम
पर! इसके पहले ऐसा कुछ देखा-सुना नहीं गया.

8 विपत्ति है हम पर! किसमें सामर्थ्य है जो हमें इन बलशाली
देवताओं से छुड़ा सके? ये ही हैं वे देवता, जिन्होंने मरुभूमि में
मिस्रियों पर सब प्रकार की मुसीबतों का प्रहार किया था.

9 फिलिस्तीनियों, पुरुषार्थ करो. साहस न छोड़ो. ऐसा न हो कि
तुम्हें इब्रियों के दास बनकर रहना पड़े, ठीक जैसे वे तुम्हारे
दास बनकर रहे थे. हिम्मत बांधो और युद्ध के लिए तैयार हो
जाओ!”

10 तब फिलिस्तीनी युद्धरत हो गए. इस्राएल हार गया. हर एक
सैनिक ने भागकर अपने तंबू में शरण ली. उस दिन भयंकर
नरसंहार हुआ; इस्राएलियों के तीस हज़ार सैनिक धराशयी हो
गए.

11 परमेश्वर की वाचा के संदूक शत्रुओं द्वारा छीन लिया गया.
एली के दोनों पुत्र, होफ़नी और फिनिहास युद्ध में मारे गए.

12 उसी दिन बिन्यामिन वंश का एक व्यक्ति रणभूमि से दौड़ता
हुआ शीलो नगर पहुंचा. उसके वस्त्र फट चुके थे तथा उसके
सिर पर धूल समाई हुई थी.

13 जब वह शीलो नगर पहुंचा, एली मार्ग के किनारे अपने
आसन पर बैठे हुए उत्कण्ठापूर्वक मार्ग पर दृष्टि लगाए हुए थे,
क्योंकि वह परमेश्वर की मंजूषा के विषय में बहुत चिंतित थे.
जब इस व्यक्ति ने सूचना देने के लिए नगर में प्रवेश किया,
संपूर्ण नगर में हाहाकार मच गया.

14 जब एली ने यह रोने की आवाज सुनी, वह पूछने लगे, “यह
कोलाहल क्या है?” तब वह व्यक्ति तुरंत एली के पास आ गया
और उन्हें स्थिति के बारे में बताया,

15 इस समय एली की अवस्था अट्ठानवे वर्ष की थी. उनकी
आंखें धुंधली हो चुकी थी और वह देख नहीं सकता था.

16 उस व्यक्ति ने एली को सूचना दी, “मैं रणभूमि से भागकर
आया हूं; मैं आज ही युद्ध से यहां पहुंचा हूं!” एली ने उससे प्रश्न
किया, “मेरे पुत्र, क्या-क्या हुआ है वहां?”

17 दूत ने उत्तर दिया, “इस्राएल फिलिस्तीनियों के सामने पीठ
दिखाकर भागा है, सेना की भारी हार हुई है, आपके दोनों पुत्र,
होफ़नी और फिनिहास मारे गए हैं; परमेश्वर की वाचा का
संदूक शत्रु द्वारा छीन लिया गया है.”

18 जैसे ही उस व्यक्ति ने परमेश्वर की वाचा के संदूक का
उल्लेख किया, एली अपने आसन के पीछे की ओर, द्वार के
पास जा गिरे. इससे उनकी गर्दन टूट गई और उनकी मृत्यु हो
गई, क्योंकि वह वृद्ध भी थे और भारी भी. वह चालीस वर्षों तक
इस्राएल के अगुए रहे.

19 उनकी पुत्र-वधू, फिनिहास की पत्नी, गर्भवती थी. उसका
प्रसवकाल नज़दीक था. जैसे ही उसने यह सुना कि परमेश्वर
की वाचा का संदूक छीन लिया गया है, तथा यह कि उसके
ससुर और पति की भी मृत्यु हो चुकी है, उसे प्रसव पीड़ा शुरू
हो गई; वह झुकी और उसका प्रसव हो गया. मगर प्रसव पीड़ा
उसके लिए असहनीय सिद्ध हुई!

20 जब उसकी मृत्यु निकट आ रही थी, उसके निकट की
स्त्रियों ने उससे कहा, “डरो मत; तुमने एक पुत्र को जन्म दिया

है." मगर उसने न तो उसका कोई उत्तर दिया और न ही इस समाचार पर कोई ध्यान ही दिया.

21 उसने अपने पुत्र को इखाबोद नाम दिया; उसका कथन था, "महिमा इस्राएल को छोड़कर जा चुकी है." क्योंकि परमेश्वर का संदूक छीना जा चुका था, तथा उसके ससुर और पति की मृत्यु हो गई थी.

22 उसने कहा, "इस्राएल से महिमा उठ चुकी है, क्योंकि परमेश्वर की वाचा के संदूक छीन लिया गया है."

1 Samuel 5:1

1 तब फिलिस्तीनियों ने परमेश्वर के संदूक को छीनकर उसे एबेन-एज़र से अशदोद को ले गए.

2 उन्होंने परमेश्वर के संदूक को दागोन के मंदिर में ले जाकर उसे देवता के पास ही रख दिया.

3 तड़के, जब अशदोदवासी जागे, उन्होंने देखा कि याहवेह के संदूक के सामने दागोन भूमि पर मुंह के बल पड़ा हुआ था. तब उन्होंने दागोन को उठाकर दोबारा उसके स्थान पर स्थापित कर दिया.

4 जब वे अगले दिन सुबह उठे, उन्होंने देखा कि दागोन दोबारा याहवेह के संदूक के सामने मुंह के बल भूमि पर पड़ा हुआ था. इसके अलावा दागोन का सिर और उसके दोनों हाथ कटे हुए ड्योढ़ी पर पड़े हुए थे-मुंह के बल उसका धड़ समूचा था.

5 वही कारण है कि आज तक, न तो दागोन के पुरोहित और न ही कोई भी, जो दागोन के मंदिर में प्रवेश करता है, अशदोद नगर में दागोन के मंदिर की ड्योढ़ी पर पैर नहीं रखता.

6 याहवेह ने अशदोद नगरवासियों पर प्रबल प्रहार किया. अशदोद तथा अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों में लोगों को गिल्टियों से पीड़ित किया.

7 जब अशदोदवासियों ने स्थिति की विवेचना की, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे, "यह सही नहीं कि इस्राएल के परमेश्वर की मंजूषा हमारे मध्य में रहे, क्योंकि उनके परमेश्वर ने न केवल हम पर, बल्कि हमारे देवता दागोन तक पर प्रहार किया है."

8 इसलिये उन्होंने फिलिस्तीनियों के सभी अगुओं को इकट्ठा किया और उनके सामने इस प्रश्न पर विचार किया गया, "इस्राएल के परमेश्वर के संदूक के विषय में क्या किया जाना सही होगा?" सबने कहा, "इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को गाथ नगर भेज दिया जाना सही होगा." तो इस्राएल के परमेश्वर के संदूक का स्थान बदलकर गाथ नगर कर दिया गया.

9 यह होने पर याहवेह ने उस नगर पर भी वार किया. इससे वहां घोर आतंक फैल गया. याहवेह ने उस नगर के हर एक व्यक्ति पर वार किया, तब उन सभी को गिल्टियां निकल आए.

10 तब उन्होंने परमेश्वर के संदूक को एक्रोन नगर भेज दिया, मगर जब परमेश्वर का संदूक एक्रोन नगर पहुंचा, एक्रोन वासी यह चिल्लाने लगे, "हमें मारने के उद्देश्य से इस्राएल के परमेश्वर का संदूक यहां लाया गया है."

11 तब फिलिस्तीनियों के सभी अगुओं की सभा बुलाई गई और यह प्रस्ताव निकाला गया. "इस्राएल के परमेश्वर का संदूक यहां से बाहर भेज दिया जाए. सही है कि यह उसके निर्धारित स्थान पर जाए, कि यह हमारी और हमारी प्रजा की हत्या न कर सकें." पूरा नगर मृत्यु के आतंक की चपेट में आ पड़ा था. वहां परमेश्वर उन पर बहुत ही प्रबल प्रहार कर रहे थे.

12 जिन लोगों की अभी मृत्यु नहीं हुई थी, उनकी देह गिल्टियों से भरी पड़ी थी. नगर की दोहाई स्वर्ग तक जा पहुंची.

1 Samuel 6:1

1 याहवेह के संदूक को फिलिस्तिया देश में अब सात महीने हो चुके थे.

2 फिलिस्तीनियों ने पुरोहितों एवं शकुन शास्त्रियों की सभा बुलाई. लोगों ने उनसे कहा, "याहवेह के संदूक के लिए क्या करना सबसे सही होगा? हमें सलाह दीजिए कि इसे इसके निर्धारित स्थान में भेजने की सही विधि क्या होगी?"

3 उनका उत्तर था, "यदि आपने इस्राएल के परमेश्वर के संदूक को लौटा देने का निश्चय कर ही लिया है, तो यह खाली न भेजी जाए. यह सुनिश्चित किया जाए कि यह दोष बलि के साथ लौटाई जाए. यह होने पर ही आप चंगे हो सकेंगे, और आप

1 Samuel 6:1

यह समझ सकेंगे कि क्या कारण था कि ये विपत्तियां आप पर आती रही हैं."

4 तब उन्होंने पूछा, "क्या होगी वह दोष बलि जो हम उसके साथ भेजेंगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "देखिए, आप पांच फिलिस्तीनी शासक हैं. तब कुन्दन से बनी गिल्टियों की पांच मूरतें तथा कुन्दन के ही बने हुए पांच चूहे; क्योंकि आप पर और आपके अगुओं पर उसी महामारी का प्रहार हुआ है.

5 आवश्यक है कि आप इन्हीं गिल्टियों तथा चूहों की मूर्तियां गढ़ें, जो सारा देश को ध्वस्त कर रहे हैं. यह ज़रूरी है कि आप इस्राएल के परमेश्वर की महिमा करें. तब यह संभव है कि वह आपको, आपके देवताओं को तथा आपके देश को इस महामारी की जकड़न से विमुक्त कर दें.

6 इस स्थिति में मिस्रियों तथा फ़रोह के समान अपने हृदय कठोर कर लेना हितकर नहीं होगा. जब परमेश्वर ने उन्हें कठोर मुसीबतों से दंड दिया, तो क्या स्वयं मिस्रियों ही ने इस्राएलियों से मिस्र देश छोड़ देने का आग्रह न किया था?

7 "तब अब आप जाइए, एक नया वाहन तैयार कीजिए, दो ऐसी दुग्धवती गाएं लाइए, जिन पर जूआ कभी न रखा गया हो, और इन्हें ही इस वाहन में जोत दीजिए, मगर इनके बछड़ों को उनके पास से हटाकर गौशाला ले जाइए.

8 तब याहवेह के संदूक को उस वाहन पर स्थापित कर दीजिए. फिर वे कुन्दन में ढली मूर्तियां, जो आप उन्हें दोष बलि स्वरूप लौटा रहे हैं, एक मंजूषा में संदूक के निकट रख दीजिए. यह सब होने पर वाहन को विदा कर दीजिए.

9 हां, वाहन पर दृष्टि बनाए रखिए. यदि यह वाहन अपने स्वदेश की दिशा में बेथ-शेमेश नगर की ओर बढ़ता है, तब इस तथ्य की पुष्टि हो जाएगी कि हम पर आई यह विपदा याहवेह ही की ओर से है. यदि ऐसा न हो, तब हमें यह ज्ञात हो जाएगा कि हम पर हुआ यह प्रहार याहवेह की ओर से नहीं था, परंतु यह सब हमारे साथ संयोगवश ही हुआ है."

10 तब फिलिस्तीनियों ने ठीक वैसा ही किया जैसा उन्हें निर्देश दिया गया था. उन्होंने दो दुग्धवती गायों को वाहन में जोत दिया, और उनके बछड़ों को घर पर ही बंद कर दिया.

11 उन्होंने याहवेह का संदूक वाहन पर रख दी और उसी के पास वह मंजूषा भी जिसमें कुन्दन की मूर्तियां रखी गई थी.

12 गाएं बेथ-शेमेश मार्ग पकड़कर सीधे उस पर आगे बढ़ती चली गई. जाते-जाते वे रम्भाती जा रही थी; न तो वे दाएं मुड़ीं न बाएं. फिलिस्तीनी अगुए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे. वे बेथ-शेमेश सीमा तक उनके साथ रहे.

13 वहां बेथ-शेमेशवासी घाटी में गेहूं की कटनी में व्यस्त थे. संदूक को देखते ही वे आनंदित हो उठे.

14 वाहन यहोशू के खेत की ओर बढ़ रहा था. यहोशू बेथ-शेमेश के ही वासी थे. वाहन वहीं एक बड़ी चट्टान के निकट ठहर गया. उन्होंने वाहन की लकड़ियां काट डालीं तथा उन गायों को याहवेह के लिए अग्निबलि बना भेंटकर दिया.

15 लेवियों ने संदूक को वाहन से नीचे उतारा, साथ ही उसके निकट रखी हुई मंजूषा को भी, जिसमें कुन्दन की मूर्तियां रखी गई थी. इन्हें उन्होंने उस चट्टान के निकट रख दिया. तब बेथ-शेमेश वासियों ने याहवेह को अग्निबलियां एवं बलियां चढ़ाईं.

16 फिलिस्तीनियों के पांच शासक समेत सब लोग उसी दिन एक्रोन लौट गए.

17 फिलिस्तीनियों द्वारा हर एक नगर के लिए याहवेह को अर्पित की गई दोष बलि गिल्टियां इस प्रकार हैं: अशदोद, अज्जाह, अश्कलोन, गाथ तथा एक्रोन.

18 चूहों की पांच कुन्दन की मूर्तियां पांच फिलिस्तीनी नगर का प्रतिनिधित्व करती थी, जिनके वे पांच अग्रेसर थे. ये नगर सुरक्षित गढ़ भी थे तथा कुछ बिना शहरपनाह के नगर भी. वह विशाल चट्टान जिस पर उन्होंने याहवेह का संदूक स्थापित किया था, आज भी बेथ-शेमेश के यहोशू के खेत में गवाह है.

19 याहवेह ने बेथ-शेमेश के कुछ लोगों पर घातक प्रहार किया, क्योंकि उन्होंने याहवेह के संदूक को खोल उसके भीतर झांका! सत्तर व्यक्ति इस प्रहार में मारे गए. याहवेह द्वारा इस कठोर दंड दिए जाने के कारण लोगों में रोना-पीटना छा गया.

20 बेथ-शेमेश नगर के निवासी विचार करते रह गए, "याहवेह, पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहने की क्षमता किसमें

1 Samuel 7:1

हो सकती है? तब अब यह संदूक वहां से किसके यहां रखा जाए?"

21 तब उन्होंने किरयथ-यआरीम वासियों के पास इस संदेश के साथ दूत भेजे, "फिलिस्तीनियों ने याहवेह का संदूक लौटा दिया है. आप आकर इसे अपने साथ ले जाइए."

1 Samuel 7:1

1 तब किरयथ-यआरीम से कुछ लोग आए और याहवेह के संदूक को वहां से ले जाकर पर्वत पर बने अबीनादाब के घर में रख दिया. उन्होंने याहवेह के संदूक की देखरेख के लिए अबीनादाब के पुत्र एलिएज़र का अभिषेक किया.

2 लंबे समय तक लगभग बीस वर्ष तक, संदूक किरयथ-यआरीम में ही रहा. अब सारे इस्राएल राष्ट्र को याहवेह की चाह होने लगी थी.

3 शमुएल ने समस्त इस्राएली राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा, "यदि तुम हृदय की गहराई से याहवेह की ओर फिर रहे हो, तो अपने बीच से सारे पराए देवताओं तथा अश्तोरेथ की प्रतिमाओं को हटाकर दूर कर दो. अपना हृदय याहवेह को समर्पित कर सिर्फ उन्हीं की वंदना करते रहो. तब याहवेह तुम्हें फिलिस्तीनियों के सताने से मुक्त करेंगे."

4 तब इस्राएलियों ने अपने मध्य से सारे पराए देवताओं और अश्तोरेथ की मूर्तियों का त्याग कर दिया तथा वे सिर्फ याहवेह ही की वंदना करने लगे.

5 तब शमुएल ने उन्हें आदेश दिया, "सारा इस्राएल मिज़पाह नामक स्थान पर एकत्र हो, कि मैं तुम्हारे लिए याहवेह से प्रार्थना करूं."

6 वे सभी मिज़पाह में इकट्ठा हो गए और उन्होंने जल निकाला और याहवेह के सामने उंडेल दिया. उस दिन उन्होंने उपवास किया और यह स्वीकार किया, "हमने याहवेह के विरुद्ध पाप किया है." मिज़पाह ही वह स्थान था, जहां से शमुएल ने इस्राएल राष्ट्र के न्यायाध्यक्ष के पद पर काम करना शुरू किया.

7 जब फिलिस्तीनियों को यह समाचार प्राप्त हुआ कि इस्राएली मिज़पाह क्षेत्र में एकत्र हो गए हैं, फिलिस्तीनी प्रधानों ने इस्राएल के विरुद्ध मोर्चा बांधा. जब इस्राएलियों को इसके विषय में सूचना प्राप्त हुई, वे फिलिस्तीनियों से डरने लगे.

8 उन्होंने शमुएल से आग्रह किया, "हमारी ओर से याहवेह हमारे परमेश्वर से प्रार्थना करना बंद न कीजिए, कि हमें फिलिस्तीनियों से सुरक्षा प्राप्त होती रहे."

9 इस पर शमुएल ने एक दूध पीता मेमना लेकर उसे याहवेह के सामने अग्निबलि के रूप में अर्पण किया. तब शमुएल ने इस्राएल की ओर से याहवेह की दोहाई दी, और याहवेह ने उन्हें इसका प्रत्युत्तर दिया.

10 जब शमुएल यह अग्निबलि अर्पित कर ही रहे थे, फिलिस्तीनी इस्राएल पर हमला करने के लक्ष्य से निकट आ गए. मगर उस दिन याहवेह फिलिस्तीनियों पर बादल द्वारा ऐसे गरजे कि फिलिस्तीनी आतंक के कारण सम्भ्रमित हो गए. तब इस्राएलियों ने उन्हें वहीं हरा दिया.

11 फिर इस्राएली मिज़पाह से बाहर निकल आए फिलिस्तीनियों को खदेड़ते हुए, उनका संहार करते हुए, बेथ-कार नामक स्थान के नीचे तक चले गए.

12 मिज़पाह तथा शेन नामक स्थानों के मध्य शमुएल ने इस घटना की स्मारक स्वरूप, एक शिला लेकर वहां प्रतिष्ठित कर उसे एबेन-एज़र नाम दिया; क्योंकि उन्होंने यह गवाह दिया, "अब तक याहवेह ने हमारी सहायता की है."

13 इस प्रकार फिलिस्तीनी हरा दिए गए. इसके बाद उन्होंने इस्राएल की सीमा पर हमला दोबारा नहीं किया. शमुएल के संपूर्ण जीवनकाल में फिलिस्तीनियों पर याहवेह का गुस्सा बना रहा.

14 एक्रोन से लेकर गाथ तक, वे नगर, जो फिलिस्तीनियों ने इस्राएल से छीन लिए थे, इस्राएल को लौटा दिए गए. स्वयं इस्राएल ने फिलिस्तीनियों द्वारा अधिकृत किए गए अपने क्षेत्र उनसे मुक्त करवा लिए. इस्राएल तथा अमोरियों के बीच भी शान्तिपूर्ण संबंधों की स्थापना हो गई.

15 शमुएल आजीवन इस्राएल के प्रशासक-न्यायध्यक्ष रहे.

1 Samuel 8:1

16 वर्ष-प्रतिवर्ष वह भ्रमण करते हुए बेथेल, गिलगाल तथा मिज़पाह ये तीन मुख्यालयों पर जाकर इस्राएल का न्याय करते थे.

17 फिर वह रामाह नगर को लौट जाते थे, क्योंकि उनका घर-परिवार यहीं था. वह इस्राएल का न्याय और शासन यहां से भी करते थे, साथ ही उन्होंने यहां याहवेह के लिए एक वेदी भी बनाई थी.

1 Samuel 8:1

1 बूढ़ा होने पर शमुएल ने अपने पुत्रों को इस्राएल का न्यायाध्यक्ष नियुक्त किया.

2 उनके प्रथम पुत्र का नाम था योएल तथा द्वितीय का अबीयाह. वे बेअरशेबा में रहते हुए न्याय करते थे.

3 मगर उनके पुत्रों का आचरण उनके समान न था. वे अनुचित रीति से धनार्जन में लग गए. वे घूस लेते तथा न्याय को विकृत कर देते थे.

4 तब इस्राएल के सब नेतागण एकजुट होकर रामाह में शमुएल के पास आए.

5 उन्होंने शमुएल से कहा, "देखिए, आप वयोवृद्ध हो चले हैं, आपके पुत्र आपके समान नहीं हैं. इसलिए अब जिस प्रकार अन्य जनताओं में प्रचलित है, उसी प्रकार आप हमारे लिए एक राजा चुन दें, कि वह हम पर शासन करे."

6 शमुएल इस विनती को सुनकर अप्रसन्न हो गए. क्योंकि उन्होंने उनसे कहा था, "हम पर शासन करने के लिए हमें एक राजा दीजिए." तब शमुएल ने याहवेह से प्रार्थना की.

7 याहवेह ने शमुएल से कहा, "ठीक वही करो, जिसकी विनती ये लोग कर रहे हैं. उन्होंने तुम्हें नहीं, परंतु मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया है.

8 ठीक जिस प्रकार वे उस समय से करते चले आ रहे हैं, जिस दिन से मैंने उन्हें मिस्र से विमुक्त किया, तब से आज तक, ये लोग मेरा परित्याग कर पराए देवताओं की आराधना करते रहे हैं; ठीक यहीं वे तुम्हारे साथ भी कर रहे हैं.

9 तब सही यही होगा कि तुम वही करो जो ये लोग चाह रहे हैं. हां, उन्हें इस विषय में गंभीर चेतावनी अवश्य दे देना कि वह राजा, जो उन पर शासन करेगा, उसकी नीतियां कैसी होंगी."

10 तब शमुएल ने याहवेह द्वारा अभिव्यक्त सारा विचार जिन्होंने उनसे राजा की नियुक्ति की विनती की थी उन लोगों के सामने प्रस्तुत किए.

11 शमुएल ने उनसे कहा, "जो राजा तुम पर शासन करेगा, उसकी नीतियां इस प्रकार होंगी: वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपनी रथों की सेना, तथा घुड़सवारों के रूप में चुनेगा, कि वे उसके रथों के आगे-आगे दौड़ा करें.

12 वह अपने लिए हज़ार पर तथा पचासों के लिए आदेशक चुनेगा. वह अपनी भूमि पर हल चलाने के लिए, उपज कटने के लिए तथा युद्ध के शस्त्र तथा रथों के लिए उपकरण निर्माता भी चुनेगा.

13 वह तुमसे तुम्हारी पुत्रियां लेकर उन्हें सुगंध बनाने, रसोई कर्मचारी तथा सेंकने की कर्मचारी के रूप में चुनेगा.

14 वह तुम्हारे सर्वोत्तम खेत, अंगूर के बगीचे तथा ज़ैतून उद्यान तुमसे लेकर अपने सेवकों को सौंप देगा.

15 वह तुम्हारे अनाज में से तथा द्राक्ष उद्यान में से दसवां अंश लेकर अपने अधिकारियों तथा अपने सेवकों को दे देगा.

16 वह तुम्हारे सेवक-सेविकाएं तथा तुम्हारे सर्वोत्तम युवाओं तथा गधों को लेकर स्वयं अपने कामों में लगा देगा.

17 वह तुम्हारे पशुओं के दसवां अंश ले लेगा और तुम उसके दास बन जाओगे.

18 तब उस समय तुम अपने राजा के विरुद्ध दोहाई दोगे, जिसे तुम्हीं ने चुना था; मगर तब याहवेह तुम्हारी छुड़ौती के लिए नहीं आएंगे."

19 मगर लोगों ने शमुएल के चेतावनी वचनों पर विचार करना
अस्वीकार कर दिया. उन्होंने कहा, "कुछ भी हो! हमें तो राजा
चाहिए ही!

20 हम चाहते हैं कि हम भी अन्य राष्ट्रों के समान हों. हमारा
राजा ही हमारा न्यायाध्यक्ष होगा, वह हम पर शासन करेगा,
वही हमारे लिए युद्ध करेगा."

21 जब शमुएल लोगों की सारी मांगें सुन चुके, उन्होंने सभी
कुछ याहवेह को सुना दिया.

22 याहवेह ने शमुएल से कहा, वही करो, जो वे चाहते हैं.
"उनके लिए एक राजा चुन दो." शमुएल ने इस्राएल के दूतों से
कहा, "तुममें से हर एक अपने-अपने नगर को लौट जाए."

1 Samuel 9:1

1 बिन्यामिन गोत्र से कीश नामक एक व्यक्ति था. उसके पिता
का नाम था अबीएल, जो ज़ीरोर का पुत्र था. ज़ीरोर बीकोराथ
का, बीकोराथ अपियाह का पुत्र था, जो बिन्यामिन के वंशज थे.
कीश एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था.

2 उनको शाऊल नामक एक पुत्र था; एक सुंदर युवा! सारे
इस्राएल में उनसे अधिक सुंदर कोई भी न था. वह डीलडौल
में सभी इस्राएली युवाओं से बढ़कर था सभी उसके कंधों तक
ही पहुंचते थे.

3 शाऊल का पिता कीश के गधे एक दिन खो गए. तब कीश
ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, "उठो अपने साथ एक सेवक को
लेकर जाओ और गधों को खोज कर लाओ."

4 शाऊल खोजते-खोजते एफ्राईम के पर्वतीय क्षेत्र के पार
निकल गए. उन्होंने शालीशा प्रदेश में भी उन्हें खोजा मगर वे
उन्हें वहां भी न मिले. तब वे खोजते हुए शालीम देश भी पार
कर गए; मगर गधे वहां भी न थे. तब उन्होंने बिन्यामिन देश में
उनकी खोज की, मगर गधे वहां भी न थे.

5 जब वे इन्हें खोजते हुए सूफ़ देश पहुंचे, शाऊल ने अपने साथ
के सेवक से कहा, "अब ऐसा करें कि हम घर लौट चलें, ऐसा
न हो कि मेरे पिता गधों की चिंता करना छोड़ हमारे विषय में
चिंतित होने लगें."

6 मगर उनके सेवक ने उन्हें यह सूचना दी, "सुनिए, इस नगर
में परमेश्वर के एक जन रहते हैं; वह बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति
हैं. वह जो कुछ कह देते हैं, होकर ही रहता है. आइए हम
उनके पास चलें. संभव है कि वह हमें मार्गदर्शन दें, कि यहां
से हमारा कहां जाना सही होगा."

7 शाऊल ने अपने सेवक को उत्तर दिया, "ठीक है; मगर हम
उन्हें भेंट स्वरूप क्या देंगे? हमारे झोले में अब रोटी शेष नहीं
रही! परमेश्वर के इस जन को हम भेंट में क्या देंगे?"

8 सेवक ने शाऊल को उत्तर दिया, "ऐसा है, मेरे पास इस समय
एक चौथाई शकेल चांदी है. यह मैं परमेश्वर के जन को दे दूंगा,
कि वह हमें बताएं हमारा कहां जाना उचित होगा."

9 (उन दिनों में इस्राएल में रीति यह थी कि जब कभी किसी
को किसी विषय में परमेश्वर की इच्छा मालूम करने की
आवश्यकता होती थी, वह कहा करता था, "चलो, दर्शी से
पूछताछ करें," क्योंकि आज जिन्हें हम भविष्यद्वक्ता कहते हैं.
उन्हें उस समय लोग दर्शी कहकर ही पुकारते थे.)

10 तब शाऊल ने कहा, "उत्तम सुझाव है यह! चलो, वहीं चलें."
तब वे उस नगर को चले गए जहां परमेश्वर के जन रहते थे.

11 जब वे नगर के ढाल पर चढ़ रहे थे, उन्हें जल भरते जा रही
कुछ युवतियां मिलीं. उन्होंने उनसे पूछा, "क्या दर्शी आज यहां
मिलेंगे?"

12 उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, सीधे चलते जाइए; मगर देर न
कीजिए. वह आज ही यहां आए हैं, और लोग पर्वत शिखर की
वेदी पर बलि चढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं.

13 जैसे ही आप नगर में प्रवेश करें, उसके पूर्व कि वह पवर्त
शिखर पर भोजन के लिए जाए, आप उनसे मिल सकेंगे. जब
तक वह वहां न पहुंचे, लोग भोजन शुरू न करेंगे, क्योंकि बलि
पर आशीर्वचन दर्शी ही को कहना होता है. अब शीघ्र जाइए.
यही उनके मिलने का सर्वोत्तम मौका है."

14 तब वे नगर में चले गए. जब वे नगर के केंद्र की ओर बढ़
रहे थे, शमुएल उन्हीं की दिशा में आगे बढ़ रहे थे, कि वह पर्वत
शिखर पर जाएं.

1 Samuel 10:1

15 शाऊल के यहां पहुंचने के एक दिन पूर्व याहवेह ने शमुएल
को यह संकेत दे दिया था:

16 “कल इसी समय में बिन्यामिन प्रदेश से तुमसे भेंटकरने एक
युवक को भेजूंगा. तुम उसे ही इस्राएल के प्रधान के पद के
लिए अभिषिक्त कर देना. वही होगा, जो मेरी प्रजा को
फिलिस्तीनियों के अत्याचारों से छुड़ाने वाला. मैंने अपनी प्रजा
पर कृपादृष्टि की है. मैंने उनकी दोहाई सुन ली है.”

17 जैसे ही शमुएल की दृष्टि शाऊल पर पड़ी, याहवेह ने उनसे
कहा, “यही है वह व्यक्ति जिसके विषय में मैंने तुम्हें संकेत
दिया था; यही मेरी प्रजा का शासक होगा.”

18 शाऊल द्वार के पास, शमुएल के निकट आया. शाऊल ने
शमुएल से पूछा, “कृपया बताये दर्शी का घर कहां है?”

19 शमुएल ने शाऊल को उत्तर दिया, “दर्शी मैं ही हूं. मेरे आगे-
आगे जाकर पर्वत शिखर पर पहुंचो. आज तुम्हें मेरे साथ
भोजन करना है, प्रातःकाल ही मैं तुम्हें विदा कर दूंगा. तुम्हारे
मन में उठ रहे सभी प्रश्नों का उत्तर भी तुम्हें प्राप्त हो जाएगा.

20 गधों की चिंता छोड़ दो, जो तीन दिन पूर्व खो गए थे—वे मिल
गए हैं. सारे इस्राएल राष्ट्र में जो कुछ हो सकता है, वह किसके
लिए है? क्या तुम्हारे तथा तुम्हारे सारा परिवार ही के लिए
नहीं?”

21 शाऊल ने उन्हें उत्तर दिया, “मगर मैं तो इस्राएल के सबसे
छोटे गोत्र बिन्यामिन से हूं, और इसके अलावा मेरा परिवार तो
बिन्यामिन गोत्र में सबसे छोटा है. तब आप मुझसे यह सब कैसे
कह रहे हैं?”

22 इसी समय शमुएल शाऊल और उनके सेवक को एक
विशाल कक्ष में ले गए, जहां लगभग तीस अतिथि उपस्थित थे.
यहां शमुएल ने शाऊल को उन सबसे अधिक सम्माननीय
स्थान पर बैठा दिया.

23 और फिर शमुएल ने रसोइए को आदेश दिया, “व्यंजन का
वह विशेष अंश, जिसे मैंने तुम्हें अलग रखने का आदेश दिया
था, यहां ले आओ.”

24 तब रसोइए ने व्यंजन में से अलग किया हुआ सर्वोत्तम अंश
शाऊल को परोस दिया. तब शमुएल ने कहा, “यही है वह
अंश, जो तुम्हारे लिए अलग रखा गया था, जो अब तुम्हें परोस
दिया गया है. यह तुम्हारा ही भोजन है, जो इस विशेष मौके पर
तुम्हारे ही लिए रखा गया है, कि तुम उसे इन विशेष अतिथियों
के साथ खाओ.” तब उस दिन शाऊल ने शमुएल के साथ
भोजन किया.

25 जब वे पर्वत शिखर परिसर से उतरकर नगर में आए,
शाऊल के लिए उस आवास की छत पर बिछौना लगाया गया,
जहां वह सो गए.

26 प्रातःकाल शमुएल ने छत पर सोए हुए शाऊल को यह
कहते हुए जगाया, “उठो, मुझे तुम्हें विदा करना है.” तब
शाऊल जाग गए, बाद में वह शमुएल के साथ बाहर चले गए.

27 जब वे नगर की बाहरी सीमा पर पहुंचे, शमुएल ने शाऊल
से कहा, “अपने सेवक से कहो, कि वह आगे बढ़ता जाए.”
सेवक ने वैसा ही किया. शमुएल ने शाऊल से और कहा,
“मगर तुम स्वयं यहीं ठहरे रहना कि मैं तुम पर परमेश्वर द्वारा
दिया गया संदेश प्रकाशित कर सकूं.”

1 Samuel 10:1

1 और शमुएल ने ज़ैतून के तेल से भरी एक शीशी निकाली,
और वह तेल शाऊल के सिर पर उंडेल दिया. तब उन्होंने
शाऊल का चुंबन लेते हुए उनसे कहा, “याहवेह ने अपनी
मीरास इस्राएल का अगुआ होने के लिए तुम्हारा अभिषेक
किया है!

2 आज जब तुम मुझसे विदा होकर जाओगे, तुम्हें बिन्यामिन
प्रदेश की सीमा पर सेलसाह नामक स्थान पर राहेल की कब्र
के निकट दो व्यक्ति मिलेंगे. वे तुमसे कहेंगे, ‘तुम जिन गधों की
खोज में निकले थे, वे तो मिल चुके हैं. तुम्हारे पिता को अब
गधों की नहीं, बल्कि तुम दोनों की चिंता हो रही है. वह कह
रहे हैं, “अब मैं अपने पुत्र के लिए क्या करूं?” ’

3 “तब तुम्हारे आगे बढ़ने पर, जब तुम ताबोर के उस विशाल
बांज वृक्ष के निकट पहुंचोगे, तुम्हें वहां तीन व्यक्ति मिलेंगे, जो
परमेश्वर की वंदना करने बेथेल जा रहे होंगे. एक तो बकरी के
तीन बच्चे ले जा रहा होगा, उनमें से दूसरा तीन रोटियां तथा
तीसरा अंगूर के रस की कुप्पी.

1 Samuel 10:1

4 वे तुम्हारा अभिवादन करेंगे और तुम्हें दो रोटियां दे देंगे,
जिन्हें तुम स्वीकार कर लेना.

5 “फिर तुम गीबिया-एलोहीम पहुंचोगे, जहां फिलिस्तीनी सेना
का गढ़ है. तुम जैसे ही नगर में प्रवेश करोगे, तुम्हें वहां
भविष्यवक्ताओं का एक समूह मिलेगा, जो पर्वत शिखर से
उतरकर आ रहा होगा और जिनके हाथों में विभिन्न वाद्य यंत्र
होंगे, जो भविष्यवाणी कर रहे होंगे.

6 ठीक उसी समय याहवेह का आत्मा बड़ी सामर्थ्य के साथ
तीव्र गति से तुम्हें भर लेगा और तुम स्वयं उनके साथ मिलकर
भविष्यवाणी करने लगोगे. यह वह क्षण होगा, जब तुम्हें एक
नया व्यक्तित्व प्रदान कर दिया जाएगा.

7 जब तुम इन चिन्हों को होते देखो, तुम वही करना शुरू कर
देना, जो तुम्हें सही लगेगा, क्योंकि तब स्वयं परमेश्वर तुम्हारे
साथ होंगे.

8 “तब तुम मुझसे पहले गिलगाल पहुंच जाना. मैं तुमसे वहीं
मिलूंगा, कि वहां अग्निबलि एवं मेल की भेंटें अर्पित करूं.
आवश्यक होगा कि तुम सात दिन प्रतीक्षा करो—जब तक मैं
वहां पहुंचकर तुम्हें यह न समझाऊं कि तुम्हारा क्या करना
सही होगा.”

9 जैसे ही शाऊल शमुएल से विदा होकर मुड़ा, परमेश्वर ने
उनका मन बदल दिया, और ये सभी चिन्ह उस दिन पूर्ण हो
गए.

10 जब वे गिबियाह पहुंचे, उनसे भेंटकरने भविष्यवक्ताओं का
एक समूह आ रहा था. तब परमेश्वर का आत्मा तीव्र गति से
उनके ऊपर उतरा और वह उनके साथ भविष्यवाणी करने
लगे.

11 जो लोग शाऊल से पूर्व परिचित थे, उन्हें भविष्यवक्ताओं के
साथ भविष्यवाणी करते देख, परस्पर कहने लगे, “क्या हो गया
है कीश के पुत्र को? क्या शाऊल भी भविष्यद्वक्ता वृन्द का
सदस्य है?”

12 वहां खड़े एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, “और उनके पिता कौन
हैं?” तब वहां यह लोकोक्ति हो गई: “क्या शाऊल भी
भविष्यवक्ताओं में से एक हैं?”

13 जब शाऊल अपनी भविष्यवाणी पूर्ण कर चुके, वह पर्वत
शिखर पर चले गए.

14 शाऊल के चाचा ने शाऊल से एवं उनके सेवक से पूछा,
“कहां चले गए थे तुम दोनों?” शाऊल ने उत्तर दिया, “गधों को
ढूंढने. मगर जब हमें यह लगा कि गधे खो चुके हैं, तो हम
शमुएल से भेंटकरने चले गए.”

15 शाऊल के चाचा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ कि शमुएल
ने तुमसे क्या-क्या कहा है.”

16 शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया, “शमुएल ने हमें
आश्वासन दिया, कि गधे मिल चुके हैं.” शाऊल ने अपने चाचा
को राजत्व से संबंधित कुछ भी नहीं बताया.

17 तब शमुएल ने मिज़पाह में याहवेह के सामने एक
सार्वजनिक सभा बुलाई.

18 उन्होंने इस्राएल को संबोधित करते हुए कहा, “याहवेह,
इस्राएल के परमेश्वर का संदेश यह है: ‘मैंने इस्राएल को मिस्र
देश से बाहर निकाल लिया, और मैंने ही मिस्रियों तथा उन
सभी राज्यों के कष्टों से छुड़ाया है जो तुम्हें सताते रहते थे.’

19 मगर आज वह दिन है, जब तुमने अपने परमेश्वर को
अस्वीकृत कर दिया है, जो तुम्हारी सभी पीड़ाओं और
मुसीबतों से तुम्हें बचाते हैं. तुम्हारी ही यह मांग थी, ‘नहीं! हमारे
लिए एक राजा नियुक्त कीजिए.’ ठीक है! याहवेह के सामने
अपने गोत्रों एवं वंशों के अनुसार अपना अपना स्थान ले लो.”

20 तब शमुएल ने इस्राएल के सभी गोत्रों को निकट बुलाया
और बिन्यामिन का गोत्र चुना गया.

21 तब बिन्यामिन गोत्र के परिवार निकट लाए गए और मत्री
का परिवार चुना गया. और अंततः कीश के पुत्र शाऊल को
चुना गया. मगर जब उन्हें खोजा गया तो वह कहीं भी दिखाई
न दिया.

22 तब उन्होंने पुनः याहवेह से इस विषय में पूछताछ की, “क्या
शाऊल यहां आ चुके हैं?” याहवेह ने उत्तर दिया, “जाकर
देखो, वह भण्डारगृह में सामान के बीच में छिपा हुआ है.”

1 Samuel 11:1

23 तब वे दौड़कर गए और उन्हें वहां से ले आए. जब शाऊल
उनके मध्य में खड़े हुए, सभी उनके कंधों तक ही पहुंच रहे थे.

24 तब जनसभा को संबोधित करते हुए शमुएल ने लोगों से
कहा, "क्या उसे देख रहे हो, जिसे याहवेह ने नामित किया है?
निःसंदेह सभी लोगों में उसके तुल्य कोई नहीं है!" सारे
जनसमूह ने उच्च घोष किया, "राजा को लंबी आयु मिले!"

25 तब शमुएल ने राजा के अधिकारों और कामों से संबंधित
नीतियां लोगों के सामने स्पष्ट कर दीं. ये सब उन्होंने एक
पुस्तक में लिखकर याहवेह के सामने रख दिया. यह सब होने
पर शमुएल ने सब लोगों को उनके घर विदा कर दिया.

26 शाऊल भी गिबियाह में अपने घर चले गए. कुछ शूरवीर
युवक भी उनके साथ गए. ये युवक परमेश्वर द्वारा चुने गए थे.

27 मगर कुछ निकम्मे लोग कहने लगे, "यह व्यक्ति कैसे
हमारी रक्षा कर सकेगा?" उन्हें शाऊल से घृणा हो गई, यहां
तक कि उन्होंने उन्हें कोई भेंट भी नहीं दी. मगर शाऊल ने
इस विषय को कोई महत्व नहीं दिया.

1 Samuel 11:1

1 यह उस समय की घटना है, जब अम्मोनी राजा नाहाश ने
याबेश-गिलआद पर हमले के उद्देश्य से सेना आगे बढ़ाई.
याबेश-गिलआदवासियों ने राजा नाहाश से विनती की, "हमसे
संधि कर लीजिए, हम आपके सेवक हो जाएंगे."

2 मगर अम्मोनी राजा नाहाश ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे
संधि सिर्फ एक ही स्थिति में कर सकता हूं; यदि तुम सभी मुझे
अपनी-अपनी दाईं आंख निकाल लेने दो, ताकि मैं इस्राएल
राष्ट्र को अपमानित कर सकूं."

3 याबेश के पुरनियों ने उसके लिए यह संदेश भेजा, "हमें सात
दिन का अवकाश दीजिए कि हम संपूर्ण इस्राएल राष्ट्र में अपने
दूत भेज सके. तब यदि इसमें हमें कोई छुड़ाने वाला न मिले,
हम स्वयं आपके प्रति समर्पण कर देंगे."

4 जब ये दूत शाऊल के गृहनगर, गिबिया, पहुंचे तथा वहां
लोगों को इस विषय की सूचना दी गई, सभी लोग वहां उच्च
स्वर में रोने लगे.

5 उस समय शाऊल अपने खेत से लौट रहे थे. वह अपने बैलों
के पीछे-पीछे चल रहे थे. उन्होंने पूछा, "क्या हो गया है उन
लोगों को? क्यों रो रहे हैं ये?" तब उन्होंने शाऊल को
याबेशवासियों द्वारा भेजे संदेश के विषय बता दिया.

6 यह सुनना था कि शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बड़ी
सामर्थ्य में तीव्र गति से उतरा. उनका क्रोध बहुत भयंकर
तरीके से फूट गया.

7 उन्होंने एक जोड़ी बैलों को लेकर टुकड़े-टुकड़े कर सारा
इस्राएल देश में इन टुकड़ों को दूतों के हाथ से इस संदेश के
साथ भेज दिए, "जो कोई इस मौके पर शाऊल तथा शमुएल
का साथ देने से पीछे हटेगा, उसके बैलों की यही दुर्गति की
जाएगी." इस पर लोगों में याहवेह का भय छा गया और वे
एकजुट होकर आगे आ गए.

8 जब शाऊल ने बेज़ेक नामक स्थान पर इनकी गणना की,
इस्राएल राष्ट्र से आए व्यक्ति तीन लाख तथा यहूदिया राष्ट्र से
आए व्यक्ति तीस हज़ार थे.

9 उन्होंने वहां आए हुए दूतों को यह संदेश भेजने का आदेश
दिया, "जाकर याबेश-गिलआद के निवासियों से यह कहो,
'कल, जब सूर्य प्रकाश में उष्णता का भास होने लगे, तुम्हें
छुड़ौती प्राप्त हो जाएगी.' " जब संदेशवाहकों ने याबेश-
गिलआदवासियों को यह संदेश दिया, उनमें उल्लास की लहर
दौड़ गई.

10 याबेशवासियों ने राजा नाहाश को यह संदेश भेज दिया,
"हम कल आपके पास आ जाएंगे और आपको जो कुछ सही
लगे, आप कर लेना."

11 अगले दिन शाऊल ने इकट्ठा हुए लोगों को तीन समूहों में
बांट दिया. फिर उन्होंने पौ फटते ही अम्मोनियों की छावनी
पर हमला कर दिया और सूर्य के गर्मी बढ़ने तक वे अम्मोनियों
का नाश कर चुके थे. वे जो इस संहार से बच गए थे, ऐसे तितर-
बितर हो चुके थे कि कहीं भी दो अम्मोनी साथ साथ देखे न जा
सके.

12 तब लोग शमुएल से प्रश्न करने लगे, "कौन हैं वे, जिन्होंने यह
कहते हुए आपत्ति उठाई थी, 'क्या शाऊल हम पर शासन
करेगा?' उन्हें यहां ले आओ कि उन्हें मृत्यु दंड दिया जा सके."

13 मगर शाऊल ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया, "किसी को भी मृत्यु दंड न दिया जाएगा. क्योंकि आज वह दिन है, जिसमें याहवेह ने इस्राएल को मुक्ति प्रदान की है."

14 तब शमुएल ने इस्राएलियों से कहा, "आओ नगर को जाएं, और वहां राजत्व की पुनर्प्रतिष्ठा करें."

15 तब वे सभी गिलगाल नगर चले गए और गिलगाल नगर में याहवेह के सामने शाऊल का राजाभिषेक किया गया. याहवेह की ही उपस्थिति में वहां उन्हें मेल बलि अर्पित की गई. शाऊल एवं सारे इस्राएल के लिए यह बड़े आनंद का मौका था.

1 Samuel 12:1

1 सारा इस्राएल को संबोधित करते हुए शमुएल ने कहा, "याद करो, तुम्हारी विनती के अनुसार मैंने सभी कुछ पूरा किया है. मैंने तुम्हारे लिए राजा चुन दिया है.

2 अब तुम स्वयं देख चुके हो कि राजा ही तुम्हारा नेतृत्व कर रहा है. तुम्हारे बीच अब मेरे पुत्र सेवा करते हैं. मैं बूढ़ा हो चुका हूं, पक चुके हैं मेरे बाल. मैं तुम्हारे सामने अपने बचपन से सेवा करता आया हूं.

3 आज मैं तुम्हारे सामने खड़ा हुआ यह प्रश्न कर रहा हूं: याहवेह तथा चुने हुए राजा के सामने मुझे बताओ. मैंने किसका बैल छीना है, किसका गधा मैंने छीना है? या मैंने किसके साथ छल किया है? मैंने किसे उत्पीड़ित किया है? किसके हाथ से घूस लेकर अनदेखा कर दिया है? मेरे सामने आज यह स्पष्टतः कह दो, ताकि मैं तुम्हारी क्षतिपूर्ति कर सकूं."

4 सबने कहा, "आपने न तो हमसे छल किया, न तो हमारा उत्पीड़न किया और न ही किसी भी व्यक्ति से कुछ अनुचित ही लिया है."

5 तब शमुएल ने उनसे कहा, "याहवेह इस तथ्य के गवाह हैं तथा उनका अभिषिक्त राजा भी आज इस तथ्य का गवाह है, कि तुम्हें मुझ पर आरोप लगाने का कोई कारण नहीं मिला है." सभी ने एक स्वर में कहा, "याहवेह गवाह हैं."

6 शमुएल ने जनसभा को संबोधित करते हुए आगे कहा, "स्वयं याहवेह ही हैं, जिन्होंने मोशेह तथा अहरोन को चुना कि वे तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर निकाल लाएं.

7 अब याहवेह की उपस्थिति में निश्छल और शांत खड़े हो जाओ, कि मैं याहवेह के सामने तुम्हारे साथ मिलकर याहवेह से उनके द्वारा तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के प्रति किए गए हर एक अच्छे काम का स्मरण प्रस्तुत कर सकूं.

8 "जब याकोब मिस्र देश में जाकर बस गए, उनके वंशजों ने याहवेह की दोहाई दी और याहवेह ने उनके पास मोशेह तथा अहरोन को भेज दिया. उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकास किया. और वे इस स्थान में आकर बस गए.

9 "मगर उन्होंने याहवेह, अपने परमेश्वर को भुला दिया. तब याहवेह ने उन्हें हाज़ोर की सेना के सेनापति सीसरा के अधीन कर दिया, बाद फिलिस्तीनियों के, और फिर मोआब के राजा के अधीन. ये सब तुम्हारे पूर्वजों के साथ युद्ध करते रहे.

10 तब उन्होंने यह कहते हुए याहवेह की दोहाई दी, 'याहवेह का परित्याग करके तथा बाल और अश्तोरेथ की वंदना करने के द्वारा हमने पाप किया है. अब हमारे शत्रुओं की अधीनता से हमें विमुक्त कीजिए कि हम अब आपकी ही वंदना कर सकें.'

11 तब याहवेह ने यरूबाल, बाराक, यिफ्ताह तथा शमुएल को निर्धारित किया और तुम चारों ओर के अपने समान शत्रुओं की अधीनता से छुड़ाए गए और तुम सुरक्षा में रहने लगे.

12 "जब तुमने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश तुम पर हमला करने के उद्देश्य से आगे बढ़ रहा है, तुमने मुझसे आग्रह किया, 'बस, अब हम पर राजा ही शासन करेगा'—जबकि वस्तुतः तुम्हारे राजा याहवेह तुम्हारे परमेश्वर हैं.

13 अब ध्यान रहे कि तुम्हारा चुना हुआ राजा यह है—तुम्हारे ही द्वारा चुना हुआ! देखो, याहवेह ने तुम्हें राजा प्रदान किया है.

14 अब यदि तुम याहवेह के प्रति श्रद्धा और भय की भावना बनाए रखो, उनके प्रति आज्ञाकारी रहकर उन्हीं की वंदना करते रहो तथा उनके आदेशों के प्रति विद्रोही न बनो; साथ ही यदि तुम और तुम पर शासन कर रहा राजा याहवेह तुम्हारे परमेश्वर का अनुसरण करते रहें, तो सभी कुछ भला ही होता रहेगा!

1 Samuel 13:1

15 मगर यदि तुम याहवेह की आज्ञाओं का पालन न करो,
उनके आदेशों के प्रति विद्रोह करो, तब याहवेह का हाथ तुम
पर उठेगा जैसे तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध उठा था.

16 “तो अब स्थिर खड़े होकर स्वयं अपने नेत्रों से वह अद्भुत
काम को होता हुआ देखो! जो याहवेह तुम्हारे सामने करने पर
हैं.

17 क्या यह गेहूं की उपज कटने का समय नहीं है? मैं याहवेह
से प्रार्थना करूंगा कि वह गर्जन और बारिश भेज दें. इसी से
तुम पर यह बात साबित हो जाएगी, कि याहवेह की दृष्टि में
कैसा घोर है यह पाप, जो तुमने उनसे अपने लिए राजा की
याचना करने के द्वारा किया है.”

18 तब शमुएल ने याहवेह की दोहाई दी और याहवेह ने उसी
समय गर्जन और बारिश भेज दी. सभी लोगों पर याहवेह तथा
शमुएल का गहरा भय छा गया.

19 सभी लोग शमुएल से विनती करने लगे, “याहवेह, अपने
परमेश्वर से हमारे लिए, अपने सेवकों के लिए, प्रार्थना कीजिए
कि इससे हमारी मृत्यु न हो जाए, क्योंकि राजा की याचना
करने के द्वारा हमने अपने पापों की संख्या बढ़ा डाली है.”

20 तब शमुएल ने लोगों से कहा, “डरो मत! अवश्य यह गलत
काम तो आपने किया है; पर याहवेह का अनुसरण करना
कभी न छोड़ना. अपने संपूर्ण हृदय से याहवेह की वंदना करते
रहना.

21 बेकार की वस्तुओं की ओर कभी न फिरना. वे न तो
लाभकर होती है, न ही उनमें तुम्हें छुड़ाने की ही क्षमता है,
क्योंकि वे खोखली हैं.

22 अपने महान नाम की रक्षा के लिए याहवेह अपने लोगों को
कभी ना अस्वीकार करेगा. तुम्हें अपनी निज प्रजा बना लेने में
उनकी संतुष्टि थी.

23 जहां तक मेरा प्रश्न है, मुझसे याहवेह के विरुद्ध वह पाप
कभी न होगा, कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना छोड़ दूं. इसके
अलावा मैं सही और सीधे मार्ग के विषय में तुम्हें शिक्षा देता
रहूंगा.

24 स्थिति कैसी भी हो, याहवेह पर तुम्हारी श्रद्धा बनी रहे, तथा
संपूर्ण हृदय से, पूर्ण विश्वासयोग्यता में, तुम उनकी सेवा-वन्दना
करते रहो, और सोचो की कैसे बड़े-बड़े काम याहवेह ने
तुम्हारे लिए किए हैं.

25 मगर यदि तुम दुराचार में लगे रहो, तो तुम्हारा और तुम्हारे
राजा, दोनों ही का अस्तित्व मिटा दिया जाएगा.”

1 Samuel 13:1

1 शासन शुरू करते समय शाऊल की आयु तीस वर्ष की थी,
और उन्होंने इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया.

2 इस्राएल राष्ट्र में से शाऊल ने अपने लिए तीन हज़ार पुरुषों
को चुना. इनमें से दो हज़ार उनके साथ बेथेल के पहाड़ी क्षेत्र
के नगर मिकमाश में तथा शेष एक हज़ार बिन्यामिन की सीमा
में गिबिया नामक स्थान में योनातन के साथ रहने लगे. शाऊल
ने बाकी सभी को घर लौट जाने का आदेश दिया.

3 योनातन ने गेबा में स्थित फिलिस्तीनियों की टुकड़ी को हरा
दिया. फिलिस्तीनियों को इसकी सूचना प्राप्त हो गई. स्थिति
को समझते हुए शाऊल ने सारे इस्राएल में यह संदेश भिजवा
दिया, “सारे इब्री सावधान हो जाएं!”

4 सारे इस्राएल राष्ट्र ने इसका मतलब यह निकाला:
“फिलिस्तीनियों की छावनी पर शाऊल ने हमला किया है,
जिसके फलस्वरूप अब उनके लिए इस्राएल एक घृणित शत्रु
बन गया है.” तब लोगों को शाऊल के सामने एकत्र करने के
लिए गिलगाल नामक स्थान पर बुलाया गया.

5 इस्राएल से युद्ध के लिए फिलिस्तीनियों ने तीन हज़ार रथ, छः
हज़ार घुड़सवार तथा एक ऐसी सेना तैयार कर ली थी, जो
गिनती में वैसी ही लगती थी जैसे सागर के किनारे के रेत के
कण. इन सबने जाकर मिकमाश नामक स्थान पर बेथ-आवेन
के पूर्व में तंबू डाल दिए.

6 जब इस्राएली सेना को यह अहसास हुआ कि वे यहां कठिन
स्थिति में आ फंसे हैं, क्योंकि उनकी सेना पर दबाव बढ़ता जा
रहा था, सेना ने गुफाओं, झाड़ियों, चट्टानों, गड्ढों तथा कुंओं में
जाकर छिपने लगे.

1 Samuel 14:1

7 कुछ इब्री तो भागकर यरदन के पार गाद और गिलआद तक
चले गए. मगर शाऊल गिलगाल में ही ठहरे रहे. उनके
सैनिकों पर घोर भय छाया हुआ था.

8 शाऊल इस स्थिति में शमुएल द्वारा बताए गए समय, सात
दिन तक ठहरे रहे. मगर शमुएल गिलगाल नहीं आए. सैनिक
शाऊल को छोड़कर जाने लगे.

9 तब शाऊल ने आदेश दिया, "मेरे पास होमबलि तथा मेल
बलियां लाई जाएं." शाऊल ने होमबलि चढ़ाई.

10 ठीक जैसे ही उन्होंने होमबलि चढ़ाना खत्म किया ही था,
शमुएल वहां आ पहुंचे. शाऊल उनसे भेंटकरने तथा उनका
अभिवंदन करने उनके निकट गए.

11 उसी क्षण शमुएल ने उनसे प्रश्न किया, "यह क्या कर डाला
है तुमने?" शाऊल ने स्पष्ट किया, "जब मैंने देखा कि सेना मुझे
छोड़ भागने लगी है, तथा आप भी बताए हुए समय पर यहां
नहीं पहुंचे, तथा वहां फिलिस्तीनी मिकमाश में इकट्ठा हो चुके
थे,

12 मैंने विचार किया, 'अब तो फिलिस्तीनी निश्चयतः गिलगाल
आकर मुझ पर हमला करेंगे, और मैंने याहवेह से सहायता की
बिनती ही नहीं की.' तब इस विवशता में मैंने होमबलि चढ़ा दी
है."

13 शमुएल ने उत्तर दिया, "तुमने एक मूर्खतापूर्ण काम किया
है! वह आदेश, जो तुम्हें याहवेह तुम्हारे परमेश्वर द्वारा दिया
गया था, उसका तुमने उल्लंघन कर दिया है. यदि तुमने उस
आदेश का पालन किया होता, याहवेह इस्राएल पर तुम्हारे
शासन को हमेशा के लिए स्थिर कर देते!

14 याहवेह ने अपने लिए एक ऐसा व्यक्ति खोज लिया है, जो
उनके हृदय के अनुकूल है. याहवेह ने उसे ही अपनी प्रजा का
नेतृत्व करने के लिए चुन लिया है; यह सब इसलिये, कि तुमने
उन आदेशों का पालन नहीं किया, जो तुम्हें याहवेह द्वारा दिए
गए थे. अब तुम्हारा शासन चिरस्थायी न रहेगा."

15 इसके बाद शमुएल गिलगाल से बिन्यामिन प्रदेश के
गिबिया नगर को चले गए. शाऊल ने शेष रह गए सैनिकों को
इकट्ठा किया. ये गिनती में लगभग छः सौ थे.

16 शाऊल, उनके पुत्र योनातन तथा बाकी रह गई सेना
बिन्यामिन प्रदेश के गेबा में ही ठहरे रहे; जबकि
फिलिस्तीनियों का शिविर मिकमाश में था.

17 फिलिस्तीनी शिविर से तीन छापामार दल निकले, एक दल
उस मार्ग पर, जो शुआल देश के ओफ़राह नगर को जाता था,

18 दूसरा दल उस मार्ग की ओर, जो बेथ-होरोन की ओर जाता
था तथा अन्य दल उस सीमा की ओर चला जाता था, जो निर्जन
प्रदेश की दिशा में ज़ेबोईम घाटी के ढलान पर है.

19 संपूर्ण इस्राएल राष्ट्र में कोई भी लोहार न था क्योंकि
फिलिस्तीनियों ने इस आशंका के चलते यह रोक रखा था,
"हमारे विरुद्ध प्रयोग के लिए इब्री तलवारों और भालों का
निर्माण न करने लगे!"

20 फलस्वरूप इस्राएलियों को अपने हल की फाल, कुल्हाड़ी,
हंसिया तथा काटने के उपकरणों में धार पैनी कराने के लिए
फिलिस्तीनियों के पास ही जाना पड़ता था.

21 तब हल की फाल पर धार लगाने के लिए दो तिहाई शेकेल;
कुल्हाड़ी या अंकुश की धार लगाने के लिए एक तिहाई शेकेल
देना होता था.

22 तब युद्ध के समय शाऊल और योनातन के साथ के सैनिकों
के पास न तो तलवार थी न भाला. हां सिर्फ शाऊल और उनके
पुत्र योनातन के पास ये हथियार थे.

23 फिलिस्तीनी सेना की एक टुकड़ी मिकमाश के पर्वतीय
संकरे मार्ग में निकल हुई थी.

1 Samuel 14:1

1 एक दिन योनातन ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, "चलो, उस
ओर चलें, जहां फिलिस्तीनी सेना की छावनी है." उसकी
सूचना उसने अपने पिता को नहीं दी.

2 शाऊल मिगरोन नामक स्थान पर एक अनार के पेड़ के नीचे
बैठे हुए थे. यह स्थान गिबियाह की सीमा के निकट था. उनके
साथ के सैनिकों की संख्या लगभग छः सौ थी,

1 Samuel 14:1

3 इस समय अहीयाह एफ़ोद धारण किए हुए उनके साथ था.
वह अहीतूब का पुत्र था, जो एली के पुत्र, फिनिहास के पुत्र
इखाबोद का भाई था. एली शीलो में याहवेह के पुरोहित थे.
सेना इस बात से बिलकुल अनजान थी कि योनातन वहां से जा
चुके थे.

4 उस संकरे मार्ग के दोनों ओर चट्टानों की तीव्र ढलान थी.
योनातन यहीं से होकर फिलिस्तीनी सेना शिविर तक पहुंचने
की योजना बना रहे थे. एक चट्टान का नाम था बोसेस और
दूसरी का सेनेह.

5 उत्तरी दिशा की चट्टान मिकमाश के निकट थी तथा दक्षिण
दिशा की चट्टान गेबा के.

6 योनातन ने अपने शस्त्रवाहक से कहा, “चलो, इन खतना-
रहितों की छावनी तक चलें. संभव है कि याहवेह हमारे लिए
सक्रिय हो जाएं. किसमें है यह क्षमता कि याहवेह को रोके?
वह छुड़ौती किसी भी परिस्थिति में दे सकते हैं, चाहे थोड़ों के
द्वारा या बहुतों के द्वारा.”

7 उनके शस्त्रवाहक ने उनसे कहा, “जो कुछ आपको सही
लग रहा है, वही कीजिए. जो आपने निश्चय कर लिया है, उसे
पूरा कीजिए. मैं हर एक परिस्थिति में आपके साथ हूं.”

8 योनातन ने कहा, “बहुत बढ़िया! हम उन लोगों के सामने
जाएंगे कि वे हमें देख सकें.

9 यदि वे हमसे यह कहें, ‘हमारे वहां पहुंचने तक वहीं ठहरे
रहना,’ तब हम वहीं खड़े रहेंगे, और उनके पास नहीं जाएंगे.

10 मगर यदि वे यह कहें, ‘यहां हमारे पास आओ,’ तब हम
उनके निकट चले जाएंगे; क्योंकि यह हमारे लिए एक चिन्ह
होगा कि याहवेह ने उन्हें हमारे अधीन कर दिया है.”

11 जब उन दोनों ने स्वयं को फिलिस्तीनी सेना पर प्रकट किया,
फिलिस्तीनियों ने उन्हें देखा, वे आपस में विचार करने लगे,
“देखो, देखो, इब्री अब अपनी उन गुफाओं में से निकलकर
बाहर आ रहे हैं, जहां वे अब तक छिपे हुए थे.”

12 तब उन सैनिकों ने योनातन तथा उनके हथियार उठानेवाले
से कहा, “इधर आ जाओ कि हम तुम्हें एक-दो पाठ पढ़ा सकें.”
योनातन ने अपने हथियार उठानेवाले से कहा, “चलो, चलो.
मेरे पीछे चले आओ, क्योंकि याहवेह ने उन्हें इस्राएल के
अधीन कर दिया है.”

13 तब योनातन अपने हाथों और पैरों का उपयोग करते हुए
ऊपर चढ़ने लगे और उनका शस्त्रवाहक उनके पीछे-पीछे
चढ़ता चला गया. योनातन फिलिस्तीनियों को मारते चले गए
और पीछे-पीछे उनके शस्त्रवाहक ने भी फिलिस्तीनियों को
मार गिराया.

14 उस पहली मार में योनातन और उनके शस्त्रवाहक ने
लगभग बीस सैनिकों को मार गिराया था और वह क्षेत्र लगभग
आधा एकड़ था.

15 उससे फिलिस्तीनी शिविर में, मैदान में तथा सभी लोगों में
आतंक छा गया. सैनिक चौकी में तथा छापामार दलों में भी
आतंक छा गया. भूमि कांपने लगी जिससे सब में आतंक और
भी अधिक गहरा हो गया.

16 बिन्यामिन प्रदेश की सीमा में स्थित गिबिया में शाऊल का
पहरेदार देख रहा था कि फिलिस्तीनी सैनिक बड़ी संख्या में
इधर-उधर हर दिशा में भाग रहे थे.

17 तब शाऊल ने अपने साथ के सैनिकों को आदेश दिया,
“सबको इकट्ठा करो और मालूम करो कि कौन-कौन यहां
नहीं है.” जब सैनिक इकट्ठा हो गए तो यह मालूम हुआ कि
योनातन और उनका शस्त्र उठानेवाला वहां नहीं थे.

18 तब शाऊल ने अहीयाह से कहा, “एफ़ोद यहां लाया जाए.”
(उस समय अहीयाह एफ़ोद धारण करता था.)

19 यहां जब शाऊल पुरोहित से बातें कर ही रहे थे, फिलिस्तीनी
शिविर में आतंक गहराता ही जा रहा था. तब शाऊल ने
पुरोहित को आदेश दिया, “अपना हाथ बाहर निकाल
लीजिए.”

20 शाऊल और उनके साथ जितने व्यक्ति थे युद्ध के लिए चल
पड़े. फिलिस्तीनी शिविर में उन्होंने देखा कि घोर आतंक में
फिलिस्तीनी सैनिक एक दूसरे को ही तलवार से घात किए जा
रहे थे.

1 Samuel 14:1

21 वहां कुछ इब्री सैनिक ऐसे भी थे, जो शाऊल की सेना छोड़
फिलिस्तीनियों से जा मिले थे. अब वे भी विद्रोही होकर शाऊल
और योनातन के साथ मिल गए.

22 इसी प्रकार, वे इस्राएली, जो एफ्राईम प्रदेश के पर्वतों में जा
छिपे थे, यह सुनकर कि फिलिस्तीनी भाग रहे हैं, वे भी युद्ध में
उनका पीछा करने में जुट गए.

23 इस प्रकार याहवेह ने उस दिन इस्राएल को छुड़ौती दी. युद्ध
बेथ-आवेन के परे फैल चुका था.

24 उस दिन इस्राएल सैनिक बहुत ही थक चुके थे क्योंकि
शाऊल ने शपथ ले रखी थी, "शापित होगा वह व्यक्ति, जो
शाम होने के पहले भोजन करेगा, इसके पहले कि मैं अपने
शत्रुओं से बदला ले लूं." तब किसी भी सैनिक ने भोजन नहीं
किया.

25 सेना वन में प्रवेश कर चुकी थी और वहां भूमि पर शहद का
छत्ता पड़ा हुआ था.

26 जब सैनिक वन में आगे बढ़ रहे थे वहां शहद बहा चला जा
रहा था, मगर किसी ने शहद नहीं खाया क्योंकि उन पर शपथ
का भय छाया हुआ था.

27 मगर योनातन ने अपने पिता द्वारा सेना को दी गई शपथ को
नहीं सुना था. उसने अपनी लाठी का छोर शहद के छत्ते में
डाल दिया. और जब उसने उस शहद को खाया, उसकी
आंखों में चमक आ गई.

28 तब सैनिकों में से एक ने उन्हें बताया, "तुम्हारे पिता ने सेना
को इन शब्दों में यह शपथ दी थी, 'शापित होगा वह व्यक्ति जो
आज भोजन करेगा!' इसलिये सब सैनिक बहुत ही थके मांदे
हैं."

29 योनातन ने कहा, "राष्ट्र के लिए मेरे पिता ने ही संकट उत्पन्न
किया है. देख लो, मेरे शहद के चखने पर ही मेरी आंखें कैसी
चमकने लगीं हैं.

30 कितना अच्छा होता यदि आज सभी सैनिकों ने शत्रुओं से
लूटी सामग्री में से भोजन कर लिया होता! तब शत्रुओं पर
हमारी जय और भी अधिक उल्लेखनीय होती."

31 उस दिन सेना ने फिलिस्तीनियों को मिकमाश से लेकर
अय्जालोन तक हरा दिया. तब वे बहुत ही थक चुके थे.

32 तब सैनिक शत्रुओं की सामग्री पर लालच कर टूट पड़े.
उन्होंने भेड़ें गाय-बैल तथा बछड़े लूट लिए. उन्होंने वहीं भूमि
पर उनका वध किया और सैनिक उन्हें लहू समेत खाने लगे.

33 इसकी सूचना शाऊल को दी गई, "देखिए, सेना याहवेह के
विरुद्ध पाप कर रही है—वे लहू के साथ उन्हें खा रहे हैं."
शाऊल ने उत्तर दिया, "तुम सभी ने विश्वासघात किया है. एक
बड़ा पत्थर लुढ़का कर यहां मेरे सामने लाओ."

34 उन्होंने आगे आदेश दिया, "तुम सब सैनिकों के बीच में
जाकर उनसे यह कहो, 'तुममें से हर एक अपना अपना बैल
या अपनी-अपनी भेड़ यहां मेरे सामने उस स्थान पर लाकर
उसका वध करे और तब उसे खाए, मगर मांस को लहू सहित
खाकर याहवेह के विरुद्ध पाप न करो.' " तब उस रात हर एक
ने अपना अपना बैल वहीं लाकर उसका वध किया.

35 फिर शाऊल ने याहवेह के लिए एक वेदी बनाई. यह उनके
द्वारा याहवेह के लिए बनाई पहली वेदी थी.

36 शाऊल ने अपनी सेना से कहा, "रात में हम फिलिस्तीनियों
पर हमला करें. सुबह होते-होते हम उन्हें लूट लेंगे. उनमें से
एक भी सैनिक जीवित न छोड़ा जाए." उन्होंने सहमति में
उत्तर दिया, "वही कीजिए, जो आपको सही लग रहा है." मगर
पुरोहित ने सुझाव दिया, "सही यह होगा कि इस विषय में हम
परमेश्वर की सलाह ले लें."

37 तब शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मैं फिलिस्तीनियों पर
हमला करूं? क्या आप उन्हें इस्राएल के अधीन कर देंगे?"
मगर परमेश्वर ने उस समय उन्हें कोई उत्तर न दिया.

38 तब शाऊल ने सभी सैन्य अधिकारियों को अपने पास
बुलाकर उनसे कहा, "तुम सभी प्रधानों, यहां आओ कि हम
यह पता करें कि आज यह पाप किस प्रकार किया गया है.

39 इस्राएल के रखवाले जीवित याहवेह की शपथ, यदि यह
पाप स्वयं मेरे पुत्र योनातन द्वारा भी किया गया हो, उसके लिए
मृत्यु दंड तय है." सारी सेना में से एक भी सैनिक ने कुछ भी न
कहा.

1 Samuel 15:1

40 तब शाऊल ने संपूर्ण इस्राएली सेना से कहा, “ठीक है. एक
ओर मैं और योनातन खड़े होंगे और दूसरी ओर तुम सभी.”
सेना ने उत्तर दिया, “आपको जो कुछ सही लगे, कीजिए.”

41 तब शाऊल ने यह प्रार्थना की, “याहवेह, इस्राएल के
परमेश्वर, यदि यह पाप मेरे द्वारा या मेरे पुत्र योनातन द्वारा ही
किया गया है, तब याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, तब उरीम के
द्वारा इसकी पुष्टि कीजिए. यदि यह पाप आपकी प्रजा इस्राएल
के द्वारा किया गया है, तब इसकी पुष्टि थुम्मीम द्वारा कीजिए.”
इस प्रक्रिया से चिट्ठियों द्वारा योनातन तथा शाऊल सूचित किए
गए और सेना निर्दोष घोषित कर दी गई.

42 तब शाऊल ने आदेश दिया, “चिट्ठियां मेरे तथा योनातन के
बीच डाली जाएं.” इसमें चिट्ठी द्वारा योनातन चुना गया.

43 तब शाऊल ने योनातन को आदेश दिया, “अब बताओ, क्या
किया है तुमने?” योनातन ने उन्हें बताया, “सच यह है कि मैंने
अपनी लाठी का सिरा शहद के छत्ते से लगा, उसमें लगे थोड़े
से शहद को सिर्फ चखा ही था. क्या यह मृत्यु दंड योग्य
अपराध है!”

44 “योनातन, यदि मैं तुम्हें मृत्यु दंड न दूं तो परमेश्वर मुझे
कठोर दंड देंगे,” शाऊल ने उत्तर दिया.

45 मगर सारी सेना इनकार कर कहने लगी, “क्या योनातन
वास्तव में मृत्यु दंड के योग्य है, जिसके द्वारा आज हमें ऐसी
महान विजय प्राप्त हुई है? कभी नहीं, कभी नहीं! जीवित
याहवेह की शपथ, उसके सिर के एक केश तक की हानि न
होगी, क्योंकि जो कुछ उसने आज किया है, वह उसने
परमेश्वर की सहायता ही से किया है.” इस प्रकार सेना ने
योनातन को निश्चित मृत्यु दंड से बचा लिया.

46 इसके बाद शाऊल ने फिलिस्तीनियों का पीछा करने का
विचार ही त्याग दिया, और फिलिस्ती अपनी-अपनी जगह पर
लौट गए.

47 जब शाऊल इस्राएल के राजा के रूप में प्रतिष्ठित हो गए,
उन्होंने उनके निकटवर्ती सभी शत्रुओं से युद्ध करना शुरू कर
दिया: मोआबियों, अम्मोनियों, एदोमियों, ज़ोबाह के राजाओं
तथा फिलिस्तीनियों से.

48 उन्होंने अमालेकियों को मार गिराया और इस्राएल को
उसके शत्रुओं से छुड़ौती प्रदान की.

49 शाऊल के पुत्र थे, योनातन, इशवी तथा मालखी-शुआ.
उनकी दो पुत्रियां भी थी: बड़ी का नाम था मेराब तथा छोटी
का मीखल.

50 शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम था, जो अहीमाज़ की
बेटी थी. उनकी सेना के प्रधान थे नेर के पुत्र अबनेर. नेर
शाऊल के पिता कीश के भाई थे.

51 शाऊल के पिता कीश तथा अबनेर के पिता नेर, दोनों ही
अबीएल के पुत्र थे.

52 शाऊल के पूरे जीवनकाल में इस्राएलियों और
फिलिस्तीनियों के बीच लगातार युद्ध चलता रहा. जब कभी
शाऊल की दृष्टि किसी साहसी और बलवान युवक पर पड़ती
थी, वह उसे अपनी सेना में शामिल कर लेते थे.

1 Samuel 15:1

1 एक दिन शमुएल शाऊल के पास आए और उनसे कहने
लगे, “इस्राएली प्रजा के लिए राजा के पद पर तुम्हारा अभिषेक
करने के लिए याहवेह ने मुझे ही चुना था; तब अब ध्यानपूर्वक
याहवेह द्वारा भेजा संदेश सुनो.

2 सेनाओं के याहवेह का यह वचन है. ‘अमालेकियों ने मिस्र
देश से निकलकर आ रहे इस्राएल का विरोध करते हुए क्या-
क्या किया था, मैंने अच्छी रीति से ध्यान में रखा है, उनके इस
व्यवहार के लिए मैं सजा ज़रूर दूंगा.

3 तो अब जाओ और अमालेकियों पर वार करो, और उनकी
सारी वस्तुओं को पूरी तरह नष्ट कर डालो. किसी को भी न
छोड़ना; पुरुष, स्त्री, बालक शिशु, बैल, भेड़, ऊंट तथा गधे,
सभी मार डाले जाएं.’ ”

4 तब शाऊल ने सेना को बुलाया कि वे तेलाइम में इकट्ठे हों.
ये सब दो लाख सैनिक थे, तथा दस हज़ार पुरुष यहूदिया से
आए हुए थे.

1 Samuel 15:1

5 शाऊल इन्हें लेकर अमालेक नगर पहुंचे और वहां घाटी में
घात लगाकर बैठ गए.

6 वहां शाऊल ने केनी जाति के लोगों से कहा, “तुम लोग यहां
से निकल भागो. अमालेकियों के बीच से तुम्हारा चले जाना ही
सही होगा. कहीं उनके साथ तुम्हारा भी नाश न हो जाए. तुम
लोगों ने मिस्र देश से निकलकर आए इस्राएलियों के साथ
कृपापूर्ण व्यवहार किया था.” तब केनी अमालेकियों को
छोड़कर चले गए.

7 तब शाऊल ने अमालेकियों पर हमला कर हाविलाह से
लेकर शूर तक, जो मिस्र देश के पास है, अमालेकियों को
मारा.

8 उन्होंने अमालेकियों के राजा अगाग को जीवित पकड़ लिया
और तलवार से देश के सभी लोगों की हत्या कर दी.

9 मगर शाऊल तथा सेना ने राजा अगाग तथा सबसे अच्छी
भेड़ों, बैलों तथा पुष्ट बछड़ों और मेमनों की हत्या नहीं की. साथ
ही उन वस्तुओं को भी नष्ट नहीं किया, जो अच्छी तथा
मूल्यवान थी. इन्हें नष्ट करना उन्हें सही न लगा. हां, उन्होंने वह
सब नष्ट कर दिया, जो उन्हें घृणित लगा, जो उनकी दृष्टि में
बेकार था.

10 शमुएल को याहवेह का यह संदेश दिया गया:

11 “मुझे खेद है कि मैंने शाऊल को राजा चुना है, क्योंकि वह
मुझसे दूर हो चुका है. उसने मेरे आदेशों का पालन नहीं
किया.” इस पर शमुएल बहुत ही क्रोधित हो गए, और वह
याहवेह के सामने पूरी रात रोते रहे.

12 प्रातःकाल वह शीघ्र उठ गए कि जाकर शाऊल से मिलें;
मगर उन्हें यह सूचना दी गई, “शाऊल कर्मेल को चले गए थे,
कि वह वहां अपनी स्मृति के लिए एक स्मारक का निर्माण करें.
इसके बाद वह आगे बढ़कर गिलगाल को चले गए हैं.”

13 जब शमुएल शाऊल के निकट पहुंचे, शाऊल ने उनका
अभिवंदन करते हुए कहा, “याहवेह की कृपादृष्टि आप पर
बनी रहे! मैंने याहवेह के आदेश का पालन किया है.”

14 “अच्छा!” शमुएल ने शाऊल से प्रश्न किया, “तब मैं जो भेड़ों
का मिमियाना तथा गायों का रम्भाना सुन रहा हूं; वह कहां से
आता है?”

15 शाऊल ने स्पष्ट किया, “उन्हें सेना अमालेकियों के यहां से
ले आये है. सेना ने सर्वोत्तम पशु याहवेह, हमारे परमेश्वर को
चढ़ाने के उद्देश्य से बचा लिए हैं, शेष सभी का वध कर दिया
गया है.”

16 “बस! बस करो!” शमुएल ने शाऊल से कहा, “अब वह
सुनो, जो याहवेह ने कल रात मुझ पर प्रकट किया है.” शाऊल
ने उत्तर दिया, “जी, बताइए.”

17 शमुएल ने उनसे कहा, “क्या यह सच नहीं कि जब तुम स्वयं
अपने ही दृष्टि में महत्वहीन थे, तुम्हें इस्राएल के सारा गोत्रों का
अगुआ बना दिया गया? याहवेह ने तुम्हें इस्राएल का राजा
नियुक्त किया.

18 याहवेह ने तुम्हें यह कहकर विशेष काम का दायित्व सौंपते
हुए भेजा था ‘जाओ! उन पापी अमालेकियों का नाश करो!
उनका पूरा नाश होने तक युद्ध करते रहो.’

19 तुमने याहवेह के आदेश का पालन क्यों नहीं किया? बल्कि
तुमने लूट की वस्तुओं का लोभ किया है, जो याहवेह की दृष्टि
में अनुचित है.”

20 शाऊल ने अपना पक्ष स्पष्ट करते हुए कहा, “मगर मैंने तो
याहवेह की आज्ञा का पालन किया है! जिस विशेष काम के
लिए याहवेह ने मुझे भेजा था, वह मैंने पूर्ण किया है.
अमालेकियों का संहार करने के बाद मैं राजा अगाग को यहां
ले आया हूं.

21 हां, सेना ने कुछ भेड़ें तथा गाय-बैल बचा लिए हैं—संहार के
लिए निर्धारित पशुओं में से सर्वोत्तम, ताकि इन्हें गिलगाल में
याहवेह, आपके परमेश्वर को चढ़ाए जा सके.”

22 शमुएल ने उनसे पूछा: “क्या याहवेह की खुशी
आज्ञाकारिता से बढ़कर होमबलि तथा बलि चढ़ाने में है?
निःसंदेह आज्ञाकारिता, बलि चढ़ाने से कहीं अधिक बढ़कर
है, तथा याहवेह के वचन को ध्यान से सुनना मेढ़ों की बलि से
बढ़कर है.

1 Samuel 16:1

23 विद्रोह वैसा ही पाप है, जैसा जादू-टोना, और अहंकार वैसा
ही घोर अपराध है जैसा मूर्ति पूजा. इसलिये कि तुमने याहवेह
के आदेश को अस्वीकार कर दिया है, याहवेह ने भी तुम्हारे
राजत्व को अस्वीकार कर दिया है."

24 यह सुन शाऊल ने शमुएल से कहा, "मैंने पाप किया है. मैंने
याहवेह के आदेश का उल्लंघन तथा आपके निर्देशों को
ठुकराया है. इसका कारण यह था कि मुझे अपनी सेना से भय
लग रहा था, और मैं उनकी इच्छा का विरोध न कर सका.

25 तब अब कृपा कर मेरा पाप क्षमा कर दें. लौटकर मेरे साथ
चलिए कि मैं याहवेह की वंदना कर सकूं."

26 शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ लौटकर नहीं
जाऊंगा, क्योंकि तुमने याहवेह के आदेश को ठुकराया है,
याहवेह भी तुम्हें इस्राएल के राजा के रूप में अस्वीकार कर
चुके हैं."

27 जैसे ही शमुएल मुड़कर जाने के लिए तैयार हुए, शाऊल ने
उनके बाहरी वस्त्र के छोर को पकड़ लिया और इस काम में
वह वस्त्र फट गया.

28 इस पर शमुएल ने शाऊल से कहा, "आज याहवेह ने
इस्राएल राज्य को तुमसे छीनकर तुम्हारे पड़ोसी को दे दिया
है, जो तुमसे श्रेष्ठ है.

29 इस्राएल के परम प्रधान अपनी बातें नहीं बदलते, और न ही
वह अपने विचार बदलते हैं, क्योंकि वह मनुष्य नहीं कि अपने
विचार बदलते रहें."

30 शाऊल ने दोबारा स्वीकार किया, "मैंने पाप किया है, मगर
कृपया मेरी प्रजा के पुरनियों के सामने तथा सारे इस्राएल राष्ट्र
के सामने मेरे सम्मान का ध्यान रखकर मेरे साथ वहां लौट
चलिए, कि मैं याहवेह, आपके परमेश्वर की वंदना कर सकूं."

31 तो शमुएल उनके साथ लौटने के लिए अंत में सहमत हो
गए, और शाऊल ने वहां याहवेह की वंदना की.

32 इसके बाद शमुएल ने आदेश दिया, "अमालेकियों के राजा
अगाग को यहां लाया जाए." अगाग उनके सामने प्रसन्नता से,
यह विचार करता हुआ आया. "मृत्यु का कड़वा क्षण अब बीत
चुका है."

33 मगर शमुएल ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "ठीक जिस
प्रकार तुम्हारी तलवार ने न जाने कितनी स्त्रियों की गोद सुनी
कर दी है, उसी प्रकार आज तुम्हारी माता भी संतानहीन
स्त्रियों में से एक हो जाएगी." यह कहते हुए शमुएल ने
गिलगाल में याहवेह के सामने अगाग को टुकड़े-टुकड़े कर
दिए.

34 इसके बाद शमुएल रामाह नगर को चले गए, तथा शाऊल
अपने घर शाऊल के गिबियाह को.

35 इसके बाद शमुएल ने आजीवन शाऊल से भेंट न की; मगर
वह शाऊल के लिए विलाप करते रहे. याहवेह को इस विषय
का खेद रहा कि उन्होंने शाऊल को इस्राएल का राजा बनाया
था.

1 Samuel 16:1

1 याहवेह ने शमुएल से कहा, "बहुत हुआ! शाऊल के लिए
और कितना रोते रहोगे? मैं उसे इस्राएल के राजा के रूप में
अयोग्य ठहरा चुका हूं. अपनी तेल के सींग में तेल भरकर
निकलो. मैं तुम्हें बेथलेहेम के यिशै के यहां भेज रहा हूं, उसके
पुत्रों में से एक को मैं अपने लिए राजा चुन चुका हूं."

2 शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया, "यह कैसे संभव है? शाऊल
इसके विषय में सुनेगा तो मेरी हत्या कर देगा." तब याहवेह ने
आदेश दिया, "एक बछड़ा अपने साथ ले जाओ, और यह
घोषणा करना, मैं याहवेह के लिए बलि चढ़ाने आया हूं.

3 तब इस बलि अर्पण के मौके पर यिशै को आमंत्रित करना.
मैं तुम्हें बताऊंगा कि तुम्हें क्या करना होगा. मेरी ओर से तुम्हें
उसका अभिषेक करना होगा, जिसे मैं तुम्हारे लिए संकेत
करूंगा."

4 शमुएल ने याहवेह के आदेश के अनुसार किया. जब वह
बेथलेहेम पहुंचे, उनसे भेंटकरने आए नगर के पुरनिये
भयभीत हो कांप रहे थे. उन्होंने उनसे पूछा, "क्या सब कुछ
सकुशल है?"

1 Samuel 16:1

5 शमुएल ने उत्तर दिया, “हां, सब कुशल है. मैं यहां याहवेह के
लिए बलि अर्पित करने आया हूं. स्वयं को शुद्ध करके बलि
अर्पण के लिए मेरे साथ चलो.” तब उन्होंने यिशै और उनके
पुत्रों को शुद्ध करके उन्हें बलि अर्पण के लिए आमंत्रित किया.

6 जब वे सब एकत्र हुए, शमुएल का ध्यान एलियाब की ओर
गया ओर उन्होंने अपने मन में विचार किया, “निःसंदेह, यहां
याहवेह के सामने उनका अभिषिक्त खड़ा हुआ है.”

7 मगर याहवेह ने शमुएल से कहा, “न तो उसके रूप में और
न उसके डीलडौल से प्रभावित हो जाओ, क्योंकि मैंने उसे
अयोग्य ठहरा दिया है. क्योंकि याहवेह का आंकलन वैसा नहीं
होता, जैसा मनुष्य का होता है: मनुष्य बाहरी रूप को देखकर
आंकलन करता है, मगर याहवेह हृदय को देखते हैं.”

8 इसके बाद यिशै ने अबीनादाब को बुलाया कि वह शमुएल
के सामने प्रस्तुत किया जाए, मगर शमुएल ने उन्हें बताया,
“याहवेह ने इसे भी नहीं चुना है.”

9 तब यिशै ने शम्माह को प्रस्तुत किया, मगर शमुएल ने कहा,
“याहवेह ने इसे भी नहीं चुना है.”

10 यिशै ने अपने सातों पुत्र शमुएल के सामने प्रस्तुत किए,
मगर शमुएल यिशै से कहा, “याहवेह ने इनमें से किसी को भी
नहीं चुना है.”

11 इस पर शमुएल ने यिशै से प्रश्न किया, “क्या तुम्हारे इतने ही
पुत्र हैं?” “नहीं, सबसे छोटा भी है, मगर वह भेड़ों को चरा रहा
है.” यिशै ने उत्तर दिया. “उसे तुरंत बुलवा लो; उसके यहां आने
तक हम आगे का कोई काम न कर सकेंगे.” शमुएल ने कहा.

12 तब यिशै ने उसे बुलवाया. उसकी त्वचा गुलाबी, आंखें सुंदर
तथा रूप सुडौल था. याहवेह ने शमुएल को आदेश दिया,
“उठो! उसका अभिषेक करो; क्योंकि यही है मेरा चुना हुआ.”

13 तब शमुएल ने सब भाइयों की उपस्थिति में सींग में लाए गए
तेल से दावीद का अभिषेक किया. उस क्षण से दावीद पर
याहवेह का आत्मा वेग तथा बल के साथ उतरने लगे. इसके
बाद शमुएल रामाह नगर लौटे.

14 अब तक याहवेह का आत्मा शाऊल से दूर हो चुके थे, तथा
अब याहवेह की ओर से ठहराया हुआ एक दुष्ट आत्मा उन्हें
घबराने लगी.

15 शाऊल के सेवकों ने उन्हें सूचित किया, “आपके इस कष्ट
का कारण है, परमेश्वर द्वारा नियुक्त एक बुरी आत्मा.

16 हमारे स्वामी अपने इन सेवकों को आदेश दें कि किसी
अच्छे वाद्यवादक की खोज की जाए, कि जब-जब परमेश्वर
द्वारा नियुक्त दुष्ट आत्मा आप पर आए, वह अपने वाद्य वादन
द्वारा आप में सुख-शांति भर दे.”

17 तब शाऊल ने उन्हें आदेश दिया, “जाओ! किसी अच्छे
वाद्यवादक की खोज करो और उसे मेरे पास ले आओ.”

18 उनमें से एक सेवक ने उन्हें सूचित किया, “मैंने बेथलेहेम के
यिशै के एक पुत्र को देखा है. वह तन्तु वाद्यवादक है. उसके
अलावा वह एक शूर योद्धा है, बातें करने में बुद्धिमान है,
रूपवान है तथा याहवेह उसके साथ हैं.”

19 तब शाऊल ने यिशै के पास इस संदेश के साथ दूत भेज
दिए, “अपने पुत्र दावीद को, जो इस समय भेड़ों की रखवाली
कर रहा है, मेरे पास भेज दो.”

20 इस पर यिशै ने अपने पुत्र दावीद के साथ एक गधे पर
रोटियां, द्राक्षारस की छागल तथा एक छोटा मेमना शाऊल के
लिए भेज दिया.

21 शाऊल की उपस्थिति में पहुंचकर दावीद शाऊल की सेवा
करने लगे. दावीद शाऊल के बहुत ही प्रिय पात्र थे, तब
शाऊल ने उन्हें अपना शस्त्रवाहक बना लिया.

22 शाऊल ने यिशै को यह संदेश भेज दिया, “दावीद को मेरी
सेवा में रहने दीजिए क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं.”

23 जब कभी परमेश्वर द्वारा भेजी दुष्ट आत्मा शाऊल पर प्रभावी
होती थी, दावीद अपना वाद्य यंत्र लेकर वादन करने लगते थे.
इससे उन्हें शांति प्राप्त हो जाती थी; यह उनके लिए सुखद
होता था, तथा बुरी आत्मा उन्हें छोड़कर चली जाती थी.

1 Samuel 17:1

1 इस समय फिलिस्तीनियों ने युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठी की हुई थी. वे यहूदिया के सोकोह नामक स्थान पर एकत्र थे. उन्होंने सोकोह तथा अज़ेका के मध्यवर्ती क्षेत्र में अपने शिविर खड़े किए थे.

2 शाऊल और उनकी सेना एलाह घाटी में एकत्र थी, जहां उन्होंने अपने शिविर खड़े किए थे. फिलिस्तीनियों से युद्ध के लिए उन्होंने यहीं अपनी सेना संयोजित की थी.

3 फिलिस्तीनी सेना एक पहाड़ी पर तथा इस्राएली सेना अन्य पहाड़ी पर मोर्चा बांधे खड़ी थी, और उनके मध्य घाटी थी.

4 इसी समय फिलिस्तीनियों के शिविर से एक योद्धा बाहर आया. उसका नाम था गोलियथ, जो गाथ प्रदेश का वासी था. कद में वह लगभग तीन मीटर ऊंचा था.

5 उसने अपने सिर पर कांसे का टोप पहन रखा था. उसके शरीर पर पीतल का कवच था, जिसका भार सत्तावन किलो था.

6 उसके पैरों पर भी पीतल का कवच था. उसके कंधों के मध्य कांसे की बर्छी लटकी हुई थी

7 उसके भाले का दंड करघे के दंड समान था. भाले के लोहे का फल लगभग सात किलो था. उसके आगे-आगे उसका ढाल संवाहक चल रहा था.

8 इस्राएल की सेना पंक्ति के सामने खड़े हो उसने उन्हें संबोधित कर उच्च स्वर में कहना शुरू किया, "क्या कर रहे हो तुम यहां युद्ध संरचना में संयोजित होकर? शाऊल के दासों, मैं फिलिस्तीनी हूं. अपने मध्य से एक योद्धा चुनो कि वह मेरे पास आए.

9 यदि वह मुझसे युद्ध कर सके और मेरा वध कर सके, तो हम तुम्हारे सेवक बन जाएंगे; मगर यदि मैं उसे पराजित करूं और उसका वध करूं, तो तुम्हें हमारे दास बनकर हमारी सेवा करनी होगी."

10 वह फिलिस्तीनी यह भी कह रहा था, "आज मैं इस्राएली सेना को चुनौती देता हूं! मुझसे युद्ध करने के लिए एक योद्धा भेजो."

11 जब शाऊल तथा इस्राएली सेना ने यह सब सुना तो वे सभी निराश हो गए, और उनमें भय समा गया.

12 दावीद यहूदिया प्रदेश में इफ़्राथ क्षेत्र के बेथलेहेम नगर के यिशै नामक व्यक्ति के पुत्र थे. यिशै के आठ पुत्र थे. शाऊल के शासनकाल में यिशै वयोवृद्ध हो चुके थे.

13 उनके तीन बड़े पुत्र शाऊल की सेना में शामिल थे: एलियाब उनका जेठा पुत्र, अबीनादाब दूसरा, तथा तीसरा पुत्र शम्माह.

14 दावीद इन सबसे छोटे थे. तीन बड़े भाई ही शाऊल की सेना में शामिल हुए थे.

15 दावीद शाऊल की उपस्थिति से बेथलेहेम जा-जाकर अपने पिता की भेड़ों की देखभाल किया करते थे.

16 वह फिलिस्तीनी चालीस दिन तक हर सुबह तथा शाम इस्राएली सेना के सामने आकर खड़ा हो जाया करता था.

17 यिशै ने अपने पुत्र दावीद से कहा, "अपने भाइयों के लिए शीघ्र यह एफाह भर भुने अन्न, तथा दस रोटियों की टोकरी ले जाओ.

18 इसके अतिरिक्त उनके सैन्य अधिकारी के लिए ये दस पनीर टिकियां भी ले जाओ. अपने भाइयों का हाल भी मालूम कर आना, और मुझे आकर सारी ख़बर देना.

19 शाऊल और उनकी सारी सेना फिलिस्तीनियों से युद्ध करने के लक्ष्य से एलाह की घाटी में एकत्र हैं."

20 दावीद प्रातः जल्दी उठे और अपनी भेड़ें एक कर्मी की सुरक्षा में छोड़कर पिता के आदेश के अनुरूप सारा प्रावधान लेकर प्रस्थान किया. वह शिविर ठीक उस मौके पर पहुंचे, जब सेना युद्ध क्षेत्र के लिए बाहर आ ही रही थी. इसी समय वे सब युद्ध घोष नारा भी लगा रहे थे.

1 Samuel 17:1

21 इस्राएली सेना और फिलिस्तीनी सेना आमने-सामने खड़ी
हो गई.

22 दावीद अपने साथ लाई हुई सामग्री सामान के रखवाले को
सौंपकर रणभूमि की ओर दौड़ गए, कि अपने भाइयों से
उनके कुशल क्षेम के बारे में पूछताछ की.

23 जब वह उनसे संवाद कर ही रहे थे, गाथ प्रदेश से आया वह
गोलियथ नामक फिलिस्तीनी योद्धा, फिलिस्तीनी सेना का
पड़ाव से बाहर आ रहा था. आज भी उसने वही शब्द दोहराए,
जो वह अब तक दोहराता आया था, और दावीद ने आज वे
शब्द सुने.

24 उसे देखते ही संपूर्ण इस्राएली सेना बहुत ही भयभीत होकर
उसकी उपस्थिति से दूर भागने लगी.

25 कुछ सैनिकों ने दावीद से बातचीत करते हुए पूछा, "देख
रहे हो न इस व्यक्ति को, जो हमारी ओर बढ़ा चला आ रहा है?
वह इस्राएल को तुच्छ साबित करने के उद्देश्य से रोज-रोज
यही कर रहा है. जो कोई उसे धराशायी कर देगा, राजा उसे
समृद्ध सम्पन्न कर देंगे, उससे अपनी बेटी का विवाह कर देंगे
तथा उसके पिता के संपूर्ण परिवार को कर मुक्त भी कर देंगे."

26 दावीद ने बातें कर रहे उन सैनिकों से प्रश्न किया, "उस
व्यक्ति को क्या प्रतिफल दिया जाएगा, जो इस फिलिस्तीनी
का संहार कर इस्राएल के उस अपमान को मिटा देगा?
क्योंकि यह अख़तनित फिलिस्तीनी होता कौन है, जो जीवन्त
परमेश्वर की सेनाओं की ऐसी उपेक्षा करे?"

27 उन सैनिकों ने दावीद को उत्तर देते हुए वही कहा, जो वे
उसके पूर्व उन्हें बता चुके थे, "जो कोई इसका वध करेगा, उसे
वही प्रतिफल दिया जाएगा, जैसा हम बता चुके हैं."

28 दावीद के बड़े भाई एलियाब ने दावीद को सैनिकों से बातें
करते सुना. एलियाब ने दावीद पर क्रोधित हुआ. एलियाब
दावीद से पूछा, "तुम यहां क्यों आये? मरुभूमि में उन थोड़ी सी
भेड़ों को किसके पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूं कि तुम
यहां क्यों आये हो! मुझे पता है कि तू कितना अभिमानी है! मैं
तेरे दुष्ट हृदय को जानता! तुम केवल यहां युद्ध देखने के लिये
आना चाहते थे!"

29 दावीद ने उत्तर दिया, "अरे! मैंने किया ही क्या है? क्या मुझे
पूछताछ करने का भी अधिकार नहीं?"

30 यह कहकर दावीद वहां से चले गए, और किसी अन्य
सैनिक से उन्होंने वही प्रश्न पूछा, जिसका उन्हें वही उत्तर प्राप्त
हुआ, जो उन्हें इसके पहले दिया गया था.

31 किसी ने दावीद का वक्तव्य शाऊल के सामने जा दोहराया.
शाऊल ने उन्हें अपने पास लाए जाने का आदेश दिया.

32 दावीद ने शाऊल से कहा, "किसी को भी निराश होने की
आवश्यकता नहीं है. मैं, आपका सेवक, जाकर उस
फिलिस्तीनी से युद्ध करूंगा."

33 शाऊल ने दावीद को सलाह देते हुए कहा, "यह असंभव है
कि तुम जाकर इस फिलिस्तीनी से युद्ध करो; तुम सिर्फ एक
बालक हो और वह जवानी से एक योद्धा."

34 दावीद ने शाऊल को उत्तर दिया, "मैं, आपका सेवक, अपने
पिता की भेड़ों की रखवाली करता रहा हूं. जब कभी सिंह या
भालू भेड़ों के झुंड में से किसी भेड़ को उठाकर ले जाता है,

35 मैं उसका पीछा कर, उस पर प्रहार कर उसके मुख से भेड़
को निकाल लाता हूं, यदि वह मुझ पर हमला करता है, मैं
उसका जबड़ा पकड़, उस पर वार कर उसे मार डालता हूं.

36 आपके सेवक ने सिंह तथा भालू दोनों ही का संहार किया
है. इस अख़तनित फिलिस्तीनी की भी वही नियति होने पर है,
जो उनकी हुई है, क्योंकि उसने जीवन्त परमेश्वर की सेनाओं
को तुच्छ समझा है.

37 याहवेह, जिन्होंने मेरी रक्षा सिंह तथा रीछ से की है मेरी रक्षा
इस फिलिस्तीनी से भी करेंगे." इस पर शाऊल ने दावीद से
कहा, "बहुत बढ़िया! जाओ, याहवेह की उपस्थिति तुम्हारे
साथ बनी रहे."

38 यह कहते हुए शाऊल ने दावीद को अपने हथियारों से
सुसज्जित करना शुरू कर दिया.

1 Samuel 17:1

39 दावीद ने इनके ऊपर शाऊल की तलवार भी कस ली और
फिर इन सबके साथ चलने की कोशिश करने लगे, क्योंकि
इसके पहले उन्होंने इनका प्रयोग कभी न किया था. उन्होंने
शाऊल से कहा, “इन्हें पहनकर तो मेरे लिए चलना फिरना
मुश्किल हो रहा है; क्योंकि मैंने इनका प्रयोग पहले कभी नहीं
किया है.” यह कहते हुए दावीद ने वे सब उतार दिए.

40 फिर दावीद ने अपनी लाठी ली, नदी के तट से पांच चिकने-
सुडौल पत्थर उठाए, उन्हें अपनी चरवाहे की झोली में डाला,
अपने हाथ में अपनी गोफन लिए हुए फिलिस्तीनी की ओर बढ़
चला.

41 वह फिलिस्तीनी भी बढ़ते हुए दावीद के निकट आ पहुंचा.
उसके आगे-आगे उसका ढाल उठानेवाला चल रहा था.

42 जब उस फिलिस्तीनी ने ध्यानपूर्वक दावीद की ओर देखा,
तो उसके मन में दावीद के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न हो गए,
क्योंकि दावीद सिर्फ एक बालक ही थे—कोमल गुलाबी त्वचा
और बहुत ही सुंदर.

43 उस फिलिस्तीनी ने दावीद को संबोधित करते हुए कहा, “मैं
कोई कुत्ता हूं, जो मेरी ओर यह लाठी लिए हुए बढ़े चले आ रहे
हो?” और वह अपने देवताओं के नाम लेकर दावीद का शाप
देने लगा.

44 दावीद को संबोधित कर वह कहने लगा, “आ जा! आज मैं
तेरा मांस पशु पक्षियों का आहार बना छोड़ूंगा.”

45 तब दावीद ने उस फिलिस्तीनी से कहा, “तुम मेरी ओर यह
भाला, यह तलवार, बरछा तथा शूल लिए हुए बढ़ रहे हो, मगर
मैं तुम्हारा सामना सेनाओं के याहवेह के नाम में कर रहा हूं,
जो इस्राएल की सेनाओं के परमेश्वर हैं, तुमने जिनकी प्रतिष्ठा
को भ्रष्ट किया है.

46 आज ही याहवेह तुम्हें मेरे अधीन कर देंगे. मैं तुम्हारा संहार
करूंगा और तुम्हारा सिर काटकर देह से अलग कर दूंगा.
और मैं आज फिलिस्तीनी सेना के शव पक्षियों और वन्य
पशुओं के लिए छोड़ दूंगा कि सारी पृथ्वी को यह मालूम हो
जाए कि परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र में हैं,

47 तथा यहां उपस्थित हर एक व्यक्ति को यह अहसास हो
जाएगा कि याहवेह के लिए छुड़ौती के साधन तलवार और
बर्छी नहीं हैं. यह युद्ध याहवेह का है और वही तुम्हें हमारे
अधीन कर देंगे.”

48 यह सुनकर वह फिलिस्तीनी दावीद पर प्रहार करने के
लक्ष्य से आगे बढ़ा. वहां दावीद भी फिलिस्तीनी पर हमला
करने युद्ध रेखा की ओर दौड़े.

49 दावीद ने अपने झोले से एक पत्थर निकाला, गोफन में रख
उसे फेंका और वह पत्थर जाकर फिलिस्तीनी के माथे पर जा
लगा, और भीतर गहरा चला गया और वह भूमि पर मुख के
बल गिर पड़ा.

50 इस प्रकार दावीद सिर्फ गोफन और पत्थर के द्वारा उस
फिलिस्तीनी पर विजयी हो गए. उन्होंने इनके द्वारा उस
फिलिस्तीनी पर वार किया और उसकी मृत्यु हो गई. दावीद
के पास तलवार तो थी नहीं.

51 तब वह दौड़कर उस फिलिस्तीनी की देह पर चढ़ गए,
उसकी म्यान में से तलवार खींची, उसकी हत्या करने के लिए
उसका सिर उस तलवार द्वारा अलग कर दिया. जब फिलिस्ती
सेना ने यह देखा कि उनका शूर योद्धा मारा जा चुका है, वे
भागने लगे.

52 यह देख इस्राएल तथा यहूदिया के सैनिकों ने युद्धनाद करते
हुए उनका पीछा करना शुरू कर दिया. वे उन्हें खदेड़ते हुए
गाथ तथा एक्रोन के प्रवेश द्वार तक जा पहुंचे. घायल
फिलिस्तीनी सैनिक शअरयिम से गाथ और एक्रोन के मार्ग पर
पड़े रहे.

53 इस्राएली सैनिक उनका पीछा करना छोड़कर लौटे और
फिलिस्तीनी शिविर को लूट लिया.

54 दावीद उस फिलिस्तीनी का सिर उठाकर येरूशलेम ले गए
और उसके सारे हथियार अपने तंबू में रख लिए.

55 जब दावीद फिलिस्तीनी से युद्ध करने जा रहे थे, शाऊल
उनकी हर एक गतिविधि को ध्यानपूर्वक देख रहे थे. उन्होंने
अपनी सेना के सेनापति अबनेर से पूछा, “अबनेर, यह युवक
किसका पुत्र है?” अबनेर ने उत्तर दिया, “महाराज, आप
जीवित रहें, यह मैं नहीं जानता.”

1 Samuel 18:1

56 राजा ने आदेश दिया, “यह पता लगाया जाए यह किशोर
किसका पुत्र है.”

57 उस फिलिस्तीनी का संहार कर लौटते ही सेनापति अबनेर
दावीद को राजा शाऊल की उपस्थिति में ले गए. इस समय
दावीद के हाथ में उस फिलिस्तीनी का सिर था.

58 शाऊल ने दावीद से पूछा. “युवक, कौन हैं तुम्हारे पिता?”
दावीद ने उन्हें उत्तर दिया, “आपके सेवक बेथलेहेम के यिशै.”

1 Samuel 18:1

1 जैसे ही दावीद और शाऊल के बीच बातें खत्म हुईं, योनातन
और दावीद के बीच गहरा संबंध बनना शुरू हुआ. योनातन
के लिए दावीद प्राणों से प्रिय हो गए.

2 शाऊल ने उसी दिन से दावीद को अपने पास रख लिया और
उन्हें अपने पिता के घर लौटने की आज्ञा ही न दी.

3 योनातन ने दावीद से वाचा बांधी, क्योंकि दावीद उन्हें अपने
प्राणों से प्रिय हो गए थे.

4 योनातन ने अपने औपचारिक वस्त्र उतारकर दावीद को दे
दिए, जिनमें उनकी तलवार, उनका धनुष-यहां तक उनका
कटिबंध भी शामिल था.

5 शाऊल जिस किसी काम के लिए दावीद को भेजा करते थे,
दावीद उसमें सफलता ही प्राप्त करते थे. शाऊल ने उन्हें सैन्य
अधिकारी चुन लिया. इससे न केवल सेना में हर्ष की लहर दौड़
गई बल्कि शाऊल के सेवक भी इससे प्रसन्न हो गए.

6 जब फिलिस्तीनियों का संहार कर विजयी सेना लौट रही थी,
इस्राएल के सारा नगरों से आयीं स्त्रियों ने नृत्य करते और गाते
हुए शाऊल राजा से भेंट की. वे खंजड़ी तथा तन्तु वाद्य वादन
करती हुई बहुत ही आनंदित थी.

7 वाद्यों की सही पर गाती हुई स्त्रियों के गीत के शब्द थे:
“शाऊल ने अपने हज़ारों शत्रुओं को मारा मगर, दावीद ने
अपने दस हज़ार शत्रुओं को.”

8 इससे शाऊल बहुत ही क्रोधित हुआ. यह राग शाऊल के
अप्रसन्नता का कारण बन गया. वह विचार करते रहे, “उन्होंने
दावीद को दस हज़ार का श्रेय दिया है, मगर मुझे सिर्फ एक
हज़ार का. तो फिर अब उसके पास राज्य के अलावा और
किस वस्तु की कमी रह गई है?”

9 उस दिन से दावीद से शाऊल को जलन होने लगी.

10 अगले दिन परमेश्वर द्वारा भेजी गई एक दुष्ट आत्मा झपटती
हुई शाऊल पर उतरी और जिस समय दावीद वाद्य वादन कर
रहे थे, शाऊल आवेश में आ गए और अपने ही घर में तहस
नहस करने लगे. उस समय शाऊल के हाथ में भाला था.

11 शाऊल ने दावीद पर भाला फेंका. वह विचार कर रहे थे,
“मैं दावीद को दीवार से छेद दूंगा,” मगर दो बार दावीद अपनी
चतुराई से बच निकले.

12 शाऊल दावीद से डरने लगे, क्योंकि याहवेह दावीद के साथ
थे, मगर उनसे दूर.

13 शाऊल ने दावीद को वहां से हटाकर हज़ार सैनिकों के
सेनापति का पद दे दिया. तब दावीद इन सैनिकों को लेकर
युद्ध पर जाते, और उन्हें वापस ले आते थे.

14 दावीद जिस किसी काम में हाथ डालते, वह सफल ही होता
था, क्योंकि उन्हें याहवेह का साथ मिला हुआ था.

15 जब शाऊल ने देखा कि दावीद कितनी सफलताएं प्राप्त
करते जा रहे हैं, वह दावीद से और भी अधिक डरने लगे.

16 दावीद सारे इस्राएल तथा यहूदिया के प्रिय पात्र बन चुके थे,
क्योंकि उनकी युद्ध नीति सराहनीय थी.

17 एक दिन शाऊल ने दावीद से कहा, “सुनो, मेरी इच्छा है कि
मैं अपनी बड़ी बेटी का विवाह तुमसे कर दूं. तुम्हें बस इतना
ही करना होगा कि तुम मेरे लिए साहसी योद्धा होकर याहवेह
के युद्ध लड़ो.” वास्तव में शाऊल का सोचना यह था, “यह
करने पर दावीद की हत्या का दोष मुझ पर नहीं बल्कि वह
फिलिस्तीनियों पर आएगा. ज़रूरी ही नहीं है कि मैं उसकी
हत्या की कोशिश करूं, फिलिस्तीनी ही यह काम पूरा कर
देंगे!”

1 Samuel 19:1

18 दावीद ने शाऊल को उत्तर दिया, "कौन होता हूं मैं? इस्राएल में क्या महत्व है मेरे संबंधियों या मेरे पिता के कुल का, कि मुझे राजा का दामाद होने का सम्मान मिले?"

19 फिर भी, जब दावीद और शाऊल की बेटी मेराब के विवाह का ठहराया हुआ दिन आया, शाऊल ने उसका विवाह मेहोलावासी आद्रिएल से कर दिया.

20 वास्तव में शाऊल की बेटी मीखल को दावीद से प्रेम था. जब शाऊल को इसकी सूचना दी गई, वह इससे प्रसन्न हो गए.

21 शाऊल ने विचार किया, "मैं यह विवाह कर देता हूं, मीखल ही दावीद के लिए एक फंदा बन जाए, और तब फिलिस्तीनी ही दावीद की हत्या कर दें." यह दूसरा मौका था, जब शाऊल ने दावीद के सामने दामाद होने का प्रस्ताव रखा था; "अब तुम मेरे दामाद बन सकते हो."

22 दूसरी ओर शाऊल ने अपने सेवकों को आदेश दे रखा था, "दावीद से अकेले में यह कहना, 'सुनो, महाराज तुमसे बहुत खुश हैं. इसके अलावा तुम सभी सेवकों के प्रिय हो; राजा के दामाद होने योग्य तो सिर्फ तुम्हीं हो.' "

23 शाऊल के सेवकों ने यह वक्तव्य दावीद के लिए दोहरा दिया. यह सुन दावीद ने उन्हें समझाया, "क्या समझते हो तुम लोग? क्या, राजा का दामाद होना कोई साधारण बात है? मैं एक निर्धन व्यक्ति हूं—एकदम तुच्छ."

24 जब दावीद के ये विचार शाऊल तक पहुंचाए गए,

25 शाऊल ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया, "दावीद से यह कहना, 'राजा तुमसे कोई बेटी के मोल की उम्मीद नहीं कर रहे. वह तुम्हारे द्वारा फिलिस्तीनियों से सिर्फ बदला ही लेना चाहते हैं. तब इसके लिए तुम्हें उन्हें सिर्फ एक सौ फिलिस्तीनी पुरुषों के लिंग की खाल लाकर देना होगा.' " इसके द्वारा शाऊल सिर्फ यह चाह रहे थे कि दावीद फिलिस्तीनियों के हाथ में पड़ जाएं और मारे जाएं.

26 जब शाऊल के अधिकारियों ने जाकर दावीद को यह सूचना दी, राजा के दामाद हो जाने के लिए दावीद खुशी से तैयार हो गए. तय किए गए समय के पहले ही,

27 दावीद अपने साथियों के साथ निकल पड़े, दो सौ फिलिस्तीनियों को मार गिराया और दावीद ने उनके लिंग की खाल ले जाकर राजा को भेंटकर दी कि वह राजा के दामाद बन सकें. शाऊल ने अपनी बेटी मीखल का विवाह दावीद से कर दिया.

28 इस बात के प्रकाश में, कि याहवेह दावीद के साथ हैं, तथा यह भी कि उनकी बेटी मीखल दावीद से प्रेम करती है,

29 शाऊल दावीद से और भी अधिक डर गए. उससे शाऊल दावीद के स्थायी शत्रु बन गए.

30 तब फिलिस्तीनी सैन्य अधिकारियों ने युद्ध के लिए इकट्ठा होना शुरू कर दिया. जब कभी वे हमला की कोशिश करते थे, दावीद शाऊल के सभी अधिकारियों की अपेक्षा कहीं अधिक जयवंत होकर लौटते थे. इससे दावीद बहुत ही प्रसिद्ध होते चले गए.

1 Samuel 19:1

1 शाऊल ने अपने पुत्र योनातन तथा अपने सारा सेवकों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि अनिवार्य है कि दावीद की हत्या कर दी जाए. मगर शाऊल के पुत्र योनातन को दावीद बहुत ही प्रिय थे.

2 योनातन ने दावीद को इस विषय पर सचेत किया, "मेरे पिता तुम्हारी हत्या की कोशिश कर रहे हैं. तब कल प्रातः बहुत ही सतर्क रहना. मैदान में किसी अज्ञात स्थान पर जाकर छिप जाओ.

3 मैं भी मैदान में जाकर अपने पिता के साथ खड़ा रहूंगा, जहां तुम छिपे होंगे मैं अपने पिता से तुम्हारे संबंध में वार्तालाप शुरू करूंगा. जब मुझे इस समस्या का मूल ज्ञात हो जाएगा, मैं वह तुम्हें बता दूंगा."

4 योनातन ने अपने पिता के सामने दावीद की प्रशंसा करते हुए कहना शुरू किया, "यह सही न होगा कि राजा अपने सेवक दावीद के विरुद्ध कोई पाप कर बैठें, क्योंकि दावीद ने तो आपके विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है. इसके विपरीत दावीद के काम आपके लिए हितकर ही सिद्ध हुए हैं.

1 Samuel 19:1

5 दावीद ने अपने प्राणों पर खेलकर उस फिलिस्तीनी का
संहार किया है, जिससे याहवेह ने सारा इस्राएल को
उल्लेखनीय छुड़ौती प्रदान की है. स्वयं आपने यह देखा और
आप इससे खुश भी हुए. तब अकारण दावीद की हत्या कर
आप निर्दोष के लहू के अपराधी क्यों होना चाह रहे हैं?”

6 शाऊल ने योनातन के द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया,
और यह शपथ ली: “जीवित याहवेह की शपथ, उसकी हत्या
न की जाएगी.”

7 योनातन ने तब दावीद को बुलाकर उन्हें सारी बातें बता दीं.
तब योनातन दावीद को शाऊल की उपस्थिति में ले गए और
दावीद उनकी उपस्थिति में पहले के समान रहने लगे.

8 एक बार फिर युद्ध शुरू हो गया. दावीद ने जाकर
फिलिस्तीनियों से युद्ध किया और उन पर ऐसा प्रबल संहार
किया कि उनके पैर उखड़ गए और वे पीठ दिखाकर भाग
खड़े हुए.

9 तब याहवेह द्वारा भेजी एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर उतरी.
वह अपने कमरे में बैठे हुए थे, उनके हाथ में उनका भाला था
और दावीद वाद्य वादन कर रहे थे,

10 शाऊल ने अपने भाले से दावीद को दीवार में नत्थी करना
चाहा, मगर दावीद बड़ी चतुराई से बच निकले. शाऊल का
भाला दीवार में जा धंसा. उस रात दावीद बचकर भाग निकले.

11 रात में ही शाऊल ने दावीद के आवास पर इस आदेश के
साथ पहरेदार चुन लिए, कि प्रातः होते ही दावीद की हत्या कर
दी जाए. उनकी पत्नी मीखल ने उन्हें चेतावनी दी, “यदि आप
रात ही रात में अपनी सुरक्षा का काम न करें, कल आप मरे
हुए पाए जाएंगे.”

12 तब मीखल ने दावीद को एक खिड़की से बाहर उतार दिया
और दावीद अपने प्राण बचाकर भाग गए.

13 उसके बाद मीखल ने एक मूर्ति को बिछौने पर लिटा दिया,
उसके सिर पर बकरे के बालों से बनाया हुआ कंबल सजाकर
और इन सबको बिछौने के वस्त्रों से ढांक दिया.

14 जब शाऊल के सेवक दावीद को बंदी बनाने के उद्देश्य से
वहां आए, मीखल ने उन्हें सूचित किया, “दावीद बीमार हैं.”

15 शाऊल ने उन सेवकों को दोबारा दावीद के घर पर भेजा
कि दावीद को देखें. शाऊल ने उन्हें यह आदेश दिया था,
“दावीद को उसके पलंग सहित मेरे पास ले आओ, कि मैं
उसको खत्म करूं.”

16 सेवक उस पलंग को उठा लाए. उन्होंने पाया कि बिछौने
पर मूर्ति थी तथा सिर के स्थान पर बकरे के बालों का बना
कंबल.

17 शाऊल ने मीखल से पूछा, “तुमने मेरे साथ छल किया है
और क्यों मेरे शत्रु को इस रीति से भाग जाने दिया?” मीखल ने
उत्तर दिया, “उन्होंने मुझे धमकी दी थी, कि यदि मैं उन्हें भागने
न दूं, तो वह मेरी ही हत्या कर देंगे!”

18 जब दावीद वहां से बच निकले, वह सीधे रामाह में शमुएल
के पास गए, और उनके विरुद्ध शाऊल द्वारा किए गए हर एक
काम का उल्लेख प्रस्तुत किया. तब दावीद और शमुएल
जाकर नाइयोथ नामक स्थान पर रहने लगे.

19 जब शाऊल को यह समाचार प्राप्त हुआ, “दावीद रामाह के
चराइयों में हैं”;

20 तब शाऊल ने उन्हें बंदी बनाने के लिए अपने सेवक भेज
दिए. वहां पहुंचकर उन्होंने शमुएल के नेतृत्व में
भविष्यवक्ताओं के वृन्द को भविष्यवाणी के उन्माद में देखा,
तो शाऊल के सेवक परमेश्वर के आत्मा से भर गए और वे भी
भविष्यवाणी करने लगे.

21 जब शाऊल को इसकी सूचना दी गई, उन्होंने अन्य सेवक
वहां भेज दिए, मगर वे भी भविष्यवाणी करने लगे. तब शाऊल
ने तीसरी बार अपने सेवक वहां भेजे, और वे भी भविष्यवाणी
करने लगे.

22 अंततः स्वयं शाऊल रामाह पहुंच गए. जब उन्होंने सेकू
नामक स्थान पर विशाल कुएं के पास पहुंचकर यह पूछताछ
की, “शमुएल और दावीद कहां मिलेंगे?” उन्हें बताया गया,
“रामाह के नाइयोथ में.”

23 जब शाऊल रामाह के नाइयोथ के लिए निकले, परमेश्वर
का आत्मा उस पर भी वेग और बलपूर्वक उतरा और वह
रामाह के नाइयोथ पहुंचने तक भविष्यवाणी करते चला गया.

24 यहां तक कि उसने अपने वस्त्र उतार फैंके और शमुएल के
सामने उन्माद में विवस्त्र होकर दिन और रात भविष्यवाणी
करते रहा. यही कारण है कि वहां यह लोकोक्ति प्रचलित हो
गई: "क्या, शाऊल भी भविष्यवक्ताओं में से एक है?"

1 Samuel 20:1

1 दावीद रामाह के नाइयोथ से भी भागे. उन्होंने योनातन के
पास आकर उनसे पूछा, "क्या किया है मैंने, बताओ? कहां हुई
है मुझसे भूल? क्या अपराध किया है मैंने तुम्हारे पिता का, जो
वह आज मेरे प्राणों के प्यासे हो गए हैं?"

2 "असंभव!" योनातन ने उनसे कहा. "यह हो ही नहीं सकता
कि तुम्हारी हत्या हो! मेरे पिता साधारण असाधारण कोई भी
काम बिना मुझे बताए करते ही नहीं. भला इस विषय को वे
मुझसे क्यों छिपाएंगे? नहीं. यह असंभव है!"

3 दावीद ने शपथ लेकर कहा, "तुम्हारे पिता को तुम्हारे और
मेरे गहरे संबंधों का पूर्ण पता है, 'तब उन्होंने यह सही समझा
है कि इस विषय में तुम्हें कुछ भी जानकारी न हो, अन्यथा तुम
दुःखी विचलित हो जाओगे.' जीवन्त याहवेह तथा तुम्हारी
शपथ, मेरी मृत्यु मुझसे सिर्फ एक पग ही दूर है."

4 योनातन ने इस पर दावीद से पूछा, "तो बताओ, अब मैं
तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं?"

5 तब दावीद ने योनातन को यह सुझाव दिया: "कल नवचंद्र
उत्सव है. रीति के अनुसार मेरा राजा के भोज में उपस्थित
रहना अपेक्षित है. तुम्हें मुझे अवकाश देना होगा कि मैं आज
से तीसरे दिन की शाम तक मैदान में जाकर छिप जाऊं.

6 यदि तुम्हारे पिता को मेरी अनुपस्थिति का पता हो जाए, तो
तुम उनसे कहो, 'दावीद ने एक बहुत ही ज़रूरी काम के लिए
अपने गृहनगर बेथलेहेम जाने की छुट्टी ली है. वहां उसके पूरे
परिवार का बलि चढ़ाने का उत्सव है.'

7 यदि तुम्हारे पिता कहें, 'ठीक है,' कोई बात नहीं, तब इसका
मतलब होगा कि तुम्हारा सेवक सुरक्षित है. मगर यदि यह
सुनते ही वह क्रुद्ध हो जाएं, तो यह समझ लेना कि उन्होंने मेरा
बुरा करने का निश्चय कर लिया है.

8 तब तुम अपने सेवक के प्रति कृपालु रहना, क्योंकि तुमने ही
याहवेह के सामने अपने सेवक के साथ वाचा बांधी है. मगर
यदि तुम्हारी दृष्टि में मैंने कोई अपराध किया है, तुम स्वयं मेरे
प्राण ले लो, क्या आवश्यकता है, इसमें तुम्हारे पिता को
शामिल करने की?"

9 "कभी नहीं!" योनातन ने कहा. "यदि मुझे लेश मात्र भी यह
पता होता कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करने के लिए ठान चुके
हैं, क्या मैं तुम्हें न बताता?"

10 तब दावीद ने योनातन से कहा, "अब बताओ, तुम्हारे पिता
द्वारा दिए गए प्रतिकूल उत्तर के विषय में कौन मुझे सूचित
करेगा?"

11 योनातन ने उनसे कहा, "आओ, बाहर मैदान में चलें." जब
वे दोनों मैदान में पहुंच गए.

12 योनातन ने दावीद से कहा, "याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर
मेरे गवाह हैं. कल या परसों लगभग इसी समय, जब मैं अपने
पिता के सामने यह विषय छोड़ूंगा, यदि दावीद के विषय में
उनकी मंशा अच्छी दिखाई दे, तो क्या में तुम्हें इसकी सूचना
न दूंगा?

13 मगर यदि मेरे पिता का संतोष तुम्हारी बुराई में ही है, तब
याहवेह यह सब, तथा इससे भी अधिक योनातन के साथ करें,
यदि मैं तुम्हें इसके विषय में सूचित न करूं, और तुम्हें इसका
समाचार न दूं, कि तुम यहां से सुरक्षा में विदा हो सको. याहवेह
की उपस्थिति तुम्हारे साथ इसी प्रकार बनी रहे, जिस प्रकार
मेरे पिता के साथ बनी रही थी.

14 जब तक मैं जीवित रहूं, मुझ पर याहवेह का अपार प्रेम
प्रकट करते रहना,

15 मगर यदि मेरी मृत्यु हो जाए, तो मेरे परिवार के प्रति अपने
अपार प्रेम को कभी न भुलाना—हां, उस स्थिति में भी, जब
याहवेह दावीद के सारा शत्रुओं का अस्तित्व धरती पर से मिटा
देंगे."

1 Samuel 20:1

16 तब योनातन ने यह कहते हुए दावीद के परिवार से वाचा
स्थापित की, “याहवेह दावीद के शत्रुओं से प्रतिशोध लें.”

17 एक बार फिर योनातन ने दावीद के साथ शपथ ली, क्योंकि
दावीद उन्हें बहुत ही प्रिय थे. वस्तुतः योनातन को दावीद अपने
ही प्राणों के समान प्रिय थे.

18 योनातन ने उनसे कहा, “कल नवचंद्र उत्सव है और तुम्हारा
आसन रिक्त रहेगा तब सभी के सामने तुम्हारी अनुपस्थिति
स्पष्ट हो जाएगी.

19 परसों शीघ्र ही उस स्थान पर, पत्थरों के ढेर के पीछे छिप
जाना, जहां तुम पहले भी छिपे थे. तुम वहीं ठहरे रहना.

20 मैं इस ढेर के निकट तीन बाण छोड़ूंगा, मानो में किसी लक्ष्य
पर तीर छोड़ रहा हूं.

21 जब मैं लड़के को उन बाणों के पीछे भेजूंगा, मैं कहूंगा,
‘जाकर बाण खोज लाओ.’ और तब यदि मैं लड़के से कहूं, ‘वह
देखो, बाण तुम्हारे इसी ओर हैं,’ ले आओ उन्हें, तब तुम यहां
लौट आना, क्योंकि जीवन्त याहवेह की शपथ, तुम्हारे लिए
कोई जोखिम न होगा और तुम पूर्णतः सुरक्षित हो.

22 मगर यदि मैं लड़के से यह कहूं, ‘सुनो! बाण तुम्हारी दूसरी
ओर हैं,’ तब तुम्हें भागना होगा, क्योंकि याहवेह ने तुम्हें दूर
भेजना चाहा है.

23 जिस विषय पर हम दोनों के बीच चर्चा हुई है, उसका सदा-
सर्वदा के लिए याहवेह हमारे गवाह हैं.”

24 तब दावीद जाकर मैदान में छिप गए. नवचंद्र उत्सव के
मौके पर राजा भोज के लिए तैयार हुए.

25 राजा अपने निर्धारित स्थान पर बैठे थे, जो दीवार के निकट
था. योनातन का स्थान उनके ठीक सामने था. सेनापति अबनेर
शाऊल के निकट बैठे थे. दावीद का आसन खाली था.

26 शाऊल ने इस विषय में कोई प्रश्न नहीं किया; इस विचार में
“उसके साथ अवश्य कुछ हो गया है; वह सांस्कारिक रूप से
आज अशुद्ध होगा. हां, वह अशुद्ध ही होगा.”

27 मगर जब दूसरे दिन भी, नवचंद्र दिवस के दूसरे दिन भी,
दावीद का आसन रिक्त ही था, शाऊल ने योनातन से पूछा,
“क्या कारण है यिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया, न ही
आज भी?”

28 योनातन ने शाऊल को उत्तर दिया, “दावीद ने एक बहुत ही
आवश्यक काम के लिए मुझसे बेथलेहेम जाने की अनुमति ली
है.

29 उसने विनती की, ‘मुझे जाने की अनुमति दो, क्योंकि हम
अपने गृहनगर में बलि अर्पण कर रहे हैं. और मेरे भाई ने
आग्रह किया है कि मैं वहां आ जाऊं, तब यदि मुझ पर तुम्हारी
कृपादृष्टि है, मुझे मेरे भाइयों से भेंटकरने की अनुमति दीजिए.’
इसलिये आज वह इस भोज में शामिल नहीं हो सका है.”

30 यह सुनते ही योनातन पर शाऊल का क्रोध भड़क उठा,
वह कहने लगे, “भ्रष्ट और विद्रोही स्त्री की संतान! क्या मैं
समझ नहीं रहा, कि तूने अपनी लज्जा तथा अपनी मां की लज्जा
के लिए यिशै के पुत्र का पक्ष ले रहा है?

31 यह समझ ले, कि जब तक इस पृथ्वी पर यिशै का पुत्र
जीवित है, तब तक न तो तू, और न तेरा राज्य प्रतिष्ठित हो
सकेगा. अब जा और उसे यहां लेकर आ, क्योंकि उसकी मृत्यु
निश्चित है!”

32 योनातन ने अपने पिता शाऊल से प्रश्न किया, “क्यों है
उसकी मृत्यु निश्चित? क्या किया है उसने ऐसा?”

33 यह सुनते ही शाऊल ने भाला फेंककर योनातन को घात
करना चाहा. अब योनातन को यह निश्चय हो गया, कि उसके
पिता दावीद की हत्या के लिए दृढ़ संकल्प किया हैं.

34 क्रोध से अभिभूत योनातन भोजन छोड़ उठ गए; नवचंद्र के
दूसरे दिन भी उन्होंने भोजन न किया, क्योंकि वह अपने पिता
के व्यवहार से लज्जित तथा दावीद के लिए शोकाकुल थे.

35 प्रातःकाल योनातन एक लड़के को लेकर दावीद से
भेंटकरने मैदान में नियमित स्थान पर पहुंचे.

1 Samuel 21:1

36 उन्होंने उस लड़के को आदेश दिया, “दौड़कर उन बाणों
को खोज लाओ जो मैं छोड़ने पर हूं.” जैसे ही लड़के ने दौड़ना
शुरू किया, योनातन ने एक बाण उसके आगे लक्ष्य करते हुए
छोड़ दिया.

37 जब वह लड़का उस स्थल के निकट पहुंचा, योनातन ने
पुकारते हुए उससे कहा, “क्या वह बाण तुमसे आगे नहीं गिरा
है?”

38 योनातन ने फिर पुकारा, “जल्दी करो! दौड़ो विलंब न करो!”
लड़का बाण उठाकर अपने स्वामी के पास लौट आया.

39 (यह सब क्या हो रहा था, इसका उस लड़के को लेश मात्र
भी पता नहीं था. रहस्य सिर्फ दावीद और योनातन के मध्य
सीमित था.)

40 इसके बाद योनातन ने अपने शस्त्र उस लड़के को इस
आदेश के साथ सौंप दिए, “इन्हें लेकर नगर लौट जाओ.”

41 जब वह लड़का वहां से चला गया, दावीद ने पत्थरों के उस
ढेर के पीछे से उठकर योनातन को नमन किया. तब दोनों एक
दूसरे का चुंबन करते हुए रोते रहे—दावीद अधिक रो रहे थे.

42 योनातन ने दावीद से कहा, “तुम यहां से शांतिपूर्वक विदा
हो जाओ, क्योंकि हमने याहवेह के नाम में यह वाचा बांधी है,
‘मेरे और तुम्हारे बीच तथा मेरे तथा तुम्हारे वंशजों के मध्य
याहवेह, हमेशा के गवाह हैं.’ ” तब दावीद वहां से चले गए और
योनातन अपने घर लौट गए.

1 Samuel 21:1

1 वहां से दावीद नोब नगर में पुरोहित अहीमेलेख से भेंटकरने
पहुंचे, बहुत ही भयभीत अहीमेलेख कांपते हुए दावीद से
भेंटकरने आए और उनसे प्रश्न किया, “आप अकेले! और कोई
नहीं है आपके साथ?”

2 दावीद ने पुरोहित अहीमेलेख को उत्तर दिया, “राजा ने मुझे
एक विशेष काम सौंपा है, और उनका ही आदेश है, ‘जिस
काम के लिए तुम भेजे जा रहे हो, और जो निर्देश तुम्हें दिए जा
रहे हैं, उनके विषय में किसी को कुछ ज्ञात न होने पाए’ मैंने
सैनिकों को विशेष स्थान पर मिलने के आदेश दे दिए हैं.

3 अब बताइए, आपके पास भोज्य क्या-क्या है? मुझे कम से
कम पांच रोटियां चाहिए, या जो कुछ इस समय आपके पास
है.”

4 पुरोहित ने दावीद को उत्तर दिया, “साधारण रोटी तो इस
समय मेरे पास है नहीं—हां, आप वेदी पर समर्पित रोटियां
अवश्य ले सकते हैं, यदि आपके सैनिक ठहराए गए समय से
स्त्री संबंध से दूर रहे हैं.”

5 दावीद ने पुरोहित को आश्वासन दिया, “निःसंदेह! जब कभी
मैं अभियान पर निकलता हूं, स्त्रियां हमसे दूर ही रखी जाती
हैं. साधारण काम के लिए जाते समय भी सैनिकों की देह
पवित्र रखी जाती है, यह तो एक विशेष अभियान है!”

6 तब पुरोहित ने उन्हें समर्पित पवित्र रोटियां दे दीं, क्योंकि वहां
समर्पित रोटियों के अलावा और कोई रोटी थी ही नहीं. इन
रोटियों को याहवेह के सामने से हटा लिया जाता है, जिस
समय गर्म नयी रोटियां वेदी पर भेंट की जाती हैं.

7 उस समय शाऊल का एक सेवक उसी स्थान पर उपस्थित
था, जिसे याहवेह के सामने रोका गया था; वह एदोमवासी था
तथा उसका नाम दोएग था, वह शाऊल के चरवाहों का प्रधान
था.

8 तब दावीद ने अहीमेलेख से प्रश्न किया, “क्या आपके पास
यहां कोई तलवार या बर्छी है? इस समय मेरे पास न तो अपनी
तलवार है और न ही कोई दूसरा हथियार क्योंकि राजा के
निर्देश कुछ ऐसे थे.”

9 पुरोहित ने उत्तर दिया, “एफ़ोद के पीछे कपड़े में लिपटी हुई
फिलिस्तीनी गोलियथ की तलवार रखी हुई है. यह वही
गोलियथ है, जिसका आपने एलाह की घाटी में संहार किया
था. आप चाहें तो इसे ले सकते हैं.” दावीद ने उनसे कहा,
“उससे अच्छा हथियार भला, क्या हो सकता है; यह मुझे दे
दीजिए.”

10 और दावीद वहां से भी चले गए. शाऊल से दूर भागते हुए
वह गाथ के राजा आकीश के यहां जा पहुंचे.

11 आकीश के अधिकारियों में कौतुहल उत्पन्न हो गया था:
“क्या यह दावीद, अपने ही देश का राजा नहीं है? यही तो वह
व्यक्ति है, जिसके विषय में स्त्रियों ने नृत्य करते हुए प्रशंसागीत

1 Samuel 22:1

गाया था: " 'शाऊल ने हज़ार शत्रुओं का संहार किया, मगर दावीद ने दस हज़ारों का'?"

12 उनके इन शब्दों पर गंभीरता पूर्वक विचार करने पर दावीद गाथ के राजा आकीश से बहुत ही डर गए.

13 तब उनकी उपस्थिति में दावीद ने पागल व्यक्ति का नाटक करना शुरू कर दिया, क्योंकि इस समय वह उनके राज्य की सीमा में थे. वह द्वार की लकड़ी खरोंचने लगे और अपनी लार को दाढ़ी पर बह जाने दिया.

14 यह देख आकीश ने अपने सेवकों से कहा, "देख रहे हो कि यह व्यक्ति पागल है! क्यों इसे यहां आने दिया गया है?

15 क्या मेरे पास पागलों की कमी हो गई है, कि मेरे पास इस पागल को ले आए हो? क्या इसे मेरे पास इसलिये ले आए हो कि मैं इसे अपना मेहमान बना लूं?"

1 Samuel 22:1

1 तब दावीद ने गाथ से कूच कर अदुल्लाम की एक गुफा में आसरा लिया. जब उनके भाइयों तथा उनके पिता के परिवार को यह मालूम हुआ, वे सभी उनसे भेंटकरने वहां गए.

2 वे सभी, जो किसी भी प्रकार की उलझन में थे, जो ऋण के बोझ में दबे जा रहे थे, तथा वे, जिनमें किसी कारण असंतोष समाया हुआ था, दावीद के पास इकट्ठा होने लगे, और दावीद ऐसों के लिए नायक सिद्ध हुए. ऐसे होते-होते उनके पास लगभग चार सौ व्यक्ति इकट्ठा हो गए.

3 फिर दावीद वहां से मोआब के मिज़पाह नामक स्थान को चले गए. वहां उन्होंने मोआब के राजा से विनती की, "जब तक परमेश्वर मुझ पर अपनी इच्छा प्रकट न करें, कृपया मेरे माता-पिता को यहां रहने की अनुमति दे दीजिए!"

4 तब दावीद ने उन्हें मोआब के राजा के यहां ठहरा दिया, और जब तक दावीद गढ़ में निवास करते रहे वे वहां उनके साथ रहे.

5 तब भविष्यद्वक्ता गाद ने दावीद से कहा, "अब गढ़ में निवास न करो. बल्कि अब तुम यहूदिया प्रदेश में चले जाओ." तब दावीद हेरेथ के वन में जाकर रहने लगे.

6 मगर शाऊल को इस बात का पता चल ही गया कि दावीद और उनके साथी कहां हैं. उस दिन शाऊल गिबियाह नामक स्थान पर एक टीले पर झाड़ वृक्ष के नीचे बैठे हुए थे. उनके हाथ में बर्छी थी और उनके आस-पास उनके अधिकारी भी थे.

7 शाऊल ने अपने आस-पास के अधिकारियों से कहा, "बिन्यामिन के लोगों! ध्यान से सुनो, क्या यिशै का पुत्र तुम्हें खेत और अंगूर के बगीचे देगा? क्या वह तुम्हें हज़ार सैनिकों पर और सौ-सौ सैनिकों पर अधिकारी चुनेगा?

8 तुम सबने मेरे विरुद्ध एका क्यों किया है? कोई भी मुझे सूचना नहीं देता, जब मेरा अपना पुत्र इस यिशै के पुत्र के साथ वाचा बांध लेता है. तुममें से किसी को भी मुझ पर तरस नहीं आता. किसी ने मुझे सूचना नहीं दी कि मेरे अपने पुत्र ने मेरे ही सेवक को मेरे ही विरुद्ध घात लगाकर बैठने का आदेश दे रखा है, जैसा कि आज यहां हो रहा है."

9 मगर एदोमवासी दोएग ने, जो इस समय शाऊल के अधिकारियों के साथ ही था, उन्हें उत्तर दिया, "मैंने यिशै के इस पुत्र को नोब नगर में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेख से भेंटकरते देखा है.

10 अहीमेलेख ने दावीद के लिए याहवेह से पूछताछ की, उसे भोजन दिया, साथ ही उस फिलिस्तीनी गोलियथ की तलवार भी."

11 तब राजा ने अहीतूब के पुत्र, पुरोहित अहीमेलेख को बुलाने का आदेश दिया; न केवल उन्हें ही, बल्कि नोब नगर में उनके पिता के परिवार के सारे पुरोहितों को भी. वे सभी राजा की उपस्थिति में आ गए.

12 तब उन्हें शाऊल ने कहा, "अहीतूब के पुत्र, ध्यान से सुनो." अहीमेलेख ने उत्तर दिया, "आज्ञा दीजिए, मेरे स्वामी!"

13 शाऊल ने उनसे कहा, "क्या कारण है कि तुमने और यिशै के पुत्र ने मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचा है? तुमने उसे भोजन दिया, उसे तलवार दी, और उसके भले के लिए

1 Samuel 23:1

परमेश्वर से प्रार्थना भी की. अब वह मेरा विरोधी हो गया है, और आज स्थिति यह है कि वह मेरे लिए घात लगाए बैठा है?”

14 अहीमेलेख ने राजा को उत्तर में कहा, “महाराज, आप ही बताइए आपके सारे सेवकों में दावीद के तुल्य विश्वासयोग्य और कौन है? वह राजा के दामाद हैं, वह आपके अंगरक्षकों के प्रधान हैं, तथा इन सबके अलावा वह आपके परिवार में बहुत ही सम्माननीय हैं!

15 क्या आज पहला मौका है, जो मैंने उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की है? जी नहीं! महाराज, न तो मुझ पर और न मेरे पिता के परिवार पर कोई ऐसे आरोप लगाएं. क्योंकि आपके सेवक को इन विषयों का कोई पता नहीं है, न पूरी तरह और न ही थोड़ा भी.”

16 मगर राजा ने उन्हें उत्तर दिया, “अहीमेलेख, आपके लिए तथा आपके पूरे परिवार के लिए मृत्यु दंड तय है.”

17 तब राजा ने अपने पास खड़े रक्षकों को आदेश दिया: “आगे बढ़कर याहवेह के इन पुरोहितों को खत्म करो, क्योंकि ये सभी दावीद ही के सहयोगी हैं. इन्हें यह मालूम था कि वह मुझसे बचकर भाग रहा है, फिर भी इन्होंने मुझे इसकी सूचना नहीं दी.” मगर राजा के अंगरक्षक याहवेह के पुरोहितों पर प्रहार करने में हिचकते रहे.

18 यह देख राजा ने दोएग को आदेश दिया, “चलो, आगे आओ और तुम करो इन सबका वध.” तब एदोमी दोएग आगे बढ़ा और उस दिन उसने पुरोहितों के पवित्र वस्त्र धारण किए हुए पचासी व्यक्तियों का वध कर दिया.

19 तब उसने पुरोहितों के नगर नोब जाकर वहां; स्त्रियों, पुरुषों, बालकों, शिशुओं, बैलों, गधों तथा भेड़ों को, सभी को, तलवार से घात कर दिया.

20 मगर अहीतूब के पुत्र अहीमेलेख के पुत्रों में से एक बच निकला और दावीद के पास जा पहुंचा. उसका नाम अबीयाथर था.

21 अबीयाथर ने दावीद को सूचना दी कि शाऊल ने याहवेह के पुरोहितों का वध करवा दिया है.

22 तब दावीद ने अबीयाथर से कहा, “उस दिन, जब मैंने एदोमी दोएग को वहां देखा, मुझे यह लग रहा था कि वह अवश्य ही जाकर शाऊल को उसकी सूचना दे देगा. तुम्हारे पिता के परिवार की मृत्यु का दोषी में ही हूं.

23 अब तुम मेरे ही साथ रहो. अब तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है. जो कोई मेरे प्राणों का प्यासा है, वही तुम्हारे प्राणों का भी प्यासा है. मेरे साथ तुम सुरक्षित हो.”

1 Samuel 23:1

1 दावीद को सूचना दी गई, “फिलिस्तीनियों ने काइलाह नगर पर हमला कर दिया है, और वे वहां के खलिहानों को लूट रहे हैं.”

2 तब दावीद ने याहवेह से पूछा, “क्या में जाकर इन फिलिस्तीनियों से युद्ध करूं?” याहवेह ने दावीद को उत्तर दिया, “जाओ, फिलिस्तीनियों का संहार करो, और काइलाह नगर को मुक्त करो.”

3 मगर दावीद के साथियों ने उनसे कहा, “विचार कीजिए, यहां यहूदिया में ही रहते हुए हम पर उनका आतंक छाया हुआ है. काइलाह पहुंचकर हमारी स्थिति क्या होगी, जब हम फिलिस्तीनी सेना के आमने-सामने होंगे!”

4 तब दावीद ने पुनः याहवेह से पूछा, और उन्हें याहवेह की ओर से यह उत्तर प्राप्त हुआ, “जाओ, फिलिस्तीनियों पर हमला करो क्योंकि मैं फिलिस्तीनियों को तुम्हारे अधीन कर दूंगा.”

5 इसलिये दावीद और उनके साथी काइलाह गए और फिलिस्तीनियों से युद्ध किया, उनके पशु उनसे छीनकर उन्हें पूरी तरह हरा दिया. इस प्रकार दावीद ने काइलाह निवासियों को सुरक्षा प्रदान की.

6 (जब अहीमेलेख के पुत्र अबीयाथर भागकर दावीद के पास गए, वह अपने साथ पवित्र परिधान एफ़ोद भी ले गए थे.)

7 जब शाऊल को सूचित किया गया कि दावीद काइलाह आए हुए हैं, शाऊल ने विचार किया, “अब तो परमेश्वर ने दावीद को मेरे वश में कर दिया है, क्योंकि अब वह ऐसे नगर में जा छिपा है, जो दीवारों से घिरा हुआ है और जिसमें प्रवेश द्वार भी है.”

1 Samuel 23:1

8 तब शाऊल ने अपनी संपूर्ण सेना का आह्वान किया, कि वे
काइलाह नगर को जाकर दावीद और उनके साथियों को बंदी
बना लें.

9 दावीद यह जानते थे कि शाऊल उनके बुरे की युक्ति कर
रहे हैं. यह जानकर दावीद ने पुरोहित अबीयाथर से विनती
की, "एफ़ोद लेकर यहां आइए!"

10 तब दावीद ने यह प्रार्थना की, "याहवेह इस्राएल के परमेश्वर,
आपके सेवक को यह निश्चित समाचार मिला है कि शाऊल
मेरे कारण संपूर्ण काइलाह नगर को नष्ट करने के लक्ष्य से यहां
आने की योजना बना रहे हैं.

11 मुझे बताइए, क्या, नगर के पुरनिए मुझे उनके हाथों में सौंप
देंगे? क्या हमें प्राप्त सूचना के अनुसार शाऊल यहां आएंगे?
याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर, कृपा करें और अपने सेवक को
इस विषय में सूचित करें." याहवेह ने उत्तर दिया, "शाऊल
अवश्य आएगा."

12 तब दावीद ने उनसे पूछा, "क्या, काइलाह के नगर के
पुरनिए मुझे और मेरे साथियों को शाऊल के हाथों में सौंप
देंगे?" याहवेह ने उत्तर दिया, "वे तुम्हें उनके हाथों में सौंप देंगे."

13 तब दावीद और उनके साथी, जो संख्या में लगभग छः सौ
थे, काइलाह नगर छोड़ चले गए, और वनों में स्थान बदलते
हुए घूमते रहे. जब शाऊल को यह सूचना मिली कि दावीद
काइलाह नगर छोड़ चुके हैं, उन्होंने अपना अभियान छोड़
दिया.

14 दावीद ने निर्जन प्रदेश के गढ़ों में रहना शुरू कर दिया, जो
ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाके में थे. दावीद की खोज करते रहना
शाऊल का नियम हो गया था, मगर परमेश्वर ने दावीद को
उनके हाथों में पड़ने नहीं दिया.

15 जब दावीद होरशा क्षेत्र में ज़ीफ़ के वनों में छिपे हुए थे, उन्हें
यह पता हो गया था कि शाऊल उनके प्राणों की खोज में
निकल पड़े हैं.

16 शाऊल के पुत्र योनातन होरशा में दावीद से भेंटकरने आए
और उन्हें परमेश्वर में मजबूत किया.

17 उन्होंने दावीद से कहा, "डरना नहीं, मेरे पिता तुम तक
पहुंच नहीं सकेंगे. इस्राएल के होनेवाले शासक तुम हो और मैं
तुम्हारा सहायक रहूंगा. वस्तुतः मेरे पिता को इस बात की पूरी
पता है."

18 उन्होंने याहवेह के सामने परस्पर वाचा बांधी. दावीद होरशा
में ही रहे, मगर योनातन अपने घर लौट गए.

19 कुछ ज़ीफ़ निवासियों ने गिबियाह में शाऊल को यह सूचना
दी, "दावीद हमारे क्षेत्र में होरशा के गढ़ों में जेशिमोन के
दक्षिण में, हकीलाह की पहाड़ियों में छिपे हुए हैं.

20 तब महाराज, आप जब चाहें यहां आ जाएं, और अपने हृदय
की इच्छा पूरी करें. हम अपनी ओर से दावीद को महाराज के
हाथों में सौंपने की पूरी कोशिश करेंगे."

21 शाऊल ने उत्तर दिया, "आप लोगों ने मुझ पर जो दया
दिखाई है, उसके लिए याहवेह आपको आशीष प्रदान करें.

22 जाइए और जाकर इस तथ्य की पुष्टि कर लीजिए: ठीक-
ठीक यह ज्ञात कीजिए कि वह कहां छिपा हुआ है और किसने
उसे वहां देखा है; क्योंकि मुझे प्राप्त सूचना के अनुसार वह
बहुत ही चालाक व्यक्ति है.

23 जाकर उन सारे छिपने योग्य स्थानों को देखो, उन्हें पहचान
लो, जहां वह दुबका रहता है, तब लौटकर आओ और मुझे
निश्चित सूचना दो. तभी मैं तुम्हारे साथ चलूंगा; यदि वह वास्तव
में इसी क्षेत्र में है, तो मैं उसे यहूदिया के कुलों से ढूंढ़
निकालूंगा."

24 तब वे शाऊल के पूर्व ज़ीफ़ नगर पहुंच गए. इस समय
दावीद और उनके साथी जेशिमोन के दक्षिण के अराबाह में
माओन की मरुभूमि में थे.

25 शाऊल और उनके साथी दावीद की खोज में निकल पड़े.
दावीद को किसी ने इसकी सूचना दे दी, तब दावीद माओन
की मरुभूमि में पर्वत की चट्टानों में जा छिपे. शाऊल को इस
विषय में भी सूचना दे दी गई. वह दावीद का पीछा करने
निकल पड़े.

26 शाऊल और उनके साथी पर्वत की एक ओर चल रहे थे,
दावीद और उनके साथी पर्वत की दूसरी ओर. दोनों के मध्य
था पर्वत. दावीद की कोशिश थी कि वह शीघ्र, अति शीघ्र,
शाऊल के साथियों से दूर निकल जाएं, क्योंकि वे उनके
निकट आते जा रहे थे.

27 उसी समय एक संदेशवाहक ने आकर शाऊल को सूचना
दी, "कृपया तुरंत लौट आएं! फिलिस्तीनियों ने हमारे देश पर
हमला कर दिया है."

28 तब शाऊल ने दावीद का पीछा करना छोड़ फिलिस्तीनियों
से युद्ध करने चले गए. इस घटना के कारण उस स्थान का नाम
ही सेला हम्माहलेकोथ अर्थात् विभाजक चट्टान पड़ गया.

29 दावीद ने वह क्षेत्र छोड़ दिया, और जाकर एन-गेदी के गढ़ों
में रहने लगे.

1 Samuel 24:1

1 जब शाऊल फिलिस्तीनियों से युद्ध करने के बाद लौटे, उन्हें
सूचना दी गई, "दावीद एन-गेदी के निकटवर्ती मरुभूमि में
छिपे हुए हैं."

2 शाऊल ने इस्राएली सेना में से तीन हज़ार सर्वोत्तम सैनिक
लेकर पहाड़ी बकरों की चट्टानों के पूर्व में दावीद की खोज
करनी शुरू कर दी.

3 खोज करते हुए वे सब मार्ग के किनारे स्थित उन भेड़ के
बाड़ों के निकट पहुंचे, जिनके निकट एक कंदरा थी. शाऊल
उस गुफा के भीतर शौच के लिए चले गए. दावीद और उनके
साथी गुफा के भीतरी गुप्त स्थानों में छिपे बैठे थे.

4 दावीद के साथियों ने उससे कहा, "आज ही वह दिन है,
जिसके विषय में याहवेह ने आपसे कहा था, 'मैं तुम्हारे शत्रु को
तुम्हारे अधीन कर दूंगा और तुम उसके साथ वह सब कर
सकोगे, जो तुम्हें सही लगेगा.' " यह सुन दावीद उठे और
चुपचाप जाकर शाऊल के बाहरी वस्त्र की किनारी काट ली.

5 मगर कुछ समय बाद दावीद के मन के दोष भाव ने उन्हें
व्याकुल कर दिया,

6 और उन्होंने अपने साथियों से कहा, "याहवेह यह कभी न
होने दें कि मैं याहवेह के अभिषिक्त, मेरे स्वामी पर हाथ उठाने
का दुस्साहस करूं, यह जानते हुए भी कि वह याहवेह द्वारा
अभिषिक्त हैं."

7 इन शब्दों के द्वारा दावीद ने अपने साथियों को शाऊल पर
वार करने से रोक दिया. तब शाऊल उठे, गुफा से बाहर
निकलकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ गए.

8 तब दावीद भी गुफा से बाहर आ गए. वहां से उन्होंने शाऊल
को पुकारा, "महाराज, मेरे स्वामी!" दावीद का स्वर सुनकर
शाऊल ने मुड़कर पीछे देखा. दावीद ने घुटने टेककर भूमि
तक सिर झुकाकर उनका अभिवंदन किया,

9 और उन्होंने शाऊल को कहा, "महाराज, लोगों की बात का
विश्वास क्यों करते हैं, जब वे कहते हैं, 'दावीद आपके बुरा की
युक्ति कर रहा है'?

10 आप स्वयं यह देखिए, आज गुफा में याहवेह ने आपको मेरे
हाथों में सौंप दिया था. मेरे कुछ साथी मुझसे कह भी रहे थे कि
मैं आपकी हत्या कर दूं, मगर मैंने यह नहीं किया; मैंने विचार
किया, 'मैं अपने स्वामी पर कभी हाथ न उठाऊंगा, क्योंकि
उनका अभिषेक याहवेह ने किया है.'

11 यह देखिए, मेरे पिताजी, मेरे हाथ में आपके कपड़े का यह
छोर है. मैंने इसे तो क़तर लिया है, मगर मैंने आप पर वार नहीं
किया. तब आपका यह समझ लेना सही होगा कि मैं न तो
किसी बुरे की योजना गढ़ रहा हूं, और न ही किसी विद्रोह की.
आपके विरुद्ध मैं कोई पाप नहीं कर रहा हूं, फिर भी आप मेरे
रास्ते में आ रहे हैं.

12 स्वयं याहवेह आपके और मेरे बीच निर्णय करें. यह संभव
है कि वही आपसे उन कामों के लिए बदला लें, जो आपने मेरे
विरुद्ध किए हैं, मगर स्वयं मैं आपकी कोई हानि न करूंगा.

13 जैसा पुरानी कहावत है, 'बुराई करनेवालों से बुरे काम आते
हैं!' तो मेरा हाथ आपको नहीं छुएगा.

14 "आप ही विचार कीजिए आप कर क्या रहे हैं? इस्राएल का
राजा एक मरे हुए कुत्ते का पीछा करने में जुटा है, कि उसकी
हत्या कर दे? एक कुत्ता, एक पिस्सू?

1 Samuel 25:1

15 तब अब निर्णय याहवेह के द्वारा किया जाए. वही आपके
और मेरी स्थिति का आंकलन करें. वही मुझे आपसे सुरक्षा
प्रदान करें.”

16 जब दावीद शाऊल के सामने अपनी यह बातें समाप्त कर
चुके, शाऊल ने प्रश्न किया, “क्या यह तुम्हारा स्वर है, मेरे पुत्र,
दावीद?” और तब शाऊल ऊंची आवाज में रोने लगे.

17 उन्होंने दावीद से कहा, “तुम मुझसे अधिक धर्मी व्यक्ति हो,
क्योंकि तुमने मेरे दुराचार का प्रतिफल सदाचार में दिया,
जबकि मैंने सदैव तुम्हारा बुरा ही करना चाहा है.

18 आज तो तुमने यह घोषणा ही कर दी है कि तुमने सदैव ही
मेरे हित की ही कामना की है. याहवेह ने मुझे तुम्हारे हाथों में
सौंप ही दिया था, फिर भी तुमने मेरी हत्या नहीं की.

19 क्या कभी ऐसा सुना गया है कि कोई व्यक्ति अपने हाथों में
आए शत्रु को सुरक्षित छोड़ दे? आज तुमने मेरे साथ जो
उदारतापूर्ण अभिवृत्ति प्रदर्शित की है, उसके लिए याहवेह
तुम्हें भला करें.

20 अब सुनो: मुझे यह पता हो गया है कि निश्चित राजा तुम ही
बनोगे, और इस्राएल का राज्य तुम्हारे शासन में प्रतिष्ठित हो
जाएगा.

21 तब यहां याहवेह के सामने शपथ लो, कि मेरी मृत्यु के बाद
तुम मेरे वंशजों को नहीं मिटाओगे और न ही मेरे नाम को और
न मेरे पिता के परिवार की प्रतिष्ठा नष्ट करोगे.”

22 दावीद ने शाऊल से इसकी शपथ खाई. इसके बाद शाऊल
अपने घर लौट गए और दावीद और उनके साथी अपने गढ़
में.

1 Samuel 25:1

1 शमुएल की मृत्यु हो गई. सारा इस्राएलियों ने एकत्र होकर
उनके लिए विलाप किया; उन्हें उनके गृहनगर रामाह में गाड़
दिया. इसके बाद दावीद पारान के निर्जन प्रदेश में जाकर
रहने लगे.

2 कालेब के कुल का एक व्यक्ति था, वह माओन नगर का
निवासी था. कर्मेल नगर के निकट वह एक भूखण्ड का स्वामी
था. वह बहुत ही धनी व्यक्ति था. उसके तीन हज़ार भेड़ें, तथा
एक हज़ार बकरियां थी.

3 उसका नाम नाबाल था और उसकी अबीगइल नामक पत्नी
थी, जो बहुत ही रूपवती एवं विदुषी थी. मगर वह स्वयं बहुत
ही नीच, क्रूर तथा क्रुद्ध प्रकृति का था.

4 इस समय दावीद निर्जन प्रदेश में थे, और उन्हें मालूम हुआ
कि नाबाल भेड़ों का ऊन क़तर रहा है.

5 तब दावीद ने वहां दस नवयुवक भेज दिए और उन्हें यह
आदेश दिया, “नाबाल से भेंटकरने कर्मेल नगर चले जाओ
और उसे मेरी ओर से शुभकामनाएं तथा अभिवंदन प्रस्तुत
करना.

6 तब तुम उससे कहना: ‘आप पर तथा आपके परिवार पर
शांति स्थिर रहें! आप चिरायु हों! आपकी सारी संपत्ति पर
समृद्धि बनी रहे!

7 “ ‘मुझे यह समाचार प्राप्त हुआ है कि आपकी भेड़ों का ऊन
क़तरा जा रहा है. जब आपके चरवाहे हमारे साथ थे, सारे
समय जब वे कर्मेल में थे, हमने न तो उन्हें अपमानित किया,
न उन्हें कोई हानि पहुंचाई है.

8 आप स्वयं अपने सेवकों से इस विषय में पूछ सकते हैं.
आपकी कृपा हम पर बनी रहे. हम आपकी सेवा में उत्सव के
मौके पर आए हैं. कृपया अपने सेवकों को, तथा अपने पुत्र
समान सेवक दावीद को, जो कुछ आपको सही लगे, दे
दीजिए.’ ”

9 दावीद के नवयुवक साथी वहां गए, और दावीद की ओर से
नाबाल को यह संदेश दे दिया, और वे नाबाल के प्रत्युत्तर की
प्रतीक्षा करने लगे.

10 “कौन है यह दावीद?” नाबाल ने दावीद के साथियों को
उत्तर दिया, “और कौन है यह यिशै का पुत्र? कैसा समय आ
गया है, जो सारे दास अपने स्वामियों को छोड़-छोड़कर भाग
रहे हैं.

1 Samuel 25:1

11 अब क्या मेरे लिए यही शेष रह गया है कि मैं अपने सेवकों
के हिस्से का भोजन लेकर इन लोगों को दे दूं? मुझे तो यही
समझ नहीं आ रहा कि ये लोग कौन हैं, और कहां से आए हैं?"

12 तब दावीद के साथी लौट गए. लौटकर उन्होंने दावीद को
यह सब सुना दिया.

13 दावीद ने अपने साथियों को आदेश दिया, "हर एक व्यक्ति
अपनी तलवार उठा ले!" तब सबने अपनी तलवार धारण कर
ली. दावीद ने भी अपनी तलवार धारण कर ली. ये सब लगभग
चार सौ व्यक्ति थे, जो इस अभियान में दावीद के साथ थे, शेष
लगभग दो सौ उनके विभिन्न उपकरणों तथा आवश्यक
सामग्री की रक्षा के लिए ठहर गए.

14 इसी बीच नाबाल के एक सेवक ने नाबाल की पत्नी
अबीगइल को संपूर्ण घटना का वृत्तांत सुना दिया, "दावीद ने
हमारे स्वामी के पास मरुभूमि से अपने प्रतिनिधि भेजे थे, कि
वे उन्हें अपनी शुभकामनाएं प्रस्तुत करें, मगर स्वामी ने उन्हें
घोर अपमान करके लौटा दिया है.

15 ये सभी व्यक्ति हमारे साथ बहुत ही सौहार्दपूर्ण रीति से
व्यवहार करते रहे थे. उन्होंने न कभी हमारा अपमान किया,
न कभी हमारी कोई हानि ही की. जब हम मैदानों में भेड़ें
चराया करते थे हमारी कोई भी भेड़ नहीं खोई. हम सदैव साथ
साथ रहे.

16 दिन और रात संपूर्ण समय वे मानो हमारे लिए सुरक्षा की
दीवार बने रहते थे, जब हम उनके साथ मिलकर भेड़ें चराया
करते थे.

17 अब आप स्थिति की गंभीरता को पहचान लीजिए और
विचार कीजिए, कि अब आपका क्या करना सही होगा,
क्योंकि अब हमारे स्वामी और उनके संपूर्ण परिवार के लिए
बुरा योजित हो चुका है. वह ऐसा दुष्ट व्यक्ति हैं, कि कोई उन्हें
सुझाव भी नहीं दे सकता."

18 यह सुनते ही अबीगइल ने तत्काल दो सौ रोटियां, दो छागलें
द्राक्षारस, पांच भेड़ें, जो पकाई जा चुकी थी, पांच माप भुना
हुआ अन्न, किशमिश के सौ पिंड तथा दो सौ पिंड अंजीरों को
लेकर गधों पर लाद दिया.

19 "उसने अपने सेवकों को आदेश दिया, मेरे आगे-आगे चलो,
मैं तुम्हारे पीछे आऊंगी." मगर स्वयं उसने इसकी सूचना
अपने पति नाबाल को नहीं दी.

20 जब वह अपने गधे पर बैठी हुई पर्वत के उस गुप्त मार्ग पर
थी, उसने देखा कि दावीद तथा उनके साथी उसी की ओर बढ़े
चले आ रहे थे, और वे आमने-सामने आ गए.

21 इस समय दावीद विचार कर ही रहे थे, "निर्जन प्रदेश में
हमने व्यर्थ ही इस व्यक्ति की संपत्ति की ऐसी रक्षा की, कि
उसकी कुछ भी हानि नहीं हुई, मगर उसने इस उपकार का
प्रतिफल हमें इस बुराई से दिया है.

22 यदि प्रातःकाल तक उसके संबंधियों में से एक भी नर
जीवित छोड़ दूं, तो परमेश्वर दावीद के शत्रुओं से ऐसा ही, एवं
इससे भी बढ़कर करें!"

23 दावीद को पहचानते ही अबीगइल तत्काल अपने गधे से
उतर पड़ीं, उनके सामने मुख के बल गिर दंडवत हुई.

24 तब उन्होंने दावीद के चरणों पर गिरकर उनसे कहा, "दोष
सिर्फ मेरा ही है, मेरे स्वामी, अपनी सेविका को बोलने की
अनुमति दें, तथा आप मेरा पक्ष सुन लें.

25 मेरे स्वामी, कृपया आप इस निकम्मे व्यक्ति नाबाल के
कड़वे वचनों पर ध्यान न दें. उसकी प्रकृति ठीक उसके नाम
के ही अनुरूप है. उसका नाम है नाबाल और मूर्खता उसमें
सचमुच व्याप्त है. खेद है कि उस समय मैं वहां न थी, जब
आपके साथी वहां आए हुए थे.

26 और अब मेरे स्वामी, याहवेह की शपथ, आप चिरायु हों,
क्योंकि याहवेह ने ही आपको रक्तपात के दोष से बचा लिया
है, और आपको यह काम अपने हाथों से करने से रोक दिया
है. अब मेरी कामना है कि आपके शत्रुओं की, जो आपकी
हानि करने पर उतारू हैं, उनकी स्थिति वैसी ही हो, जैसी
नाबाल की.

27 अब आपकी सेविका द्वारा लाई गई इस भेंट को हे स्वामी,
आप स्वीकार करें कि इन्हें अपने साथियों में बाट दें.

1 Samuel 26:1

28 “कृपया अपनी सेविका की इस भूल को क्षमा कर दें. याहवेह आपके परिवार को प्रतिष्ठित करेंगे, क्योंकि मेरे स्वामी याहवेह के प्रतिनिधि होकर युद्ध कर रहे हैं. अपने संपूर्ण जीवन में अपने किसी का बुरा नहीं चाहा है.

29 यदि कोई आपके प्राण लेने के उद्देश्य से आपका पीछा करना शुरू कर दे, तब मेरे स्वामी का जीवन याहवेह, आपके परमेश्वर की सुरक्षा में जीवितों की झोली में संचित कर लिया जाएगा, मगर आपके शत्रुओं के जीवन को इस प्रकार दूर प्रक्षेपित कर देंगे, जैसे गोफन के द्वारा पत्थर फेंक दिया जाता है.

30 याहवेह मेरे स्वामी के लिए वह सब करेंगे, जिसकी उन्होंने आपसे प्रतिज्ञा की है. वह आपको इस्राएल के शासक बनाएंगे,

31 अब आपकी अंतरात्मा निर्दोष के लहू बहाने के दोष से न भरेगी, और न आपको इस विषय में कोई खेद होगा कि आपने स्वयं बदला ले लिया. मेरे स्वामी, जब याहवेह आपको उन्नत करें, कृपया अपनी सेविका को अवश्य याद रखियेगा.”

32 अबीगइल से ये उद्गार सुनकर दावीद ने उन्हें संबोधित कर कहा, “याहवेह, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति हो, जिन्होंने आपको मुझसे भेंटकरने भेज दिया है.

33 सराहनीय है आपका उत्तम अनुमान! आज मुझे रक्तपात से रोक देने के कारण आप स्वयं सराहना की पात्र हैं. आपने मुझे आज स्वयं बदला लेने की भूल से भी बचा लिया है.

34 याहवेह, इस्राएल के जीवन्त परमेश्वर की शपथ, जिन्होंने मुझे आपका बुरा करने से रोक दिया है, यदि आप आज इतने शीघ्र मुझसे भेंटकरने न आयी होती, सबेरे, दिन का प्रकाश होते-होते, नाबाल परिवार का एक भी नर जीवित न रहता.”

35 तब दावीद ने उसके हाथ से उसके द्वारा लाई गई भेंटें स्वीकार की और उसे इस आश्वासन के साथ विदा किया, “शांति से अपने घर लौट जाओ, मैंने तुम्हारी बात मान ली और तुम्हारी विनती स्वीकार कर लिया.”

36 जब अबीगइल घर पहुंची, नाबाल ने अपने आवास पर एक भव्य भोज आयोजित किया हुआ था. ऐसा भोज, मानो वह राजा हो. उस समय वह बहुत ही उत्तेजित था तथा बहुत ही नशे में था. तब अबीगइल ने सुबह तक कोई बात न की.

37 सुबह, जब नाबाल से शराब का नशा उतर चुका था, उसकी पत्नी ने उसे इस विषय से संबंधित सारा विवरण सुना दिया. यह सुनते ही नाबाल को पक्षाघात हो गया, और वह सुन्न रह गया.

38 लगभग दस दिन बाद याहवेह ने नाबाल पर ऐसा प्रहार किया कि उसकी मृत्यु हो गई.

39 जब दावीद ने नाबाल की मृत्यु का समाचार सुना, वह कह उठे, “धन्य हैं याहवेह, जिन्होंने नाबाल द्वारा किए गए मेरे अपमान का बदला ले लिया है. याहवेह अपने सेवक को बुरा करने से रोके रहे तथा नाबाल को उसके दुराचार का प्रतिफल दे दिया.” दावीद ने संदेशवाहकों द्वारा अबीगइल के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा.

40 दावीद के संदेशवाहकों ने कर्मेल नगर जाकर अबीगइल को कहा: “हमें दावीद ने आपके पास भेजा है कि हम आपको अपने साथ उनके पास ले जाएं, कि वे आपसे विवाह कर सकें.”

41 वह तत्काल उठी, भूमि पर दंडवत होकर उनसे कहा, “आपकी सेविका मेरे स्वामी के सेवकों के चरण धोने के लिए तत्पर दासी हूं.”

42 अबीगइल विलंब न करते उठकर तैयार हो गई. वह अपने गधे पर बैठी और दावीद के संदेशवाहकों के साथ चली गई. उसके साथ उसकी पांच सेविकाएं थी. वहां वह दावीद की पत्नी हो गई.

43 दावीद ने येज्रील नगरवासी अहीनोअम से भी विवाह किया. ये दोनों ही उनकी पत्नी बन गईं.

44 इस समय तक शाऊल ने अपनी बेटी मीखल, जो वस्तुतः दावीद की पत्नी थी, लायीश के पुत्र पालतिएल को, जो गल्लीम नगर का वासी था, सौंप दी थी.

1 Samuel 26:1

1 यह वह मौका था जब ज़ीफ़ नगर के लोगों ने जाकर शाऊल को सूचित किया, “दावीद जेशिमोन के पूर्व में हकीलाह पहाड़ियों में छिपे हुए हैं.”

1 Samuel 26:1

2 तब शाऊल तैयार होकर इस्राएल के तीन हज़ार सर्वोत्तम
योद्धाओं को लेकर दावीद की खोज करते हुए ज़ीफ़ की
मरुभूमि में जा पहुंचे.

3 शाऊल ने अपने शिविर जेशिमोन के पूर्व में हकीलाह की
पहाड़ी के मार्ग के निकट खड़े किए. मगर दावीद निर्जन प्रदेश
में ही रहे. जब दावीद को यह मालूम हुआ कि शाऊल उन्हें
खोजते हुए यहां तक आ पहुंचे हैं,

4 उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए अपने दूत वहां भेज दिए.

5 बाद में दावीद खुद गए और उस स्थान की जांच पड़ताल
की, जहां शाऊल की सेना ने पड़ाव डाला हुआ था. उन्होंने वह
स्थल देखा, जहां शाऊल और सेनापति, नेर के पुत्र अबनेर,
सोए हुए थे. शाऊल विशेष सुरक्षा के स्थल में सोए थे और सारी
सेना उन्हें घेरे हुए सोई हुई थी.

6 दावीद ने हित्ती अहीमेलेख तथा ज़ेरुइयाह के पुत्र, योआब के
भाई अबीशाई को संबोधित करते हुए प्रश्न किया, "कौन है
तत्पर मेरे साथ शाऊल के शिविर में सेंध लगाने के लिए?" "मैं
चलूंगा आपके साथ." अबीशाई ने उत्तर दिया.

7 उस रात दावीद तथा अबीशाई सेना के पड़ाव में चले गए.
वहां शाऊल विशेष सुरक्षा के स्थल में सोए हुए थे. उनका
भाला उनके सिर के निकट भूमि में गड़ा हुआ था, तथा अबनेर
तथा सारी सेना उन्हें घेरे हुए सो रही थी.

8 यह देख अबीशाई ने दावीद से कहा, "आज तो परमेश्वर ने
आपके शत्रु को आपके हाथों में सौंप दिया है. मैं अपने भाले
के एक ही प्रहार से उन्हें भूमि में नत्थी कर देता हूं; मुझे दूसरा
प्रहार करने की आवश्यकता तक न होगी."

9 मगर दावीद ने अबीशाई को उत्तर दिया, "उन्हें मत मारो!
क्या, याहवेह के अभिषिक्त पर हाथ उठाकर कोई निर्दोष रह
सकता है?"

10 दावीद ने आगे कहा, "जीवन्त याहवेह की शपथ, स्वयं
याहवेह ही उनका संहार करेंगे, या उनकी मृत्यु उनके लिए
निर्धारित समय पर होगी, या यह युद्ध करने जाएंगे और वहां
मारे जाएंगे.

11 याहवेह ऐसा कभी न होने दें कि मैं याहवेह के अभिषिक्त
पर हाथ उठाऊं, अब ऐसा करो: उनके सिर के निकट गाड़
हुए भाले को उठाओ और उनके उस जल पात्र को भी, और
चलो हम लौट चलें."

12 दावीद ने वह भाला तथा सिर के निकट रखे जल पात्र को
उठाया और वे दोनों वहां से बाहर निकल आए. उन्हें न तो
किसी ने देखा और न ही किसी को इसके विषय में कुछ ज्ञात
ही हुआ. उन सभी पर घोर निद्रा छाई हुई थी; याहवेह द्वारा
उन पर डाली गई घोर निद्रा.

13 तब दावीद पहाड़ी के दूसरी ओर चले गए, और दूर जाकर
पहाड़ी के शीर्ष पर जा खड़े हुए. उनके और पड़ाव के मध्य
अब दूरी हो गई थी.

14 वहां से दावीद ने सेना और नेर के पुत्र अबनेर को पुकारकर
कहा, "अबनेर, आप मुझे उत्तर देंगे?" अबनेर ने उत्तर दिया,
"कौन हो तुम, जो राजा को पुकार रहे हो?"

15 दावीद ने अबनेर से कहा, "क्या आप शूर व्यक्ति नहीं?
अंततः सारे इस्राएल राष्ट्र में कौन है आपके तुल्य? तब आपने
आज अपने स्वामी, राजा की सुरक्षा में ढील क्यों दी है? आज
रात कोई व्यक्ति आपके स्वामी, राजा की हत्या के उद्देश्य से
शिविर में घुस आया था.

16 आपके द्वारा दी गई यह ढील खेद का विषय है. वस्तुतः
जीवन्त याहवेह की शपथ, यह अपराध मृत्यु दंड के योग्य है,
क्योंकि आपने अपने स्वामी, याहवेह के अभिषिक्त, की सुरक्षा
में ढील दी है. देख लीजिए. राजा के सिरहाने गड़ा हुआ भाला
तथा उनका जल पात्र कहां है?"

17 शाऊल दावीद का स्वर पहचान गए. उन्होंने उनसे कहा,
"दावीद, मेरे पुत्र, क्या यह तुम्हारा ही स्वर है?" "जी हां,
महाराज, मेरे स्वामी," दावीद ने उत्तर दिया.

18 तब दावीद ने ही आगे यह कहा, "मेरे स्वामी, आप क्यों
अपने सेवक का पीछा कर रहे हैं? क्या है मेरा दोष? ऐसा कौन
सा अपराध हो गया है मुझसे?

19 तब महाराज, मेरे स्वामी, अपने सेवक द्वारा प्रस्तुत यह
याचना सुन लीजिए! यदि स्वयं याहवेह ने ही आपको मेरे

1 Samuel 27:1

विरुद्ध यह करने के लिए उत्प्रेरित किया है, वह एक भेंट स्वीकार कर लें, मगर यदि यह सब किसी मनुष्य की प्रेरणा में किया जा रहा है, वे याहवेह द्वारा शापित हों. क्योंकि आज मुझे याहवेह द्वारा दी गई मीरास को छोड़कर इधर-उधर भटकना पड़ रहा है, मानो मुझे यह आदेश दिया गया हो, 'जाओ अज्ञात देवताओं की आराधना करो,'

20 तब मेरी विनती है मेरा रक्त याहवेह द्वारा दी गई मीरास से
दूर न गिरने दें, क्योंकि तथ्य यह है कि इस्राएल राष्ट्र के
महाराज सिर्फ एक पिस्सू का पीछा करते हुए ऐसे आए हैं, जैसे
कोई पर्वतों पर तीतर का पीछा करता है."

21 तब शाऊल कह उठे, "मुझसे पाप हुआ है. मेरे पुत्र दावीद,
लौट आओ, क्योंकि अब से मैं तुम्हारी कोई हानि न करूंगा.
आज तुमने मेरे प्राण को ऐसा मूल्यवान समझा है. बहुत ही
मूर्खतापूर्ण रहे हैं मेरे द्वारा उठाए गए ये कदम और वास्तव में
मुझसे बड़ी भूल हुई है."

22 दावीद ने उत्तर दिया, "महाराज, मैं आपका भाला यहां छोड़
रहा हूं. किसी सैनिक को इसे लेने के लिए भेज दीजिए.

23 हर एक व्यक्ति के लिए उसकी धार्मिकता तथा सच्चाई के
अनुसार ईनाम निर्धारित है. याहवेह ने आज आपको मेरे हाथों
में सौंप दिया था, मगर याहवेह के अभिषिक्त पर मैंने हाथ नहीं
उठाया.

24 जिस प्रकार मेरी दृष्टि में आपके प्राण अमूल्य हैं, मेरे प्राण
भी याहवेह की दृष्टि में अमूल्य बने रहें. वही मुझे सारी
कठिनाइयों से विमुक्त करें."

25 तब शाऊल ने दावीद से कहा, "दावीद, मेरे पुत्र, तुम
सराहनीय हो! तुम महान काम करोगे और तुम्हें सदैव
सफलता ही प्राप्त होगी." दावीद, इसके बाद वहां से चले गए
और शाऊल अपने घर को लौट गए.

1 Samuel 27:1

1 इस समय दावीद के मन में एक ही विचार बार-बार उठ रहा
था, "एक न एक दिन शाऊल के हाथों से मेरी हत्या तय है, तब
इससे उत्तम विकल्प और क्या हो सकता है कि फिलिस्तिया
देश को भाग जाऊं. परिणाम यह होगा कि शाऊल निराश हो
इस्राएल राष्ट्र के किसी भी भाग में मेरी खोज करना छोड़ देंगे,
और में उनसे सुरक्षित रह सकूंगा."

2 तब दावीद ने सीमा पार की और गाथ देश के राजा माओख
के पुत्र आकीश के आश्रय में पहुंच गए. उनके साथ उनके छः
सौ साथी भी थे.

3 इस प्रकार दावीद आकीश के राज्य में अपने छः सौ साथियों
के साथ रहने लगे. हर एक व्यक्ति के साथ उसका अपना
परिवार भी था, तथा दावीद के साथ उनकी दोनों पत्नियां थी:
येज़्रील से आई अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा
अबीगइल.

4 जब शाऊल को यह समाचार प्राप्त हुआ कि दावीद गाथ देश
को भाग चुके हैं, उन्होंने उनकी खोज करके उनका पीछा
करना छोड़ दिया.

5 दावीद ने जाकर राजा आकीश से निवेदन किया, "यदि मैं
आपकी दृष्टि में विश्वास्य हूं, तो कृपा कर अपने किसी दूर छोटे
नगर में मुझे बसने की अनुमति दे दीजिए; क्या आवश्यकता
है आपके सेवक की यहां राजधानी में बसने की?"

6 तब राजा आकीश ने उसी समय दावीद को ज़िकलाग में
बसने की आज्ञा दे दी. यही कारण है कि आज तक ज़िकलाग
यहूदिया के शासकों के अधीनस्थ है.

7 दावीद के फिलिस्तीनियों के देश में रहने की कुल अवधि
एक साल चार महीने हुई.

8 दावीद और उनके साथी गेशूरियों, गीर्ज़ियों तथा
अमालेकियों के क्षेत्रों में जाकर छापा मारा करते थे. (ये वे
स्थान थे, जहां ये लोग दीर्घ काल से निवास कर रहे थे. इस क्षेत्र
शूर से लेकर मिस्र देश तक विस्तृत था.)

9 दावीद किसी भी क्षेत्र पर हमला करते थे तो किसी व्यक्ति
को जीवित न छोड़ते थे: न स्त्री, न पुरुष; वह भेड़ें, पशु, गधे,
ऊंट तथा वस्त्र लूटकर राजा आकीश को दे दिया करते थे.

10 जब आकीश उनसे पूछते थे, "आज कहां छापा मारा था
तुमने?" दावीद कह दिया करते थे, "यहूदिया के नेगेव में," या
"येराहमील के नेगेव में," या "केनियों के क्षेत्र में."

1 Samuel 28:1

11 दावीद इन क्षेत्रों में किसी को भी जीवित नहीं छोड़ते थे,
ताकि कोई जाकर राजा आकीश को सत्य की सूचना दे सके.
दावीद का विचार यह था, "ऐसा करने पर वे हमारे विरुद्ध यह
न कह सकेंगे, 'दावीद ने किया है यह सब.' " दावीद जितने
समय फिलिस्तीनियों के क्षेत्र में निवास करते रहे, उनकी यही
रीति रही.

12 राजा आकीश ने दावीद पर भरोसा किया और खुद से कहा,
"वह अपने ही लोगों के लिए इतना अप्रिय हो गया है कि वह
जीवन भर मेरा दास रहेगा."

1 Samuel 28:1

1 यह घटना उस समय की है, जब फिलिस्तीनियों ने इस्राएल
से युद्ध के उद्देश्य से अपनी सेना सुनियोजित की. राजा
आकीश ने दावीद से कहा, "आशा है तुम यह समझ रहे हो
कि तुम और तुम्हारे साथी भी हमारी सेना में शामिल हैं."

2 दावीद ने उसे उत्तर दिया, "अति उत्तम! आप भी देख लेना
आपका सेवक आपके लिए क्या-क्या कर सकता है." "वाह!"
आकीश ने दावीद से कहा, "मैं आजीवन तुम्हें अपना
अंगरक्षक बनाए रहूंगा."

3 इस समय शमुएल की मृत्यु हो चुकी थी. सारे इस्राएल ने
उनके लिए विलाप किया तथा उन्हीं के गृहनगर रामाह में
उनको दफना दिया. इस समय तक शाऊल ने संपूर्ण देश में
से सारे मोहनियों तथा तांत्रिकों को बाहर निकाल दिया था.

4 फिलिस्तीनी सैनिक एकत्र हुए, और शूनेम नामक स्थान पर
उन्होंने अपना पड़ाव खड़ा किया. शाऊल ने भी इस्राएली सेना
संगठित की, और उन्होंने अपना पड़ाव गिलबोआ में खड़ा
किया.

5 जब शाऊल ने फिलिस्तीनियों की सेना की ओर दृष्टि की, तो
वह भयभीत हो गए और उनका हृदय बहुत ही विचलित हो
गया.

6 जब उन्होंने याहवेह से जानकारी चाही, याहवेह ने उन्हें कोई
उत्तर ही न दिया; न तो स्वप्नों के माध्यम से, न उरीम के माध्यम
से और न ही भविष्यवक्ताओं के माध्यम से.

7 हारकर शाऊल ने अपने सेवकों को आदेश दिया, "मेरे लिए
एक ऐसी स्त्री की खोज करो, जो डायन हो, कि मैं उससे
पूछताछ कर सकूं." उनके सेवक यह सूचना लाए. "सुनिए,
एक डायन है, एन-दोर में."

8 तब शाऊल ने भेष बदला और अपने वस्त्र परिवर्तित कर
लिए तथा अपने साथ दो व्यक्तियों को लेकर चल पड़े. वे उस
स्त्री के पास रात में पहुंचे. शाऊल ने उस स्त्री को आदेश दिया,
"मेरे लिए आत्मा को बुलाकर पूछताछ कीजिए." मेरे लिए उन्हें
बुला दीजिए, जिसका मैं नाम लूंगा.

9 मगर उस स्त्री ने उन्हें उत्तर दिया, "आपको यह ज्ञात तो
अवश्य ही होगा कि शाऊल ने क्या किया है. कैसे उन्होंने सारे
देश के तांत्रिकों तथा जादू-टोन्हों का वध करवा दिया है. आप
क्यों मेरे वध के लिए जाल बिछा रहे हैं?"

10 इस पर शाऊल ने याहवेह की शपथ लेते हुए उसे आश्वासन
दिया, "जीवन्त याहवेह की शपथ, तुम्हारा इसके कारण कोई
भी बुरा न होगा."

11 "अच्छा बताइए, आपके लिए मैं किसे बुलाऊंगा?" उसने
पूछा उसने उत्तर दिया, "ऐसा करो, मेरे लिए तुम शमुएल को
बुला लाओ."

12 जब शमुएल आए, उन्हें देख वह स्त्री बहुत ही उच्च स्वर में
चिल्ला उठी. वह शाऊल से कहने लगी, "आपने मेरे साथ छल
क्यों किया है? आप शाऊल हैं!"

13 "डरो मत!" राजा ने उसे आश्वासन दिया और पूछा, "तुम
क्या देखती हो?" "मुझे भूमि में से एक दिव्य आकृति ऊपर
आती हुई दिखाई दे रही है."

14 शाऊल ने उससे पूछा, "उसका स्वरूप कैसा दिखाई दे रहा
है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "एक वृद्ध व्यक्ति ऊपर आ रहे हैं. वह
बागा ओढ़े हुए हैं." इससे शाऊल को यह अहसास हुआ कि
वह शमुएल हैं. वह भूमि की ओर नतमस्तक हुए और सामने
घुटने टेक दिए.

15 शमुएल ने शाऊल से पूछा, "मुझे बुलाकर तुमने मेरा विश्राम
भंग क्यों किया?" शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं घोर संकट में आ
पड़ा हूं. फिलिस्तीनी हमारे विरुद्ध युद्ध के लिए उठ खड़े हुए
हैं. परमेश्वर मुझसे विमुख हो गए हैं. उनसे मुझे कोई भी उत्तर

1 Samuel 29:1

प्राप्त नहीं हो रहा: न तो भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, न स्वप्नों के माध्यम से. इसलिये मुझे आपको कष्ट देना पड़ा है. कृपया मुझे बताइए मैं क्या करूं.”

16 “जब याहवेह ही तुमसे विमुख हो चुके हैं, तुम्हारे शत्रु बन चुके हैं, तो क्या लाभ है मुझसे पूछने का?” शमुएल ने उन्हें उत्तर दिया.

17 “याहवेह ने वही किया है, जो मेरे द्वारा पूर्वघोषित कर चुके थे. याहवेह ने साम्राज्य तुम्हारे हाथ से छीनकर तुम्हारे पड़ोसी, दावीद को दे दिया है,

18 क्योंकि तुमने याहवेह के आदेश का पालन नहीं किया और अमालेकियों के प्रति उनके प्रचंड प्रकोप का निष्पादन नहीं किया; तुम्हें आज याहवेह की ओर से यह प्रतिफल प्राप्त हुआ है.

19 याहवेह तुम्हें तथा इस्राएल को फिलिस्तीनियों के अधीन कर देंगे. कल तुम और तुम्हारे पुत्र मेरे साथ होंगे. याहवेह इस्राएल की सेना को भी फिलिस्तीनियों के अधीन कर देंगे.”

20 यह सुनते ही शाऊल वैसे के वैसे भूमि पर गिर पड़े, कटे वृक्ष समान. शमुएल के शब्दों ने उन्हें बहुत ही भयभीत कर दिया था. उनका शरीर पूर्णतः शिथिल हो गया था. उन्होंने सारा दिन और रात में भोजन ही नहीं किया था.

21 वह स्त्री शाऊल के निकट आई, और उसने पाया कि शाऊल बहुत ही भयभीत थे, उसने शाऊल से कहा, “सुनिए, आपकी सेविका ने आपकी आज्ञा का पालन किया है और यह मैंने अपने प्राणों पर खेलकर किया है. आपने मुझे जो आदेश दिया, मैंने वही किया है.

22 तब आप भी अब मेरी सुन लीजिए. मैं आपके लिए भोजन तैयार करती हूं ताकि आप कुछ खा लें. इससे आपको बल प्राप्त होगा कि आप लौटकर जा सकें.”

23 मगर शाऊल अस्वीकार करते रहे, “नहीं मुझे कुछ नहीं खाना है.” मगर शाऊल के सेवक तथा वह स्त्री उनसे आग्रह करते रहे. अंततः उन्होंने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया. वह भूमि से उठकर बिछौने पर बैठ गए.

24 उस स्त्री का एक पुष्ट बछड़ा था, उसका उसने तुरंत वध किया, आटा लेकर खमीर रहित रोटियां बनाई.

25 यह सब उसने शाऊल और उसके सेवकों को परोसा. उन्होंने भोजन किया और रात में ही वहां से विदा हो गए.

1 Samuel 29:1

1 फिलिस्तीनियों ने अपनी सारी सेना अफेक नामक स्थान पर नियोजित की, तथा इस्राएलियों ने येज़्रील के झरने के निकट.

2 जब फिलिस्तीनी नायक अपने सैकड़ों तथा हज़ार के समूह में आगे बढ़ रहे थे, दावीद और उनके साथी राजा आकीश के पीछे-पीछे चल रहे थे.

3 फिलिस्तीनियों के सेनापतियों ने राजा से प्रश्न किया, “इन इब्रियों का यहां क्या काम?” राजा आकीश ने सेनापतियों को उत्तर दिया, “क्या तुम इस्राएल के राजा शाऊल के सेवक दावीद को नहीं जानते, जो मेरे साथ दीर्घ काल से—उस समय से है, जब से उसने शाऊल को छोड़ा है? तब से आज तक मैंने उसके कामों में कोई भी गलती नहीं देखी.”

4 इस पर फिलिस्तीनी सेनापति उन पर क्रुद्ध हो गए. उन्होंने राजा से कहा, “उसे उसी स्थान को लौट जाने का आदेश दीजिए, जो उसे आपने दिया है. युद्ध में तो वह हमारे साथ नहीं जाएगा. क्या पता युद्ध में वह हमारे ही विरुद्ध हो जाए? उसके सामने इससे उत्तम मौका और क्या हो सकता है कि वह शाऊल की दृष्टि में स्वीकार हो?

5 क्या यह वही दावीद नहीं है, जिसके लिए उन्होंने मिलकर नृत्य करते हुए यह गाया था: “ ‘शाऊल ने अपने हज़ार शत्रुओं का संहार किया मगर दावीद ने अपने दस हज़ार शत्रुओं का’?”

6 इस पर आकीश ने दावीद को बुलाकर उनसे कहा, “जीवन्त याहवेह की शपथ, तुम सच्चे रहे हो, और व्यक्तिगत रूप से मुझे सही यही लग रहा है कि इस युद्ध में तुम मेरे साथ साथ आया जाया करो. जिस दिन से तुम मेरे आश्रय में आए हो, तब से आज तक मुझे तुममें कुछ भी अप्रिय नहीं लगा. अब क्या किया जा सकता है; यदि सेनापति तुम्हें स्वीकार करना नहीं चाहते?

7 तब तुम अब शांतिपूर्वक यहां से लौट जाओ, कि फिलिस्तीनी सेनापति तुमसे अप्रसन्न न हो जाएं."

8 दावीद ने आकीश से पूछा, "मुझसे ऐसी क्या भूल हो गई जो मैं राजा, मेरे स्वामी, के शत्रुओं से लड़ने नहीं जा सकता? जिस दिन से मैं आपकी सेवा में आया हूं, तब से आज तक आपको मुझमें कौन सा दोष दिखाई दिया है?"

9 आकीश ने दावीद को उत्तर दिया, "मैं जानता हूं कि मेरी दृष्टि में तुम वैसे ही निर्दोष हो, जैसा परमेश्वर का स्वर्गदूत. फिर भी फिलिस्तीनी सेनापतियों ने अपना मत दे दिया है, 'वह हमारे साथ युद्ध में नहीं जाएंगे.'

10 तब ऐसा करो, प्रातः शीघ्र उठकर अपने साथ आए अपने स्वामी के सेवकों को लेकर सुबह का प्रकाश होते ही तुम सब लौट जाओ."

11 तब दावीद अपने साथियों के साथ बड़े तड़के फिलिस्तीन देश को लौट गए, मगर फिलिस्तीनी येज्रील की ओर बढ़ गए.

1 Samuel 30:1

1 तीसरे दिन दावीद एवं उनके साथी ज़िकलाग नगर पहुंचे. इस बीच अमालेकियों ने नेगेव तथा ज़िकलाग पर छापा मारा था. उन्होंने ज़िकलाग पर हमला किया, तथा उसे आग लगा दी.

2 उन्होंने नगर की हर अवस्था की स्त्रियों को बंदी बना लिया था मगर उन्होंने किसी की भी हत्या नहीं की. उन्हें बंदी बनाकर वे उन्हें अपने साथ ले गए.

3 जब दावीद और उनके साथी लौटकर नगर में आए तो उन्होंने देखा कि नगर भस्म हुआ पड़ा है, और उनकी पत्नियां, पुत्र और पुत्रियां बंदी बनाकर ले जा चुके हैं.

4 यह देख दावीद और उनके साथी ऊंची आवाज में उस समय तक रोते रहे, जब तक उनमें रोने के लिए बल ही बाकी न रह गया.

5 दावीद की दोनों पत्नियां भी बंदी बनाकर ले जाई गई थी; येज्रील की अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगइल.

6 इस समय दावीद बहुत ही परेशान थे, क्योंकि उनके साथी उनका पत्थराव करने की योजना कर रहे थे. हर एक व्यक्ति का हृदय अपने पुत्र-पुत्रियों के अपहरण के कारण बहुत ही कटु हो चुका था. मगर दावीद ने इस स्थिति में याहवेह अपने परमेश्वर में बल प्राप्त किया.

7 दावीद ने अहीमेलेख के पुत्र अबीयाथर पुरोहित से विनती की, "कृपया मेरे पास एफ़ोद लेकर आइए." अबीयाथर एफ़ोद लेकर दावीद के निकट आ गए.

8 दावीद ने याहवेह से पूछा, "क्या मैं इन छापामारों का पीछा करूं? क्या मैं उन्हें पकड़ सकूंगा?" याहवेह की ओर से उत्तर आया, "पीछा अवश्य करो, क्योंकि तुम उन्हें निश्चयतः पकड़ लोगे और बंदियों को छुड़ा लोगे."

9 तब दावीद अपने छः सौ साथियों के साथ उनका पीछा करने निकल पड़े. जब वे बेसोर नामक नदी पर पहुंचे, कुछ पीछे रह गए.

10 दावीद ने वहां उन दो सौ व्यक्तियों को छोड़ दिया, क्योंकि ये थक गए थे और बेसोर नदी को पार करने में असमर्थ थे. मगर दावीद अपने शेष चार सौ साथियों को लेकर आगे बढ़ते गए.

11 चलते हुए मैदान में पहुंचने पर उन्हें एक मिस्रवासी व्यक्ति मिला. वे उसे दावीद के पास ले गए. उन्होंने उसे भोजन कराया तथा पीने के लिए पानी भी दिया.

12 इसके अतिरिक्त उन्होंने उसे खाने के लिए एक पिण्ड अंजीर तथा एक गुच्छा किशमिश भी दिया. भोजन कर लेने के बाद उसमें स्फूर्ति लौट आई. तीन दिन और तीन रात से उसने कुछ भी न खाया था नहीं कुछ पिया था.

13 दावीद ने उससे पूछा, "तुम कहां से आ रहे हो तथा कौन है तुम्हारा स्वामी?" उस युवा ने उत्तर दिया, "मैं मिस्रवासी हूं. मैं एक अमालेकी का सेवक हूं. तीन दिन तक मेरे अस्वस्थ होने पर मेरे स्वामी ने मेरा परित्याग कर दिया.

1 Samuel 31:1

14 हम लोगों ने केरेथियों के दक्षिण क्षेत्र पर, यहूदिया के एक
क्षेत्र पर तथा कालेब के दक्षिण क्षेत्र पर छापा मारा. तब हमने
ज़िकलाग में आग लगा दी."

15 दावीद ने उससे पूछा, "क्या तुम हमें इन छापामारों तक
पहुंचा सकते हो?" उस मिस्रवासी ने उनसे कहा, "पहले आप
शपथ लीजिए कि आप न तो मेरी हत्या करेंगे, और न मुझे मेरे
स्वामी के हाथों में सौंपेंगे; तब मैं आपको इन छापामारों तक
पहुंचा दूंगा."

16 तब वह मिस्रवासी उन्हें उस स्थान पर ले गया. छापामार
एक विशाल भूभाग पर फैले हुए थे. फिलिस्तीनियों तथा
यहूदिया से लूटकर लाई गई सामग्री के कारण वे अब खा-
पीकर आमोद-प्रमोद में लिप्त थे.

17 शाम से दावीद ने उनका संहार करना शुरू किया और यह
क्रम अगले दिन की शाम तक चलता रहा. इसमें ऊंटों पर
आरोहित चार सौ युवा छापामारों को छोड़ उनमें कोई भी
जीवित न रहा. वे चार सौ ऊंटों पर भाग निकले.

18 दावीद ने अपनी दोनों पत्नियों को तथा अमालेकियों द्वारा
लूटी गई सारा सामग्री पुनः प्राप्त कर ली.

19 किसी वस्तु की हानि नहीं हुई थी—न तो कोई छोटी वस्तु
या बड़ी वस्तु, पुत्र या पुत्रियां, लूटी हुई वस्तुएं या कुछ भी, जो
छीन लिया गया था, दावीद को सभी कुछ पुनः प्राप्त हो गया.

20 दावीद ने सारी भेड़ें और पशु भी पकड़ लिए, और उन्हें अन्य
पशुओं के साथ सबके आगे-आगे लेकर लौटे. उन्होंने घोषणा
की, "यह सब दावीद द्वारा लूटी गई सामग्री है."

21 जब वे लौटते हुए उन दो सौ के स्थान पर पहुंचे, जो सरिता
पार करने योग्य नहीं रह गए थे, जिन्हें उन्होंने सरिता बेसोर के
पार छोड़ दिया था, वे दावीद और उनके साथियों से भेंटकरने
आगे आए. दावीद ने उनसे उनका कुशल क्षेम पूछा.

22 तब दावीद के साथियों में से वे, जो निकम्मे तथा दुर्वृत्त थे,
कहने लगे, "हम इन्हें इस सामग्री में से कुछ नहीं देंगे, क्योंकि
इन्होंने हमारा साथ छोड़ दिया था तथा ये हमारे साथ युद्ध पर
नहीं गए थे. हां, हर एक व्यक्ति अपनी पत्नी और संतान को
लेकर यहां से चला जाए."

23 मगर जवाब में दावीद ने कहा, "नहीं, मेरे भाइयो, याहवेह
द्वारा दी गई सामग्री के साथ हम ऐसा नहीं कर सकते. याहवेह
ने हमें सुरक्षा प्रदान की है तथा हमें उन छापामारों पर जय
प्रदान की है.

24 किसे तुम्हारा यह तर्क मान्य हो सकता है? लूट की सामग्री
में उसका भी उतना ही अंश होगा, जो सबके सामान की रक्षा
के लिए पीछे रुका रहता है, जितना उसका, जो युद्ध करता है;
सबका अंश समान होगा."

25 दावीद ने उस दिन से इस्राएल में यही नियम तथा विधि
प्रभावी कर दी, जो आज तक प्रभावी है.

26 जब दावीद ज़िकलाग पहुंचे, उन्होंने लूट की सामग्री में से
एक अंश यहूदिया के पुरनियों को भेज दिया, जो उनके मित्र
भी थे. उसके साथ उन्होंने उन्हें यह संदेश भेजा, "याहवेह के
शत्रुओं से लूट की सामग्री में से यह आपके लिए उपहार है."

27 जो उपहार भेजा गया था, वह इन स्थानों के प्रवरों के लिए
था: जो बेथेल में वास कर रहे थे, रामोथ नेगेव तथा यत्तिर में;

28 जो अरोअर, सिपमोथ, एशतमोह,

29 तथा राकाल में थे; जो येराहमील नगरों के वासी थे तथा
केनीत वासी;

30 जो होरमाह, बोर आशान, आथाक

31 तथा हेब्रोन के निवासी थे तथा उन सभी स्थानों के प्रवरों को,
जिन-जिन स्थानों पर दावीद तथा उनके साथी जाते रहे थे.

1 Samuel 31:1

1 फिलिस्तीनियों ने इस्राएल पर हमला कर दिया. इस्राएली
सैनिक फिलिस्तीनियों के सामने टिक न सके. अनेक
गिलबोआ पर्वत पर मारे गए.

2 फिलिस्तीनियों ने शाऊल और उनके पुत्रों को जा पकड़ा,
और उन्होंने शाऊल के पुत्रों योनातन, अबीनादाब तथा
मालखी-शुआ की हत्या कर दी.

1 Samuel 31:1

3 शाऊल के आस-पास युद्ध बहुत ही उग्र था. धनुर्धारियों ने
उन्हें देख लिया और उन्हें बहुत ही गंभीर रूप घायल कर
दिया.

4 शाऊल ने अपने शस्त्रवाहक को आदेश दिया, “इसके पहले
कि ये अख़तनित आकर मेरी दुर्गति करके मुझ पर तलवार
का प्रहार करें, तुम अपनी तलवार से मुझ पर प्रहार कर दो.”
मगर उस भयभीत शस्त्रवाहक ने यह विनती अस्वीकार कर
दी. तब स्वयं शाऊल ने अपनी तलवार निकाली और उस पर
गिर पड़े.

5 जब उनके शस्त्रवाहक ने देखा कि शाऊल की मृत्यु हो गई
है, वह स्वयं अपनी तलवार पर गिर गया, और उसकी भी मृत्यु
शाऊल के ही साथ हो गई.

6 इस प्रकार शाऊल, उनके तीन पुत्र, उनका शस्त्रवाहक तथा
उनके सभी सैनिकों की मृत्यु एक ही दिन हो गई.

7 जब घाटी के और यरदन पार के इस्राएलियों ने देखा कि
इस्राएली सेना पीठ दिखाकर भाग रही है, शाऊल और उनके
पुत्र युद्ध में मारे गए हैं, वे नगर छोड़-छोड़कर भागने लगे. तब
फिलिस्तीनी आए और नगरों में निवास करने लगे.

8 अगले दिन, जब फिलिस्तीनी आए कि शवों से जो मिल सके,
अपने लिए उठा ले जाएं. उन्हें गिलबोआ पर्वत पर शाऊल
और उसके तीन पुत्रों के शव दिखाई दिए.

9 उन्होंने शाऊल का सिर काटा, उनके हथियार उनकी शव
से उतार लिए, और अपने देवताओं के मंदिर तथा सारा
फिलिस्तिया देश के लोगों को यह संदेश अपने दूतों द्वारा भेज
दिया.

10 उन्होंने शाऊल के शस्त्र ले जाकर अश्तोरेथ के मंदिर में
सजा दिया तथा उनके शव को बेथ-शान नगर की दीवार पर
जड़ दिया.

11 जब याबेश-गिलआदवासियों तक यह समाचार पहुंचा कि
शाऊल के साथ फिलिस्तीनियों ने कैसा व्यवहार किया है,

12 वहां के सारे योद्धा इकट्ठा हुए, सारी रात यात्रा की, और
शाऊल के तथा उनके पुत्रों के शवों को नगर बेथ-शान प्राचीर
से उतारकर याबेश नामक स्थान को ले गए. वहां उन्होंने शवों
को जला दिया.

13 फिर उन्होंने उनकी अस्थियां लेकर उन्हें याबेश के झाऊ
वृक्ष के नीचे गाड़ दिया. उसके बाद उन्होंने सात दिन उपवास
रखा.